

## **Resource: Indian Revised Version**

### **License Information**

**Indian Revised Version** (Hindi) is based on: Hindi Indian Revised Version, [Bridge Connectivity Solutions](#), 2019, which is licensed under a [CC BY-SA 4.0 license](#).

This PDF version is provided under the same license.

## **Indian Revised Version**

ACT

15:5, Acts 15:6, Acts 15:7, Acts 15:8, Acts 15:9, Acts 15:10, Acts 15:11, Acts 15:12, Acts 15:13, Acts 15:14, Acts 15:15, Acts 15:16, Acts 15:17, Acts 15:18, Acts 15:19, Acts 15:20, Acts 15:21, Acts 15:22, Acts 15:23, Acts 15:24, Acts 15:25, Acts 15:26, Acts 15:27, Acts 15:28, Acts 15:29, Acts 15:30, Acts 15:31, Acts 15:32, Acts 15:33, Acts 15:34, Acts 15:35, Acts 15:36, Acts 15:37, Acts 15:38, Acts 15:39, Acts 15:40, Acts 15:41, Acts 16:1, Acts 16:2, Acts 16:3, Acts 16:4, Acts 16:5, Acts 16:6, Acts 16:7, Acts 16:8, Acts 16:9, Acts 16:10, Acts 16:11, Acts 16:12, Acts 16:13, Acts 16:14, Acts 16:15, Acts 16:16, Acts 16:17, Acts 16:18, Acts 16:19, Acts 16:20, Acts 16:21, Acts 16:22, Acts 16:23, Acts 16:24, Acts 16:25, Acts 16:26, Acts 16:27, Acts 16:28, Acts 16:29, Acts 16:30, Acts 16:31, Acts 16:32, Acts 16:33, Acts 16:34, Acts 16:35, Acts 16:36, Acts 16:37, Acts 16:38, Acts 16:39, Acts 16:40, Acts 17:1, Acts 17:2, Acts 17:3, Acts 17:4, Acts 17:5, Acts 17:6, Acts 17:7, Acts 17:8, Acts 17:9, Acts 17:10, Acts 17:11, Acts 17:12, Acts 17:13, Acts 17:14, Acts 17:15, Acts 17:16, Acts 17:17, Acts 17:18, Acts 17:19, Acts 17:20, Acts 17:21, Acts 17:22, Acts 17:23, Acts 17:24, Acts 17:25, Acts 17:26, Acts 17:27, Acts 17:28, Acts 17:29, Acts 17:30, Acts 17:31, Acts 17:32, Acts 17:33, Acts 17:34, Acts 18:1, Acts 18:2, Acts 18:3, Acts 18:4, Acts 18:5, Acts 18:6, Acts 18:7, Acts 18:8, Acts 18:9, Acts 18:10, Acts 18:11, Acts 18:12, Acts 18:13, Acts 18:14, Acts 18:15, Acts 18:16, Acts 18:17, Acts 18:18, Acts 18:19, Acts 18:20, Acts 18:21, Acts 18:22, Acts 18:23, Acts 18:24, Acts 18:25, Acts 18:26, Acts 18:27, Acts 18:28, Acts 19:1, Acts 19:2, Acts 19:3, Acts 19:4, Acts 19:5, Acts 19:6, Acts 19:7, Acts 19:8, Acts 19:9, Acts 19:10, Acts 19:11, Acts 19:12, Acts 19:13, Acts 19:14, Acts 19:15, Acts 19:16, Acts 19:17, Acts 19:18, Acts 19:19, Acts 19:20, Acts 19:21, Acts 19:22, Acts 19:23, Acts 19:24, Acts 19:25, Acts 19:26, Acts 19:27, Acts 19:28, Acts 19:29, Acts 19:30, Acts 19:31, Acts 19:32, Acts 19:33, Acts 19:34, Acts 19:35, Acts 19:36, Acts 19:37, Acts 19:38, Acts 19:39, Acts 19:40, Acts 19:41, Acts 20:1, Acts 20:2, Acts 20:3, Acts 20:4, Acts 20:5, Acts 20:6, Acts 20:7, Acts 20:8, Acts 20:9, Acts 20:10, Acts 20:11, Acts 20:12, Acts 20:13, Acts 20:14, Acts 20:15, Acts 20:16, Acts 20:17, Acts 20:18, Acts 20:19, Acts 20:20, Acts 20:21, Acts 20:22, Acts 20:23, Acts 20:24, Acts 20:25, Acts 20:26, Acts 20:27, Acts 20:28, Acts 20:29, Acts 20:30, Acts 20:31, Acts 20:32, Acts 20:33, Acts 20:34, Acts 20:35, Acts 20:36, Acts 20:37, Acts 20:38, Acts 21:1, Acts 21:2, Acts 21:3, Acts 21:4, Acts 21:5, Acts 21:6, Acts 21:7, Acts 21:8, Acts 21:9, Acts 21:10, Acts 21:11, Acts 21:12, Acts 21:13, Acts 21:14, Acts 21:15, Acts 21:16, Acts 21:17, Acts 21:18, Acts 21:19, Acts 21:20, Acts 21:21, Acts 21:22, Acts 21:23, Acts 21:24, Acts 21:25, Acts 21:26, Acts 21:27, Acts 21:28, Acts 21:29, Acts 21:30, Acts 21:31, Acts 21:32, Acts 21:33, Acts 21:34, Acts 21:35, Acts 21:36, Acts 21:37, Acts 21:38, Acts 21:39, Acts 21:40, Acts 22:1, Acts 22:2, Acts 22:3, Acts 22:4, Acts 22:5, Acts 22:6, Acts 22:7, Acts 22:8, Acts 22:9, Acts 22:10, Acts 22:11, Acts 22:12, Acts 22:13, Acts 22:14, Acts 22:15, Acts 22:16, Acts 22:17, Acts 22:18, Acts 22:19, Acts 22:20, Acts 22:21, Acts 22:22, Acts 22:23, Acts 22:24, Acts 22:25, Acts 22:26, Acts 22:27, Acts 22:28, Acts 22:29, Acts 22:30, Acts 23:1, Acts 23:2, Acts 23:3, Acts 23:4, Acts 23:5, Acts 23:6, Acts 23:7, Acts 23:8, Acts 23:9, Acts 23:10, Acts 23:11, Acts 23:12, Acts 23:13, Acts 23:14, Acts 23:15, Acts 23:16, Acts 23:17, Acts 23:18, Acts 23:19, Acts 23:20, Acts 23:21, Acts 23:22, Acts 23:23, Acts 23:24, Acts 23:25, Acts 23:26, Acts 23:27, Acts 23:28, Acts 23:29, Acts 23:30, Acts 23:31, Acts 23:32, Acts 23:33, Acts 23:34, Acts 23:35, Acts 24:1, Acts 24:2, Acts 24:3, Acts 24:4, Acts 24:5, Acts 24:6, Acts 24:7, Acts 24:8, Acts 24:9, Acts 24:10, Acts 24:11, Acts 24:12, Acts 24:13, Acts 24:14, Acts 24:15, Acts 24:16, Acts 24:17, Acts 24:18, Acts 24:19, Acts 24:20, Acts 24:21, Acts 24:22, Acts 24:23, Acts 24:24, Acts 24:25, Acts 24:26, Acts 24:27, Acts 25:1, Acts 25:2, Acts 25:3, Acts 25:4, Acts 25:5, Acts 25:6, Acts 25:7, Acts 25:8, Acts 25:9, Acts 25:10, Acts 25:11, Acts 25:12, Acts 25:13, Acts 25:14, Acts 25:15, Acts 25:16, Acts 25:17, Acts 25:18, Acts 25:19, Acts 25:20, Acts 25:21, Acts 25:22, Acts 25:23, Acts 25:24, Acts 25:25, Acts 25:26, Acts 25:27, Acts 26:1, Acts 26:2, Acts 26:3, Acts 26:4, Acts 26:5, Acts 26:6, Acts 26:7, Acts 26:8, Acts 26:9, Acts 26:10, Acts 26:11, Acts 26:12, Acts 26:13, Acts 26:14, Acts 26:15, Acts 26:16, Acts 26:17, Acts 26:18, Acts 26:19, Acts 26:20, Acts 26:21, Acts 26:22, Acts 26:23, Acts 26:24, Acts 26:25, Acts 26:26, Acts 26:27, Acts 26:28, Acts 26:29, Acts 26:30, Acts 26:31, Acts 26:32, Acts 27:1, Acts 27:2, Acts 27:3, Acts 27:4, Acts 27:5, Acts 27:6, Acts 27:7, Acts 27:8, Acts 27:9, Acts 27:10, Acts 27:11, Acts 27:12, Acts 27:13, Acts 27:14, Acts 27:15, Acts 27:16, Acts 27:17, Acts 27:18, Acts 27:19, Acts 27:20, Acts 27:21, Acts 27:22, Acts 27:23, Acts 27:24, Acts 27:25, Acts 27:26, Acts 27:27, Acts 27:28, Acts 27:29, Acts 27:30, Acts 27:31, Acts 27:32, Acts 27:33, Acts 27:34, Acts 27:35, Acts 27:36, Acts 27:37, Acts 27:38, Acts 27:39, Acts 27:40, Acts 27:41, Acts 27:42, Acts 27:43, Acts 27:44, Acts 28:1, Acts 28:2, Acts 28:3, Acts 28:4, Acts 28:5, Acts 28:6, Acts 28:7, Acts 28:8, Acts 28:9, Acts 28:10, Acts 28:11, Acts 28:12, Acts 28:13, Acts 28:14, Acts 28:15, Acts 28:16, Acts 28:17, Acts 28:18, Acts 28:19, Acts 28:20, Acts 28:21, Acts 28:22, Acts 28:23, Acts 28:24, Acts 28:25, Acts 28:26, Acts 28:27, Acts 28:28, Acts 28:29, Acts 28:30, Acts 28:31

## Acts 1:1

<sup>1</sup> हे थियफिलुस, मैंने पहली पुस्तिका उन सब बातों के विषय में लिखी, जो यीशु आरम्भ से करता और सिखाता रहा,

**Acts 1:2**

<sup>2</sup> उस दिन तक जब वह उन प्रेरितों को जिन्हें उसने चुना था, पवित्र आत्मा के द्वारा आज्ञा देकर ऊपर उठाया न गया,

**Acts 1:3**

<sup>3</sup> और यीशु के दुःख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आपको उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह प्रेरितों को दिखाई देता रहा, और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा।

**Acts 1:4**

<sup>4</sup> और चेलों से मिलकर उन्हें आज्ञा दी, “यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की प्रतीक्षा करते रहो, जिसकी चर्चा तुम मुझसे सुन चुके हो।

**Acts 1:5**

<sup>5</sup> क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।”

**Acts 1:6**

<sup>6</sup> अतः उन्होंने इकट्ठे होकर उससे पूछा, “हे प्रभु, क्या तू इसी समय इसाएल का राज्य पुनः स्थापित करेगा?”

**Acts 1:7**

<sup>7</sup> उसने उनसे कहा, “उन समयों या कालों को जानना, जिनको पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं।

**Acts 1:8**

<sup>8</sup> परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे, और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।”

**Acts 1:9**

<sup>9</sup> यह कहकर वह उनके देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया।

**Acts 1:10**

<sup>10</sup> और उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तब देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहने हुए उनके पास आ खड़े हुए।

**Acts 1:11**

<sup>11</sup> और कहने लगे, “हे गलीली पुरुषों, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।”

**Acts 1:12**

<sup>12</sup> तब वे जैतून नामक पहाड़ से जो यरूशलेम के निकट एक सब्ज के दिन की दूरी पर है, यरूशलेम को लौटे।

**Acts 1:13**

<sup>13</sup> और जब वहाँ पहुँचे तो वे उस अटारी पर गए, जहाँ पतरस, यूहन्ना, याकूब, अन्द्रियास, फिलिप्पुस, थोमा, बरतुल्मै, मत्ती, हलफर्इस का पुत्र याकूब, शमैन जेलोतेस और याकूब का पुत्र यहूदा रहते थे।

**Acts 1:14**

<sup>14</sup> ये सब कई स्त्रियों और यीशु की माता मरियम और उसके भाइयों के साथ एक चित्त होकर प्रार्थना में लगे रहे।

**Acts 1:15**

<sup>15</sup> और उन्हीं दिनों में पतरस भाइयों के बीच में जो एक सौ बीस व्यक्ति के लगभग इकट्ठे थे, खड़ा होकर कहने लगा।

**Acts 1:16**

<sup>16</sup> “हे भाइयों, अवश्य था कि पवित्रशास्त्र का वह लेख पूरा हो, जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुख से यहूदा के विषय में जो यीशु के पकड़ने वालों का अगुआ था, पहले से कहा था।

**Acts 1:17**

<sup>17</sup> क्योंकि वह तो हम में गिना गया, और इस सेवकाई में भी सहभागी हुआ।”

**Acts 1:18**

<sup>18</sup> (उसने अधर्म की कमाई से एक खेत मोल लिया; और सिर के बल गिरा, और उसका पेट फट गया, और उसकी सब अंतिमियाँ निकल गईं।

**Acts 1:19**

<sup>19</sup> और इस बात को यरूशलेम के सब रहनेवाले जान गए, यहाँ तक कि उस खेत का नाम उनकी भाषा में ‘हकलदमा’ अर्थात् ‘लहू का खेत’ पड़ गया।)

**Acts 1:20**

<sup>20</sup> क्योंकि भजन संहिता में लिखा है, ‘उसका घर उजड़ जाए, और उसमें कोई न बसे’ और ‘उसका पद कोई दूसरा ले ले।’

**Acts 1:21**

<sup>21</sup> इसलिए जितने दिन तक प्रभु यीशु हमारे साथ आता-जाता रहा, अर्थात् यूहन्ना के बपतिस्मा से लेकर उसके हमारे पास से उठाए जाने तक, जो लोग बराबर हमारे साथ रहे,

**Acts 1:22**

<sup>22</sup> उचित है कि उनमें से एक व्यक्ति हमारे साथ उसके जी उठने का गवाह हो जाए।

**Acts 1:23**

<sup>23</sup> तब उन्होंने दो को खड़ा किया, एक यूसुफ को, जो बरसब्बास कहलाता है, जिसका उपनाम यूस्तुस है, दूसरा मत्तियाह को।

**Acts 1:24**

<sup>24</sup> और यह कहकर प्रार्थना की, “हे प्रभु, तू जो सब के मन को जानता है, यह प्रगट कर कि इन दोनों में से तूने किसको चुना है,

**Acts 1:25**

<sup>25</sup> कि वह इस सेवकाई और प्रेरिताई का पद ले, जिसे यहूदा छोड़कर अपने स्थान को गया।”

**Acts 1:26**

<sup>26</sup> तब उन्होंने उनके बारे में चिट्ठियाँ डाली, और चिट्ठी मत्तियाह के नाम पर निकली, अतः वह उन ग्यारह प्रेरितों के साथ गिना गया।

**Acts 2:1**

<sup>1</sup> जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे।

**Acts 2:2**

<sup>2</sup> और अचानक आकाश से बड़ी आँधी के समान सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहाँ वे बैठे थे, गूँज गया।

**Acts 2:3**

<sup>3</sup> और उन्हें आग के समान जीभें फटती हुई दिखाई दी और उनमें से हर एक पर आ ठहरी।

**Acts 2:4**

<sup>4</sup> और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य-अन्य भाषा बोलने लगे।

**Acts 2:5**

<sup>5</sup> और आकाश के नीचे की हर एक जाति में से भक्त-यहूदी यरूशलेम में रहते थे।

**Acts 2:6**

<sup>6</sup> जब वह शब्द सुनाई दिया, तो भीड़ लग गई और लोग घबरा गए, क्योंकि हर एक को यही सुनाई देता था, कि ये मेरी ही भाषा में बोल रहे हैं।

**Acts 2:7**

<sup>7</sup> और वे सब चकित और अचम्मित होकर कहने लगे, “देखो, ये जो बोल रहे हैं क्या सब गलीली नहीं?

**Acts 2:8**

<sup>8</sup> तो फिर क्यों हम में से; हर एक अपनी-अपनी जन्म-भूमि की भाषा सुनता है?

**Acts 2:9**

<sup>9</sup> हम जो पारथी, मेदी, एलाम लोग, मेसोपोटामिया, यहूदिया, कप्पद्मकिया, पुन्त्रुस और आसिया,

**Acts 2:10**

<sup>10</sup> और फ्रूगिया और पंफूलिया और मिस्र और लीबिया देश जो कुरेने के आस-पास है, इन सब देशों के रहनेवाले और रोमी प्रवासी,

**Acts 2:11**

<sup>11</sup> अर्थात् क्या यहूदी, और क्या यहूदी मत धारण करनेवाले, क्रेती और अरबी भी हैं, परन्तु अपनी-अपनी भाषा में उनसे परमेश्वर के बड़े-बड़े कामों की चर्चा सुनते हैं।”

**Acts 2:12**

<sup>12</sup> और वे सब चकित हुए, और घबराकर एक दूसरे से कहने लगे, “यह क्या हो रहा है?”

**Acts 2:13**

<sup>13</sup> परन्तु दूसरों ने उपहास करके कहा, “वे तो नई मदिरा के नशे में हैं।”

**Acts 2:14**

<sup>14</sup> पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊँचे शब्द से कहने लगा, “हे यहूदियों, और हे यरूशलेम के सब रहनेवालों, यह जान लो और कान लगाकर मेरी बातें सुनो।

**Acts 2:15**

<sup>15</sup> जैसा तुम समझ रहे हो, ये नशे में नहीं हैं, क्योंकि अभी तो तीसरा पहर ही दिन चढ़ा है।

**Acts 2:16**

<sup>16</sup> परन्तु यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई है:

**Acts 2:17**

<sup>17</sup> ‘परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उण्डेलूँगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी, और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे बृद्ध पुरुष स्वप्न देखेंगे।

**Acts 2:18**

<sup>18</sup> वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपनी आत्मा उण्डेलूँगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे।

**Acts 2:19**

<sup>19</sup> और मैं ऊपर आकाश में अद्भुत काम, और नीचे धरती पर चिन्ह, अर्थात् लहू, और आग और धुँए का बादल दिखाऊँगा।

**Acts 2:20**

<sup>20</sup> प्रभु के महान और तेजस्वी दिन के आने से पहले सूर्य अंधेरा और चाँद लहू सा हो जाएगा।

**Acts 2:21**

<sup>21</sup> और जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वही उद्धार पाएगा।’

**Acts 2:22**

<sup>22</sup> “हे इस्लाएलियों, ये बातें सुनो कि यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ्य के कामों और आश्वर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखलाए जिसे तुम आप ही जानते हो।

**Acts 2:23**

<sup>23</sup> उसी को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला।

**Acts 2:24**

<sup>24</sup> परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया: क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता।

**Acts 2:25**

<sup>25</sup> क्योंकि दाऊद उसके विषय में कहता है, ‘मैं प्रभु को सर्वदा अपने सामने देखता रहा क्योंकि वह मेरी दाहिनी ओर है, ताकि मैं डिग न जाऊँ।’

**Acts 2:26**

<sup>26</sup> इसी कारण मेरा मन आनन्दित हुआ, और मेरी जीभ मग्न हुई; वरन् मेरा शरीर भी आशा में बना रहेगा।

**Acts 2:27**

<sup>27</sup> क्योंकि तू मेरे प्राणों को अधोलोक में न छोड़ेगा; और न अपने पवित्र जन को सङ्ग न देगा!

**Acts 2:28**

<sup>28</sup> तूने मुझे जीवन का मार्ग बताया है; तू मुझे अपने दर्शन के द्वारा आनन्द से भर देगा।’

**Acts 2:29**

<sup>29</sup> “हे भाइयों, मैं उस कुलपति दाऊद के विषय में तुम से साहस के साथ कह सकता हूँ कि वह तो मर गया और गाड़ी भी गया और उसकी कब्र आज तक हमारे यहाँ वर्तमान है।

**Acts 2:30**

<sup>30</sup> वह भविष्यद्वक्ता था, वह जानता था कि परमेश्वर ने उससे शपथ खाई है, मैं तेरे वंश में से एक व्यक्ति को तेरे सिंहासन पर बैठाऊँगा।

**Acts 2:31**

<sup>31</sup> उसने होनेवाली बात को पहले ही से देखकर मसीह के जी उठने के विषय में भविष्यद्वाणी की, कि न तो उसका प्राण अधोलोक में छोड़ा गया, और न उसकी देह सङ्ग न देह सङ्ग न पाई।

**Acts 2:32**

<sup>32</sup> “इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब गवाह हैं।

**Acts 2:33**

<sup>33</sup> इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उण्डेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो।

**Acts 2:34**

<sup>34</sup> क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; परन्तु वह स्वयं कहता है, ‘प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा; मेरे दाहिने बैठ,

**Acts 2:35**

<sup>35</sup> जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों तले की चौकी न कर दूँ।”

**Acts 2:36**

<sup>36</sup> “अतः अब इस्त्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।”

**Acts 2:37**

<sup>37</sup> तब सुननेवालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और अन्य प्रेरितों से पूछने लगे, “हे भाइयों, हम क्या करें?”

**Acts 2:38**

<sup>38</sup> पतरस ने उनसे कहा, “मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।

**Acts 2:39**

<sup>39</sup> क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।”

**Acts 2:40**

<sup>40</sup> उसने बहुत और बातों से भी गवाही दे देकर समझाया कि अपने आपको इस टेढ़ी जाति से बचाओ।

**Acts 2:41**

<sup>41</sup> अतः जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हजार मनुष्यों के लगभग उनमें मिल गए।

**Acts 2:42**

<sup>42</sup> और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।

**Acts 2:43**

<sup>43</sup> और सब लोगों पर भय छा गया, और बहुत से अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितों के द्वारा प्रगट होते थे।

**Acts 2:44**

<sup>44</sup> और सब विश्वास करनेवाले इकट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएँ साझे की थीं।

**Acts 2:45**

<sup>45</sup> और वे अपनी-अपनी सम्पत्ति और सामान बेच-बेचकर जैसी जिसकी आवश्यकता होती थी बाँट दिया करते थे।

**Acts 2:46**

<sup>46</sup> और वे प्रतिदिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर-घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सिधाई से भोजन किया करते थे।

**Acts 2:47**

<sup>47</sup> और परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे; और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।

**Acts 3:1**

<sup>1</sup> पतरस और यूहन्ना तीसरे पहर प्रार्थना के समय मन्दिर में जा रहे थे।

**Acts 3:2**

<sup>2</sup> और लोग एक जन्म के लँगड़े को ला रहे थे, जिसको वे प्रतिदिन मन्दिर के उस द्वार पर जो ‘सुन्दर’ कहलाता है, बैठा देते थे, कि वह मन्दिर में जानेवालों से भीख माँगे।

**Acts 3:3**

<sup>3</sup> जब उसने पतरस और यूहन्ना को मन्दिर में जाते देखा, तो उनसे भीख माँगी।

**Acts 3:4**

<sup>4</sup> पतरस ने यूहन्ना के साथ उसकी ओर ध्यान से देखकर कहा, “हमारी ओर देख!”

**Acts 3:5**

<sup>5</sup> अतः वह उनसे कुछ पाने की आशा रखते हुए उनकी ओर ताकने लगा।

**Acts 3:6**

<sup>6</sup> तब पतरस ने कहा, “चाँदी और सोना तो मेरे पास है नहीं; परन्तु जो मेरे पास है, वह तुझे देता हूँ; यीशु मसीह नासरी के नाम से चल फिर।”

**Acts 3:7**

<sup>7</sup> और उसने उसका दाहिना हाथ पकड़ के उसे उठाया; और तुरन्त उसके पाँवों और टखनों में बल आ गया।

**Acts 3:8**

<sup>8</sup> और वह उछलकर खड़ा हो गया, और चलने फिरने लगा; और चलता, और कूदता, और परमेश्वर की स्तुति करता हुआ उनके साथ मन्दिर में गया।

**Acts 3:9**

<sup>9</sup> सब लोगों ने उसे चलते फिरते और परमेश्वर की स्तुति करते देखकर,

**Acts 3:10**

<sup>10</sup> उसको पहचान लिया कि यह वही है, जो मन्दिर के ‘सुन्दर’ फटक पर बैठकर भीख माँगा करता था; और उस घटना से जो उसके साथ हुई थी; वे बहुत अचम्पित और चकित हुए।

**Acts 3:11**

<sup>11</sup> जब वह पतरस और यूहन्ना को पकड़े हुए था, तो सब लोग बहुत अचम्पा करते हुए उस ओसारे में जो सुलैमान का कहलाता है, उनके पास दौड़े आए।

**Acts 3:12**

<sup>12</sup> यह देखकर पतरस ने लोगों से कहा, “हे इस्राएलियों, तुम इस मनुष्य पर क्यों अचम्पा करते हो, और हमारी ओर क्यों इस प्रकार देख रहे हो, कि मानो हमने अपनी सामर्थ्य या भक्ति से इसे चलने फिरने योग्य बना दिया।

**Acts 3:13**

<sup>13</sup> अब्राहम और इसहाक और याकूब के परमेश्वर, हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने अपने सेवक यीशु की महिमा की, जिसे तुम ने पकड़वा दिया, और जब पिलातुस ने उसे छोड़ देने का विचार किया, तब तुम ने उसके सामने यीशु का तिरस्कार किया।

**Acts 3:14**

<sup>14</sup> तुम ने उस पवित्र और धर्म का तिरस्कार किया, और चाहा कि एक हत्यारे को तुम्हारे लिये छोड़ दिया जाए।

**Acts 3:15**

<sup>15</sup> और तुम ने जीवन के कर्ता को मार डाला, जिसे परमेश्वर ने मेरे हुओं में से जिलाया; और इस बात के हम गवाह हैं।

**Acts 3:16**

<sup>16</sup> और उसी के नाम ने, उस विश्वास के द्वारा जो उसके नाम पर है, इस मनुष्य को जिसे तुम देखते हो और जानते भी हो सामर्थ्य दी है; और निश्चय उसी विश्वास ने जो यीशु के द्वारा है, इसको तुम सब के सामने बिलकुल भला चंगा कर दिया है।

**Acts 3:17**

<sup>17</sup> “और अब हे भाइयों, मैं जानता हूँ कि यह काम तुम ने अज्ञानता से किया, और वैसा ही तुम्हारे सरदारों ने भी किया।

**Acts 3:18**

<sup>18</sup> परन्तु जिन बातों को परमेश्वर ने सब भविष्यद्वक्ताओं के मुख से पहले ही बताया था, कि उसका मसीह दुःख उठाएगा; उन्हें उसने इस रीति से पूरा किया।

**Acts 3:19**

<sup>19</sup> इसलिए, मन फिराओं और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाएँ जाएँ, जिससे प्रभु के सम्मुख से विश्रान्ति के दिन आएँ।

**Acts 3:20**

<sup>20</sup> और वह उस यीशु को भेजे जो तुम्हारे लिये पहले ही से मसीह ठहराया गया है।

**Acts 3:21**

<sup>21</sup> अवश्य है कि वह स्वर्ग में उस समय तक रहे जब तक कि वह सब बातों का सुधार न कर ले जिसकी चर्चा प्राचीनकाल से परमेश्वर ने अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुख से की है।

**Acts 3:22**

<sup>22</sup> जैसा कि मूसा ने कहा, 'प्रभु परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिये मुझ जैसा एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा, जो कुछ वह तुम से कह, उसकी सुनना।'

**Acts 3:23**

<sup>23</sup> परन्तु प्रत्येक मनुष्य जो उस भविष्यद्वक्ता की न सुने, लोगों में से नाश किया जाएगा।

**Acts 3:24**

<sup>24</sup> और शमूएल से लेकर उसके बाद वालों तक जितने भविष्यद्वक्ताओं ने बात कहीं उन सब ने इन दिनों का सन्देश दिया है।

**Acts 3:25**

<sup>25</sup> तुम भविष्यद्वक्ताओं की सन्तान और उस वाचा के भागी हो, जो परमेश्वर ने तुम्हारे पूर्वजों से बाँधी, जब उसने अब्राहम से कहा, 'तेरे वंश के द्वारा पृथ्वी के सारे घराने आशीष पाएँगे।'

**Acts 3:26**

<sup>26</sup> परमेश्वर ने अपने सेवक को उठाकर पहले तुम्हारे पास भेजा, कि तुम में से हर एक को उसकी बुराइयों से फेरकर आशीष दे।"

**Acts 4:1**

<sup>1</sup> जब पतरस और यूहन्ना लोगों से यह कह रहे थे, तो याजक और मन्दिर के सरदार और सदूकी उन पर चढ़ आए।

**Acts 4:2**

<sup>2</sup> वे बहुत क्रोधित हुए कि पतरस और यूहन्ना यीशु के विषय में सिखाते थे और उसके मरे हुओं में से जी उठने का प्रचार करते थे।

**Acts 4:3**

<sup>3</sup> और उन्होंने उन्हें पकड़कर दूसरे दिन तक हवालात में रखा क्योंकि संध्या हो गई थी।

**Acts 4:4**

<sup>4</sup> परन्तु वचन के सुननेवालों में से बहुतों ने विश्वास किया, और उनकी गिनती पाँच हजार पुरुषों के लगभग हो गई।

**Acts 4:5**

<sup>5</sup> दूसरे दिन ऐसा हुआ कि उनके सरदार और पुरनिए और शास्त्री।

**Acts 4:6**

<sup>6</sup> और महायाजक हन्ना और कैफा और यूहन्ना और सिकन्दर और जितने महायाजक के घराने के थे, सब यरूशलेम में इकट्ठे हुए।

**Acts 4:7**

<sup>7</sup> और पतरस और यूहन्ना को बीच में खड़ा करके पूछने लगे, "तुम ने यह काम किस सामर्थ्य से और किस नाम से किया है?"

**Acts 4:8**

<sup>8</sup> तब पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उनसे कहा,

**Acts 4:9**

<sup>9</sup> ‘हे लोगों के सरदारों और प्राचीनों, इस दुर्बल मनुष्य के साथ जो भलाई की गई है, यदि आज हम से उसके विषय में पूछताछ की जाती है, कि वह कैसे अच्छा हुआ।

**Acts 4:10**

<sup>10</sup> तो तुम सब और सारे इस्साएली लोग जान लें कि यीशु मसीह नासरी के नाम से जिसे तुम ने कूस पर चढ़ाया, और परमेश्वर ने मरे हुओं में से जिलाया, यह मनुष्य तुम्हारे सामने भला चंगा खड़ा है।

**Acts 4:11**

<sup>11</sup> यह वही पथर है जिसे तुम राजमिस्त्रियों ने तुच्छ जाना और वह कोने के सिरे का पथर हो गया।

**Acts 4:12**

<sup>12</sup> और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।”

**Acts 4:13**

<sup>13</sup> जब उन्होंने पतरस और यूहन्ना का साहस देखा, और यह जाना कि ये अनपढ़ और साधारण मनुष्य हैं, तो अचम्भा किया; फिर उनको पहचाना, कि ये यीशु के साथ रहे हैं।

**Acts 4:14**

<sup>14</sup> परन्तु उस मनुष्य को जो अच्छा हुआ था, उनके साथ खड़े देखकर, यहूदी उनके विरोध में कुछ न कह सके।

**Acts 4:15**

<sup>15</sup> परन्तु उन्हें महासभा के बाहर जाने की आज्ञा देकर, वे आपस में विचार करने लगे,

**Acts 4:16**

<sup>16</sup> “हम इन मनुष्यों के साथ क्या करें? क्योंकि यरूशलेम के सब रहनेवालों पर प्रगट है, कि इनके द्वारा एक प्रसिद्ध चिन्ह दिखाया गया है, और हम उसका इन्कार नहीं कर सकते।

**Acts 4:17**

<sup>17</sup> परन्तु इसलिए कि यह बात लोगों में और अधिक फैल न जाए, हम उन्हें धमकाएँ, कि वे इस नाम से फिर किसी मनुष्य से बातें न करें।”

**Acts 4:18**

<sup>18</sup> तब पतरस और यूहन्ना को बुलाया और चेतावनी देकर यह कहा, “यीशु के नाम से कुछ भी न बोलना और न सिखाना।”

**Acts 4:19**

<sup>19</sup> परन्तु पतरस और यूहन्ना ने उनको उत्तर दिया, “तुम ही न्याय करो, कि क्या यह परमेश्वर के निकट भला है, कि हम परमेश्वर की बात से बढ़कर तुम्हारी बात मानें?

**Acts 4:20**

<sup>20</sup> क्योंकि यह तो हम से हो नहीं सकता, कि जो हमने देखा और सुना है, वह न कहें।”

**Acts 4:21**

<sup>21</sup> तब उन्होंने उनको और धमकाकर छोड़ दिया, क्योंकि लोगों के कारण उन्हें दण्ड देने का कोई कारण नहीं मिला, इसलिए कि जो घटना हुई थी उसके कारण सब लोग परमेश्वर की बड़ाई करते थे।

**Acts 4:22**

<sup>22</sup> क्योंकि वह मनुष्य, जिस पर यह चंगा करने का चिन्ह दिखाया गया था, चालीस वर्ष से अधिक आयु का था।

**Acts 4:23**

<sup>23</sup> पतरस और यूहन्ना छूटकर अपने साथियों के पास आए, और जो कुछ प्रधान याजकों और प्राचीनों ने उनसे कहा था, उनको सुना दिया।

**Acts 4:24**

<sup>24</sup> यह सुनकर, उन्होंने एक वित्त होकर ऊँचे शब्द से परमेश्वर से कहा, “हे प्रभु, तू वही है जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है बनाया।

**Acts 4:25**

<sup>25</sup> तूने पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवक हमारे पिता दाऊद के मुख से कहा, ‘अन्यजातियों ने हुल्लाडु क्यों मचाया? और देश-देश के लोगों ने क्यों व्यर्थ बातें सोची?

**Acts 4:26**

<sup>26</sup> प्रभु और उसके अभिषिक्त के विरोध में पृथ्वी के राजा खड़े हुए, और हाकिम एक साथ इकट्ठे हो गए।

**Acts 4:27**

<sup>27</sup> “क्योंकि सचमुच तेरे पवित्र सेवक यीशु के विरोध में, जिसे तूने अभिषेक किया, हेरोदेस और पुन्तियुस पिलातुस भी अन्यजातियों और इस्लाएलियों के साथ इस नगर में इकट्ठे हुए,

**Acts 4:28**

<sup>28</sup> कि जो कुछ पहले से तेरी सामर्थ्य और मति से ठहरा था वही करें।

**Acts 4:29**

<sup>29</sup> अब हे प्रभु, उनकी धमकियों को देख; और अपने दासों को यह वरदान दे कि तेरा वचन बड़े साहस से सुनाएँ।

**Acts 4:30**

<sup>30</sup> और चंगा करने के लिये तू अपना हाथ बढ़ा कि चिन्ह और अद्भुत काम तेरे पवित्र सेवक यीशु के नाम से किए जाएँ।”

**Acts 4:31**

<sup>31</sup> जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहाँ वे इकट्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन साहस से सुनाते रहे।

**Acts 4:32**

<sup>32</sup> और विश्वास करनेवालों की मण्डली एक वित्त और एक मन की थी, यहाँ तक कि कोई भी अपनी सम्पत्ति अपनी नहीं कहता था, परन्तु सब कुछ साझे का था।

**Acts 4:33**

<sup>33</sup> और प्रेरित बड़ी सामर्थ्य से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था।

**Acts 4:34**

<sup>34</sup> और उनमें कोई भी दरिद्र न था, क्योंकि जिनके पास भूमि या घर थे, वे उनको बेच-बेचकर, बिकी हुई वस्तुओं का दाम लाते, और उसे प्रेरितों के पाँवों पर रखते थे।

**Acts 4:35**

<sup>35</sup> और जैसी जिसे आवश्यकता होती थी, उसके अनुसार हर एक को बाँट दिया करते थे।

**Acts 4:36**

<sup>36</sup> और यूसुफ नामक, साइप्रस का एक लेवी था जिसका नाम प्रेरितों ने बरनबास अर्थात् (शान्ति का पुत्र) रखा था।

**Acts 4:37**

<sup>37</sup> उसकी कुछ भूमि थी, जिसे उसने बेचा, और दाम के रूपये लाकर प्रेरितों के पाँवों पर रख दिए।

**Acts 5:1**

<sup>1</sup> हनन्याह नामक एक मनुष्य, और उसकी पत्नी सफीरा ने कुछ भूमि बेची।

**Acts 5:2**

<sup>2</sup> और उसके दाम में से कुछ रख छोड़ा; और यह बात उसकी पत्नी भी जानती थी, और उसका एक भाग लाकर प्रेरितों के पाँवों के आगे रख दिया।

**Acts 5:3**

<sup>3</sup> परन्तु पतरस ने कहा, ‘हे हनन्याह! शैतान ने तेरे मन में यह बात क्यों डाली है कि तू पवित्र आत्मा से झूठ बोले, और भूमि के दाम में से कुछ रख छोड़े?

**Acts 5:4**

<sup>4</sup> जब तक वह तेरे पास रही, क्या तेरी न थी? और जब बिक गई तो उसकी कीमत क्या तेरे वश में न थी? तूने यह बात अपने मन में क्यों सोची? तूने मनुष्यों से नहीं, परन्तु परमेश्वर से झूठ बोला है।’

**Acts 5:5**

<sup>5</sup> ये बातें सुनते ही हनन्याह गिर पड़ा, और प्राण छोड़ दिए; और सब सुननेवालों पर बड़ा भय छा गया।

**Acts 5:6**

<sup>6</sup> फिर जवानों ने उठकर उसकी अर्थी बनाई और बाहर ले जाकर गाड़ दिया।

**Acts 5:7**

<sup>7</sup> लगभग तीन घंटे के बाद उसकी पत्नी, जो कुछ हुआ था न जानकर, भीतर आई।

**Acts 5:8**

<sup>8</sup> तब पतरस ने उससे कहा, “मुझे बता क्या तुम ने वह भूमि इतने ही में बेची थी?” उसने कहा, “हाँ, इतने ही में।”

**Acts 5:9**

<sup>9</sup> पतरस ने उससे कहा, “यह क्या बात है, कि तुम दोनों प्रभु के आत्मा की परीक्षा के लिए एक साथ सहमत हो गए? देख, तेरे पति के गाड़नेवाले द्वारा ही पर खड़े हैं, और तुझे भी बाहर ले जाएँगे।”

**Acts 5:10**

<sup>10</sup> तब वह तुरन्त उसके पाँवों पर गिर पड़ी, और प्राण छोड़ दिए; और जवानों ने भीतर आकर उसे मरा पाया, और बाहर ले जाकर उसके पति के पास गाड़ दिया।

**Acts 5:11**

<sup>11</sup> और सारी कलीसिया पर और इन बातों के सब सुननेवालों पर, बड़ा भय छा गया।

**Acts 5:12**

<sup>12</sup> प्रेरितों के हाथों से बहुत चिन्ह और अद्भुत काम लोगों के बीच में दिखाए जाते थे, और वे सब एक चित्त होकर सुलैमान के ओसारे में इकट्ठे हुआ करते थे।

**Acts 5:13**

<sup>13</sup> परन्तु औरों में से किसी को यह साहस न होता था कि, उनमें जा मिलें; फिर भी लोग उनकी बड़ाई करते थे।

**Acts 5:14**

<sup>14</sup> और विश्वास करनेवाले बहुत सारे पुरुष और स्त्रियाँ प्रभु की कलीसिया में और भी अधिक आकर मिलते रहे।

**Acts 5:15**

<sup>15</sup> यहाँ तक कि लोग बीमारों को सड़कों पर ला-लाकर, खाटों और खटोलों पर लिटा देते थे, कि जब पतरस आए, तो उसकी छाया ही उनमें से किसी पर पड़ जाए।

**Acts 5:16**

<sup>16</sup> और यरूशलेम के आस-पास के नगरों से भी बहुत लोग बीमारों और अशुद्ध आत्माओं के सताए हुओं को ला-लाकर, इकट्ठे होते थे, और सब अच्छे कर दिए जाते थे।

**Acts 5:17**

<sup>17</sup> तब महायाजक और उसके सब साथी जो सदूकियों के पंथ के थे, ईर्ष्या से भर उठे।

**Acts 5:18**

<sup>18</sup> और प्रेरितों को पकड़कर बन्दीगृह में बन्द कर दिया।

**Acts 5:19**

<sup>19</sup> परन्तु रात को प्रभु के एक स्वर्गदूत ने बन्दीगृह के द्वार खोलकर उन्हें बाहर लाकर कहा,

**Acts 5:20**

<sup>20</sup> “जाओ, मन्दिर में खड़े होकर, इस जीवन की सब बातें लोगों को सुनाओ।”

**Acts 5:21**

<sup>21</sup> वे यह सुनकर भोर होते ही मन्दिर में जाकर उपदेश देने लगे। परन्तु महायाजक और उसके साथियों ने आकर महासभा को और इसाएलियों के सब प्राचीनों को इकट्ठा किया, और बन्दीगृह में कहला भेजा कि उन्हें लाएँ।

**Acts 5:22**

<sup>22</sup> परन्तु अधिकारियों ने वहाँ पहुँचकर उन्हें बन्दीगृह में न पाया, और लौटकर सन्देश दिया,

**Acts 5:23**

<sup>23</sup> “हमने बन्दीगृह को बड़ी सावधानी से बन्द किया हुआ, और पहरेवालों को बाहर द्वारों पर खड़े हुए पाया; परन्तु जब खोला, तो भीतर कोई न मिला।”

**Acts 5:24**

<sup>24</sup> जब मन्दिर के सरदार और प्रधान याजकों ने ये बातें सुनीं, तो उनके विषय में भारी चिन्ता में पड़ गए कि उनका क्या हुआ!

**Acts 5:25**

<sup>25</sup> इतने में किसी ने आकर उन्हें बताया, “देखो, जिन्हें तुम ने बन्दीगृह में बन्द रखा था, वे मनुष्य मन्दिर में खड़े हुए लोगों को उपदेश दे रहे हैं।”

**Acts 5:26**

<sup>26</sup> तब सरदार, अधिकारियों के साथ जाकर, उन्हें ले आया, परन्तु बलपूर्वक नहीं, क्योंकि वे लोगों से डरते थे, कि उन पर पथराव न करें।

**Acts 5:27**

<sup>27</sup> उन्होंने उन्हें फिर लाकर महासभा के सामने खड़ा कर दिया और महायाजक ने उनसे पूछा,

**Acts 5:28**

<sup>28</sup> “क्या हमने तुम्हें चिताकर आज्ञा न दी थी, कि तुम इस नाम से उपदेश न करना? फिर भी देखो, तुम ने सारे यरूशलेम को अपने उपदेश से भर दिया है और उस व्यक्ति का लहू हमारी गर्दन पर लाना चाहते हो।”

**Acts 5:29**

<sup>29</sup> तब पतरस और, अन्य प्रेरितों ने उत्तर दिया, “मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्तव्य है।

**Acts 5:30**

<sup>30</sup> हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने यीशु को जिलाया, जिसे तुम ने कूस पर लटकाकर मार डाला था।

**Acts 5:31**

<sup>31</sup> उसी को परमेश्वर ने प्रभु और उद्धारकर्ता ठहराकर, अपने दाहिने हाथ से सर्वोच्च किया, कि वह इसाएलियों को मन फिराव और पापों की क्षमा प्रदान करे।

**Acts 5:32**

<sup>32</sup> और हम इन बातों के गवाह हैं, और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है, जो उसकी आज्ञा मानते हैं।<sup>40</sup>

**Acts 5:33**

<sup>33</sup> यह सुनकर वे जल उठे, और उन्हें मार डालना चाहा।

**Acts 5:34**

<sup>34</sup> परन्तु गमलीएल नामक एक फरीसी ने जो व्यवस्थापक और सब लोगों में माननीय था, महासभा में खड़े होकर प्रेरितों को थोड़ी देर के लिये बाहर कर देने की आज्ञा दी।

**Acts 5:35**

<sup>35</sup> तब उसने कहा, “हे इसाएलियों, जो कुछ इन मनुष्यों से करना चाहते हो, सोच समझ के करना।

**Acts 5:36**

<sup>36</sup> क्योंकि इन दिनों से पहले थियूदास यह कहता हुआ उठा, कि मैं भी कुछ हूँ; और कोई चार सौ मनुष्य उसके साथ हो लिए, परन्तु वह मारा गया; और जितने लोग उसे मानते थे, सब तितर-बितर हुए और मिट गए।

**Acts 5:37**

<sup>37</sup> उसके बाद नाम लिखाई के दिनों में यहूदा गलीली उठा, और कुछ लोग अपनी ओर कर लिए; वह भी नाश हो गया, और जितने लोग उसे मानते थे, सब तितर-बितर हो गए।

**Acts 5:38**

<sup>38</sup> इसलिए अब मैं तुम से कहता हूँ, इन मनुष्यों से दूर ही रहो और उनसे कुछ काम न रखो; क्योंकि यदि यह यौजना या काम मनुष्यों की ओर से हो तब तो मिट जाएगा;

**Acts 5:39**

<sup>39</sup> परन्तु यदि परमेश्वर की ओर से है, तो तुम उन्हें कदापि मिटा न सकोगे; कहीं ऐसा न हो, कि तुम परमेश्वर से भी लड़नेवाले ठहरो।”

**Acts 5:40**

<sup>40</sup> तब उन्होंने उसकी बात मान ली; और प्रेरितों को बुलाकर पिटवाया; और यह आज्ञा देकर छोड़ दिया, कि यीशु के नाम से फिर बातें न करना।

**Acts 5:41**

<sup>41</sup> वे इस बात से आनन्दित होकर महासभा के सामने से चले गए, कि हम उसके नाम के लिये निरादर होने के योग्य तो ठहरे।

**Acts 5:42**

<sup>42</sup> इसके बाद हर दिन, मन्दिर में और घर-घर में, वे लगातार सिखाते और प्रचार करते थे कि यीशु ही मसीह है।

**Acts 6:1**

<sup>1</sup> उन दिनों में जब चेलों की संख्या बहुत बढ़ने लगी, तब यूनानी भाषा बोलनेवाले इब्रानियों पर कुड़कुड़ाने लगे, कि प्रतिदिन की सेवकाई में हमारी विधवाओं की सुधि नहीं ली जाती।

**Acts 6:2**

<sup>2</sup> तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, “यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने-पिलाने की सेवा में रहें।

**Acts 6:3**

<sup>3</sup> इसलिए हे भाइयों, अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हो, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें।

**Acts 6:4**

<sup>4</sup> परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे।”

**Acts 6:5**

<sup>5</sup> यह बात सारी मण्डली को अच्छी लगी, और उन्होंने स्तिफनुस नामक एक पुरुष को जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, फिलिप्पस, प्रुखुरुस, नीकानोर, तीमोन, परमिनास और अन्ताकिया वासी नीकुलाउस को जो यहूदी मत में आ गया था, चुन लिया।

**Acts 6:6**

<sup>6</sup> और इन्हें प्रेरितों के सामने खड़ा किया और उन्होंने प्रार्थना करके उन पर हाथ रखे।

**Acts 6:7**

<sup>7</sup> और परमेश्वर का वचन फैलता गया और यरूशलेम में चेलों की गिनती बहुत बढ़ती गई; और याजकों का एक बड़ा समाज इस मत के अधीन हो गया।

**Acts 6:8**

<sup>8</sup> स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ्य से परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े-बड़े अद्भुत काम और चिन्ह दिखाया करता था।

**Acts 6:9**

<sup>9</sup> तब उस आराधनालय में से जो दासत्व-मुक्त कहलाती थी, और कुरेनी और सिकन्दरिया और किलिकिया और आसिया के लोगों में से कई एक उठकर स्तिफनुस से वाद-विवाद करने लगे।

**Acts 6:10**

<sup>10</sup> परन्तु उस ज्ञान और उस आत्मा का जिससे वह बातें करता था, वे सामना न कर सके।

**Acts 6:11**

<sup>11</sup> इस पर उन्होंने कई लोगों को उकसाया जो कहने लगे, “हमने इसे मूसा और परमेश्वर के विरोध में निन्दा की बातें कहते सुना है।”

**Acts 6:12**

<sup>12</sup> और लोगों और प्राचीनों और शास्त्रियों को भड़काकर चढ़ आए और उसे पकड़कर महासभा में ले आए।

**Acts 6:13**

<sup>13</sup> और इूठे गवाह खड़े किए, जिन्होंने कहा, “यह मनुष्य इस पवित्रस्थान और व्यवस्था के विरोध में बोलना नहीं छोड़ता।

**Acts 6:14**

<sup>14</sup> क्योंकि हमने उसे यह कहते सुना है, कि यही यीशु नासरी इस जगह को ढा देगा, और उन रीतियों को बदल डालेगा जो मूसा ने हमें सौंपी हैं।”

**Acts 6:15**

<sup>15</sup> तब सब लोगों ने जो महासभा में बैठे थे, उसकी ओर ताक कर उसका मुख स्वर्गदूत के समान देखा।

**Acts 7:1**

<sup>1</sup> तब महायाजक ने कहा, “क्या ये बातें सत्य हैं?”

**Acts 7:2**

<sup>2</sup> उसने कहा, “हे भाइयों, और पिताओं सुनो, हमारा पिता अब्राहम हारान में बसने से पहले जब मेसोपोटामिया में था; तो तेजोमय परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया।

**Acts 7:3**

<sup>3</sup> और उससे कहा, ‘तू अपने देश और अपने कुटुम्ब से निकलकर उस देश में चला जा, जिसे मैं तुझे दिखाऊंगा।’

**Acts 7:4**

<sup>4</sup> तब वह कसदियों के देश से निकलकर हारान में जा बसा; और उसके पिता की मृत्यु के बाद परमेश्वर ने उसको वहाँ से इस देश में लाकर बसाया जिसमें अब तुम बसते हो,

**Acts 7:5**

<sup>5</sup> और परमेश्वर ने उसको कुछ विरासत न दी, वरन् पैर रखने भर की भी उसमें जगह न दी, यद्यपि उस समय उसके कोई पुत्र भी न था। फिर भी प्रतिज्ञा की, ‘मैं यह देश, तेरे और तेरे बाद तेरे वंश के हाथ कर दूँगा।’

**Acts 7:6**

<sup>6</sup> और परमेश्वर ने यह कहा, ‘तेरी सन्तान के लोग पराए देश में परदेशी होंगे, और वे उन्हें दास बनाएँगे, और चार सौ वर्ष तक दुःख देंगे।’

**Acts 7:7**

<sup>7</sup> फिर परमेश्वर ने कहा, ‘जिस जाति के वे दास होंगे, उसको मैं दण्ड दूँगा; और इसके बाद वे निकलकर इसी जगह मेरी सेवा करेंगे।’

**Acts 7:8**

<sup>8</sup> और उसने उससे खतने की वाचा बाँधी; और इसी दशा में इसहाक उससे उत्पन्न हुआ; और आठवें दिन उसका खतना किया गया; और इसहाक से याकूब और याकूब से बारह कुलपति उत्पन्न हुए।

**Acts 7:9**

<sup>9</sup> “और कुलपतियों ने यूसुफ से ईर्ष्या करके उसे मिस्र देश जानेवालों के हाथ बेचा; परन्तु परमेश्वर उसके साथ था।

**Acts 7:10**

<sup>10</sup> और उसे उसके सब क्लेशों से छुड़ाकर मिस्र के राजा फ़िरौन के आगे अनुग्रह और बुद्धि दी, उसने उसे मिस्र पर और अपने सारे घर पर राज्यपाल ठहराया।

**Acts 7:11**

<sup>11</sup> तब मिस्र और कनान के सारे देश में अकाल पड़ा; जिससे भारी क्लेश हुआ, और हमारे पूर्वजों को अन्न नहीं मिलता था।

**Acts 7:12**

<sup>12</sup> परन्तु याकूब ने यह सुनकर, कि मिस्र में अनाज है, हमारे पूर्वजों को पहली बार भेजा।

**Acts 7:13**

<sup>13</sup> और दूसरी बार यूसुफ अपने भाइयों पर प्रगट हो गया, और यूसुफ की जाति फ़िरौन को मालूम हो गई।

**Acts 7:14**

<sup>14</sup> तब यूसुफ ने अपने पिता याकूब और अपने सारे कुटुम्ब को, जो पचहत्तर व्यक्ति थे, बुला भेजा।

**Acts 7:15**

<sup>15</sup> तब याकूब मिस्र में गया; और वहाँ वह और हमारे पूर्वज मर गए।

**Acts 7:16**

<sup>16</sup> उनके शव शोकेम में पहुँचाए जाकर उस कब्र में रखे गए, जिसे अब्राहम ने चाँदी देकर शोकेम में हमोर की सन्तान से मोल लिया था।

**Acts 7:17**

<sup>17</sup> “परन्तु जब उस प्रतिज्ञा के पूरे होने का समय निकट आया, जो परमेश्वर ने अब्राहम से की थी, तो मिस्र में वे लोग बढ़ गए; और बहुत हो गए।

**Acts 7:18**

<sup>18</sup> तब मिस्र में दूसरा राजा हुआ जो यूसुफ को नहीं जानता था।

**Acts 7:19**

<sup>19</sup> उसने हमारी जाति से चतुराई करके हमारे बापदादों के साथ यहाँ तक बुरा व्यवहार किया, कि उन्हें अपने बालकों को फेंक देना पड़ा कि वे जीवित न रहें।

**Acts 7:20**

<sup>20</sup> उस समय मूसा का जन्म हुआ; और वह परमेश्वर की वृष्टि में बहुत ही सुन्दर था; और वह तीन महीने तक अपने पिता के घर में पाला गया।

**Acts 7:21**

<sup>21</sup> परन्तु जब फेंक दिया गया तो फ़िरौन की बेटी ने उसे उठा लिया, और अपना पुत्र करके पाला।

**Acts 7:22**

<sup>22</sup> और मूसा को मिस्रियों की सारी विद्या पढ़ाई गई, और वह वचन और कामों में सामर्थी था।

**Acts 7:23**

<sup>23</sup> “जब वह चालीस वर्ष का हुआ, तो उसके मन में आया कि अपने इस्साएली भाइयों से भेंट करे।

**Acts 7:24**

<sup>24</sup> और उसने एक व्यक्ति पर अन्याय होते देखकर, उसे बचाया, और मिस्री को मारकर सताए हुए का पलटा लिया।

**Acts 7:25**

<sup>25</sup> उसने सोचा, कि उसके भाई समझेंगे कि परमेश्वर उसके हाथों से उनका उद्धार करेगा, परन्तु उन्होंने न समझा।

**Acts 7:26**

<sup>26</sup> दूसरे दिन जब इस्साएली आपस में लड़ रहे थे, तो वह वहाँ जा पहुँचा; और यह कहकर उन्हें मेल करने के लिये समझाया, कि हे पुरुषों, ‘तुम तो भाई-भाई हो, एक दूसरे पर क्यों अन्याय करते हो?’

**Acts 7:27**

<sup>27</sup> परन्तु जो अपने पड़ोसी पर अन्याय कर रहा था, उसने उसे यह कहकर धक्का दिया, ‘तुझे किसने हम पर अधिपति और न्यायाधीश ठहराया है?

**Acts 7:28**

<sup>28</sup> क्या जिस रीति से तूने कल मिस्री को मार डाला मुझे भी मार डालना चाहता है?

**Acts 7:29**

<sup>29</sup> यह बात सुनकर, मूसा भागा और मिद्यान देश में परदेशी होकर रहने लगा; और वहाँ उसके दो पुत्र उत्पन्न हुए।

**Acts 7:30**

<sup>30</sup> “जब पूरे चालीस वर्ष बीत गए, तो एक स्वर्गद्वार ने सीनै पहाड़ के जंगल में उसे जलती हुई झाड़ी की ज्वाला में दर्शन दिया।

**Acts 7:31**

<sup>31</sup> मूसा ने उस दर्शन को देखकर अचम्भा किया, और जब देखने के लिये पास गया, तो प्रभु की यह वाणी सुनाई दी,

**Acts 7:32**

<sup>32</sup> ‘मैं तेरे पूर्वज, अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर और याकूब का परमेश्वर हूँ।’ तब तो मूसा काँप उठा, यहाँ तक कि उसे देखने का साहस न रहा।

**Acts 7:33**

<sup>33</sup> तब प्रभु ने उससे कहा, ‘अपने पाँवों से जूती उतार ले, क्योंकि जिस जगह तू खड़ा है, वह पवित्र भूमि है।

**Acts 7:34**

<sup>34</sup> मैंने सचमुच अपने लोगों की दुर्दशा को जो मिस्र में है, देखी है; और उनकी आहें और उनका रोना सुन लिया है; इसलिए उन्हें छुड़ाने के लिये उतरा हूँ। अब आ, मैं तुझे मिस्र में भेजूँगा।

**Acts 7:35**

<sup>35</sup> “जिस मूसा को उन्होंने यह कहकर नकारा था, तुझे किसने हम पर अधिपति और न्यायाधीश ठहराया है?” उसी को परमेश्वर ने अधिपति और छुड़ानेवाला ठहराकर, उस स्वर्गदूत के द्वारा जिसने उसे झाड़ी में दर्शन दिया था, भेजा।

**Acts 7:36**

<sup>36</sup> यही व्यक्ति मिस्र और लाल समुद्र और जंगल में चालीस वर्ष तक अद्भुत काम और चिन्ह दिखाकर उन्हें निकाल लाया।

**Acts 7:37**

<sup>37</sup> यह वही मूसा है, जिसने इसाएलियों से कहा, ‘परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिये मेरे जैसा एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा।’

**Acts 7:38**

<sup>38</sup> यह वही है, जिसने जंगल में मण्डली के बीच उस स्वर्गदूत के साथ सीनै पहाड़ पर उससे बातें की, और हमारे पूर्वजों के साथ था, उसी को जीवित वचन मिले, कि हम तक पहुँचाए।

**Acts 7:39**

<sup>39</sup> परन्तु हमारे पूर्वजों ने उसकी मानना न चाहा; वरन् उसे ठुकराकर अपने मन मिस्र की ओर फेरे,

**Acts 7:40**

<sup>40</sup> और हारून से कहा, ‘हमारे लिये ऐसा देवता बना, जो हमारे आगे-आगे चलें; क्योंकि यह मूसा जो हमें मिस्र देश से निकाल लाया, हम नहीं जानते उसे क्या हुआ?’

**Acts 7:41**

<sup>41</sup> उन दिनों में उन्होंने एक बछड़ा बनाकर, उसकी मूरत के आगे बलि चढ़ाया; और अपने हाथों के कामों में मग्न होने लगे।

**Acts 7:42**

<sup>42</sup> अतः परमेश्वर ने मुँह मोड़कर उन्हें छोड़ दिया, कि आकाशगण पूजें, जैसा भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक में लिखा है, हे इस्राएल के घराने, क्या तुम जंगल में चालीस वर्ष तक पशुबलि और अन्नबलि मुझ ही को चढ़ाते रहे?

**Acts 7:43**

<sup>43</sup> और तुम मोलेक के तम्बू और रिफान देवता के तारे को लिए फिरते थे, अर्थात् उन मूर्तियों को जिन्हें तुम ने दण्डवत् करने के लिये बनाया था। अतः मैं तुम्हें बाबेल के परे ले जाकर बसाऊँगा।’

**Acts 7:44**

<sup>44</sup> “साक्षी का तम्बू जंगल में हमारे पूर्वजों के बीच में था; जैसा उसने ठहराया, जिसने मूसा से कहा, ‘जो आकार तूने देखा है, उसके अनुसार इसे बना।’

**Acts 7:45**

<sup>45</sup> उसी तम्बू को हमारे पूर्वजों ने पूर्वकाल से पाकर यहोशू के साथ यहाँ ले आए; जिस समय कि उन्होंने उन अन्यजातियों पर अधिकार पाया, जिन्हें परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों के सामने से निकाल दिया, और वह दाऊद के समय तक रहा।

**Acts 7:46**

<sup>46</sup> उस पर परमेश्वर ने अनुग्रह किया; अतः उसने विनती की कि वह याकूब के परमेश्वर के लिये निवास-स्थान बनाए।

**Acts 7:47**

<sup>47</sup> परन्तु सुलैमान ने उसके लिये घर बनाया।

**Acts 7:48**

<sup>48</sup> परन्तु परमप्रधान हाथ के बनाए घरों में नहीं रहता, जैसा कि भविष्यद्वक्ता ने कहा,

**Acts 7:49**

<sup>49</sup> 'प्रभु कहता है, स्वर्ग मेरा सिंहासन और पृथ्वी मेरे पाँवों तले की चौकी है, मेरे लिये तुम किस प्रकार का घर बनाओगे? और मेरे विश्राम का कौन सा स्थान होगा?

**Acts 7:50**

<sup>50</sup> क्या ये सब वस्तुएँ मेरे हाथ की बनाई नहीं?''

**Acts 7:51**

<sup>51</sup> 'हे हठीले, और मन और कान के खतनारहित लोगों, तुम सदा पवित्र आत्मा का विरोध करते हो। जैसा तुम्हारे पूर्वज करते थे, वैसे ही तुम भी करते हो।

**Acts 7:52**

<sup>52</sup> भविष्यद्वक्ताओं में से किसको तुम्हारे पूर्वजों ने नहीं सताया? और उन्होंने उस धर्मी के आगमन का पूर्वकाल से सन्देश देनेवालों को मार डाला, और अब तुम भी उसके पकड़वानेवाले और मार डालनेवाले हुए

**Acts 7:53**

<sup>53</sup> तुम ने स्वर्गदूतों के द्वारा ठहराई हुई व्यवस्था तो पाई, परन्तु उसका पालन नहीं किया।"

**Acts 7:54**

<sup>54</sup> ये बातें सुनकर वे क्रोधित हुए और उस पर दाँत पीसने लगे।

**Acts 7:55**

<sup>55</sup> परन्तु उसने पवित्र आत्मा से परिपर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की महिमा को और यीशु को परमेश्वर की दाहिनी ओर खड़ा देखकर

**Acts 7:56**

<sup>56</sup> कहा, "देखों, मैं स्वर्ग को खुला हुआ, और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखता हूँ।"

**Acts 7:57**

<sup>57</sup> तब उन्होंने बड़े शब्द से चिल्लाकर कान बन्द कर लिए, और एक चित्त होकर उस पर झापटे।

**Acts 7:58**

<sup>58</sup> और उसे नगर के बाहर निकालकर पथराव करने लगे, और गवाहों ने अपने कपड़े शाऊल नामक एक जवान के पाँवों के पास उतार कर रखे।

**Acts 7:59**

<sup>59</sup> और वे स्तिफनुस को पथराव करते रहे, और वह यह कहकर प्रार्थना करता रहा, 'हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर।'

**Acts 7:60**

<sup>60</sup> फिर घुटने टेककर ऊँचे शब्द से पुकारा, "हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा।" और यह कहकर सो गया।

**Acts 8:1**

<sup>1</sup> शाऊल उसकी मृत्यु के साथ सहमत था। उसी दिन यस्तलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा और प्रेरितों को छोड़ सब के सब यहूदिया और सामरिया देशों में तितर-बितर हो गए।

**Acts 8:2**

<sup>2</sup> और भक्तों ने स्तिफनुस को कब्र में रखा; और उसके लिये बड़ा विलाप किया।

**Acts 8:3**

<sup>3</sup> पर शाऊल कलीसिया को उजाड़ रहा था; और घर-घर घुसकर पुरुषों और स्त्रियों को घसीट-घसीट कर बन्दीगृह में डालता था।

**Acts 8:4**

<sup>4</sup> मगर जो तितर-बितर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे।

**Acts 8:5**

<sup>5</sup> और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा।

**Acts 8:6**

<sup>6</sup> जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक वित्त होकर मन लगाया।

**Acts 8:7**

<sup>7</sup> क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएँ बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गईं, और बहुत से लकवे के रोंगी और लैंगड़े भी अच्छे किए गए।

**Acts 8:8**

<sup>8</sup> और उस नगर में बड़ा आनन्द छा गया।

**Acts 8:9**

<sup>9</sup> इससे पहले उस नगर में शमैन नामक एक मनुष्य था, जो जादू-टीना करके सामरिया के लोगों को चकित करता और अपने आपको एक बड़ा पुरुष बताता था।

**Acts 8:10**

<sup>10</sup> और सब छोटे से लेकर बड़े तक उसका सम्मान कर कहते थे, ‘यह मनुष्य परमेश्वर की वह शक्ति है, जो महान कहलाती है।’

**Acts 8:11**

<sup>11</sup> उसने बहुत दिनों से उन्हें अपने जादू के कामों से चकित कर रखा था, इसलिए वे उसको बहुत मानते थे।

**Acts 8:12**

<sup>12</sup> परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस का विश्वास किया जो परमेश्वर के राज्य और यीशु मसीह के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्या पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे।

**Acts 8:13**

<sup>13</sup> तब शमैन ने स्वयं भी विश्वास किया और बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा और चिन्ह और बड़े-बड़े सामर्थ्य के काम होते देखकर चकित होता था।

**Acts 8:14**

<sup>14</sup> जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा।

**Acts 8:15**

<sup>15</sup> और उन्होंने जाकर उनके लिये प्रार्थना की ताकि पवित्र आत्मा पाएँ।

**Acts 8:16**

<sup>16</sup> क्योंकि पवित्र आत्मा अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था, उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था।

**Acts 8:17**

<sup>17</sup> तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया।

**Acts 8:18**

<sup>18</sup> जब शमैन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है, तो उनके पास रूपये लाकर कहा,

**Acts 8:19**

<sup>19</sup> “यह शक्ति मुझे भी दो, कि जिस किसी पर हाथ रखूँ वह पवित्र आत्मा पाए।”

**Acts 8:20**

<sup>20</sup> पतरस ने उससे कहा, “तेरे रूपये तेरे साथ नाश हों, क्योंकि तूने परमेश्वर का दान रूपयों से मोल लेने का विचार किया।

**Acts 8:21**

<sup>21</sup> इस बात में न तेरा हिस्सा है, न भाग; क्योंकि तेरा मन परमेश्वर के आगे सीधा नहीं।

**Acts 8:22**

<sup>22</sup> इसलिए अपनी इस बुराई से मन फिराकर प्रभु से प्रार्थना कर, सम्भव है तेरे मन का विचार क्षमा किया जाए।

**Acts 8:23**

<sup>23</sup> क्योंकि मैं देखता हूँ, कि तू पित्त की कड़वाहट और अधर्म के बन्धन में पड़ा है।”

**Acts 8:24**

<sup>24</sup> शमौन ने उत्तर दिया, “तुम मेरे लिये प्रभु से प्रार्थना करो कि जो बातें तुम ने कहीं, उनमें से कोई मुझ पर न आ पड़े।”

**Acts 8:25**

<sup>25</sup> अतः पतरस और यूहन्ना गवाही देकर और प्रभु का वचन सुनाकर, यरूशलेम को लौट गए, और सामरियों के बहुत से गाँवों में सुसमाचार सुनाते गए।

**Acts 8:26**

<sup>26</sup> फिर प्रभु के एक स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस से कहा, “उठकर दक्षिण की ओर उस मार्ग पर जा, जो यरूशलेम से गाज़ा को जाता है। यह रेगिस्तानी मार्ग है।”

**Acts 8:27**

<sup>27</sup> वह उठकर चल दिया, और तब, कूश देश का एक मनुष्य आ रहा था, जो खोजा और कूशियों की रानी कन्दाके का मंत्री

और खजांची था, और आराधना करने को यरूशलेम आया था।

**Acts 8:28**

<sup>28</sup> और वह अपने रथ पर बैठा हुआ था, और यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ता हुआ लौटा जा रहा था।

**Acts 8:29**

<sup>29</sup> तब पवित्र आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, “निकट जाकर इस रथ के साथ हो ले।”

**Acts 8:30**

<sup>30</sup> फिलिप्पुस उसकी ओर दौड़ा और उसे यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ते हुए सुना, और पूछा, “तू जो पढ़ रहा है क्या उसे समझता भी है?”

**Acts 8:31**

<sup>31</sup> उसने कहा, “जब तक कोई मुझे न समझाए तो मैं कैसे समझूँ?” और उसने फिलिप्पुस से विनती की, कि चढ़कर उसके पास बैठे।

**Acts 8:32**

<sup>32</sup> पवित्रशास्त्र का जो अध्याय वह पढ़ रहा था, वह यह था: “वह भेड़ के समान वध होने को पहुँचाया गया, और जैसा मेम्प्र अपने ऊन कतरनेवालों के सामने चुपचाप रहता है, वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला,

**Acts 8:33**

<sup>33</sup> उसकी दीनता में उसका न्याय होने नहीं पाया, और उसके समय के लोगों का वर्णन कौन करेगा? क्योंकि पृथ्वी से उसका प्राण उठा लिया जाता है।”

**Acts 8:34**

<sup>34</sup> इस पर खोजे ने फिलिप्पुस से पूछा, “मैं तुझ से विनती करता हूँ, यह बता कि भविष्यद्वक्ता यह किसके विषय में कहता है, अपने या किसी दूसरे के विषय में?”

**Acts 8:35**

<sup>35</sup> तब फिलिप्पस ने अपना मुँह खोला, और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया।

**Acts 8:36**

<sup>36</sup> मार्ग में चलते-चलते वे किसी जल की जगह पहुँचे, तब खोजे ने कहा, “देख यहाँ जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है?”

**Acts 8:37**

<sup>37</sup> फिलिप्पस ने कहा, “यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो ले सकता है।” उसने उत्तर दिया, “मैं विश्वास करता हूँ कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।”

**Acts 8:38**

<sup>38</sup> तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने उसे बपतिस्मा दिया।

**Acts 8:39**

<sup>39</sup> जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए, तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पस को उठा ले गया, और खोजे ने उसे फिर न देखा, और वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया।

**Acts 8:40**

<sup>40</sup> पर फिलिप्पस अशदोद में आ निकला, और जब तक कैसरिया में न पहुँचा, तब तक नगर-नगर सुसमाचार सुनाता गया।

**Acts 9:1**

<sup>1</sup> शाऊल जो अब तक प्रभु के चेलों को धमकाने और मार डालने की धून में था, महायाजक के पास गया।

**Acts 9:2**

<sup>2</sup> और उससे दमिश्क के आराधनालयों के नाम पर इस अभिप्राय की चिट्ठियाँ माँगी, कि क्या पुरुष, क्या स्त्री, जिन्हें वह इस पंथ पर पाए उन्हें बाँधकर यरूशलेम में ले आए।

**Acts 9:3**

<sup>3</sup> परन्तु चलते-चलते जब वह दमिश्क के निकट पहुँचा, तो एकाएक आकाश से उसके चारों ओर ज्योति चमकी,

**Acts 9:4**

<sup>4</sup> और वह भूमि पर गिर पड़ा, और यह शब्द सुना, “हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?”

**Acts 9:5**

<sup>5</sup> उसने पूछा, “हे प्रभु, तू कौन है?” उसने कहा, “मैं यीशु हूँ; जिसे तू सताता है।

**Acts 9:6**

<sup>6</sup> परन्तु अब उठकर नगर में जा, और जो तुझे करना है, वह तुझ से कहा जाएगा।”

**Acts 9:7**

<sup>7</sup> जो मनुष्य उसके साथ थे, वे चुपचाप रह गए; क्योंकि शब्द तो सुनते थे, परन्तु किसी को देखते न थे।

**Acts 9:8**

<sup>8</sup> तब शाऊल भूमि पर से उठा, परन्तु जब आँखें खोलीं तो उसे कुछ दिखाई न दिया और वे उसका हाथ पकड़ के दमिश्क में ले गए।

**Acts 9:9**

<sup>9</sup> और वह तीन दिन तक न देख सका, और न खाया और न पीया।

**Acts 9:10**

<sup>10</sup> दमिश्क में हनन्याह नामक एक चेला था, उससे प्रभु ने दर्शन में कहा, “हे हनन्याह!” उसने कहा, “हाँ प्रभु।”

**Acts 9:11**

<sup>11</sup> तब प्रभु ने उससे कहा, “उठकर उस गली में जा, जो ‘सीधी’ कहलाती है, और यहूदा के घर में शाऊल नामक एक तरसुस वासी को पूछ ले; क्योंकि वह प्रार्थना कर रहा है,

**Acts 9:12**

<sup>12</sup> और उसने हनन्याह नामक एक पुरुष को भीतर आते, और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है; ताकि फिर से दृष्टि पाए।”

**Acts 9:13**

<sup>13</sup> हनन्याह ने उत्तर दिया, “हे प्रभु, मैंने इस मनुष्य के विषय में बहुतों से सुना है कि इसने यरूशलेम में तेरे पवित्र लोगों के साथ बड़ी-बड़ी बुराइयाँ की हैं;

**Acts 9:14**

<sup>14</sup> और यहाँ भी इसको प्रधान याजकों की ओर से अधिकार मिला है, कि जो लोग तेरा नाम लेते हैं, उन सब को बाँध ले।”

**Acts 9:15**

<sup>15</sup> परन्तु प्रभु ने उससे कहा, “तू चला जा; क्योंकि यह, तो अन्यजातियों और राजाओं, और इस्लाएलियों के सामने मेरा नाम प्रगट करने के लिये मेरा चुना हुआ पात्र है।

**Acts 9:16**

<sup>16</sup> और मैं उसे बताऊँगा, कि मेरे नाम के लिये उसे कैसा-कैसा दुःख उठाना पड़ेगा।”

**Acts 9:17**

<sup>17</sup> तब हनन्याह उठकर उस घर में गया, और उस पर अपना हाथ रखकर कहा, “हे भाई शाऊल, प्रभु, अर्थात् पीशु, जो उस रास्ते में, जिससे तू आया तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे

भेजा है, कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए।”

**Acts 9:18**

<sup>18</sup> और तुरन्त उसकी आँखों से छिलके से गिरे, और वह देखने लगा और उठकर बपतिस्पा लिया;

**Acts 9:19**

<sup>19</sup> फिर भोजन करके बल पाया। वह कई दिन उन चेलों के साथ रहा जो दमिश्क में थे।

**Acts 9:20**

<sup>20</sup> और वह तुरन्त आराधनालयों में यीशु का प्रचार करने लगा, कि वह परमेश्वर का पुत्र है।

**Acts 9:21**

<sup>21</sup> और सब सुननेवाले चकित होकर कहने लगे, “क्या यह वही व्यक्ति नहीं है जो यरूशलेम में उन्हें जो इस नाम को लेते थे नाश करता था, और यहाँ भी इसलिए आया था, कि उन्हें बाँधकर प्रधान याजकों के पास ले जाए?”

**Acts 9:22**

<sup>22</sup> परन्तु शाऊल और भी सामर्थी होता गया, और इस बात का प्रमाण दे-देकर कि यीशु ही मसीह है, दमिश्क के रहनेवाले यहूदियों का मुँह बन्द करता रहा।

**Acts 9:23**

<sup>23</sup> जब बहुत दिन बीत गए, तो यहूदियों ने मिलकर उसको मार डालने की युक्ति निकाली।

**Acts 9:24**

<sup>24</sup> परन्तु उनकी युक्ति शाऊल को मालूम हो गई: वे तो उसको मार डालने के लिये रात दिन फाटकों पर घात में लगे रहते थे।

**Acts 9:25**

<sup>25</sup> परन्तु रात को उसके चेलों ने उसे लेकर टोकरे में बैठाया, और शहरपनाह पर से लटकाकर उतार दिया।

**Acts 9:26**

<sup>26</sup> यरूशलेम में पहुँचकर उसने चेलों के साथ मिल जाने का उपाय किया परन्तु सब उससे डरते थे, क्योंकि उनको विश्वास न होता था, कि वह भी चेला है।

**Acts 9:27**

<sup>27</sup> परन्तु बरनबास ने उसे अपने साथ प्रेरितों के पास ले जाकर उनसे कहा, कि इसने किस रीति से मार्ग में प्रभु को देखा, और उसने इससे बातें की; फिर दमिश्क में इसने कैसे साहस से यीशु के नाम का प्रचार किया।

**Acts 9:28**

<sup>28</sup> वह उनके साथ यरूशलेम में आता-जाता रहा। और निधड़क होकर प्रभु के नाम से प्रचार करता था;

**Acts 9:29**

<sup>29</sup> और यूनानी भाषा बोलनेवाले यहूदियों के साथ बातचीत और वाद-विवाद करता था; परन्तु वे उसे मार डालने का यत्न करने लगे।

**Acts 9:30**

<sup>30</sup> यह जानकर भाइयों ने उसे कैसरिया में ले आए, और तरसुस को भेज दिया।

**Acts 9:31**

<sup>31</sup> इस प्रकार सारे यहूदिया, और गलील, और सामरिया में कलीसिया को चैन मिला, और उसकी उन्नति होती गई; और वह प्रभु के भय और पवित्र आत्मा की शान्ति में चलती और बढ़ती गई।

**Acts 9:32**

<sup>32</sup> फिर ऐसा हुआ कि पतरस हर जगह फिरता हुआ, उन पवित्र लोगों के पास भी पहुँचा, जो लुद्धा में रहते थे।

**Acts 9:33**

<sup>33</sup> वहाँ उसे ऐनियास नामक लकवे का मारा हुआ एक मनुष्य मिला, जो आठ वर्ष से खाट पर पड़ा था।

**Acts 9:34**

<sup>34</sup> पतरस ने उससे कहा, “हे ऐनियास! यीशु मसीह तुझे चंगा करता है। उठ, अपना बिछौना उठा।” तब वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ।

**Acts 9:35**

<sup>35</sup> और लुद्धा और शारोन के सब रहनेवाले उसे देखकर प्रभु की ओर फिरे।

**Acts 9:36**

<sup>36</sup> याफा में तबीता अर्थात् दोरकास नामक एक विश्वासिनी रहती थी, वह बहुत से भले-भले काम और दान किया करती थी।

**Acts 9:37**

<sup>37</sup> उन्हीं दिनों में वह बीमार होकर मर गई; और उन्होंने उसे नहलाकर अटारी पर रख दिया।

**Acts 9:38**

<sup>38</sup> और इसलिए कि लुद्धा याफा के निकट था, चेलों ने यह सुनकर कि पतरस वहाँ है दो मनुष्य भेजकर उससे विनती की, “हमारे पास आने में देर न कर।”

**Acts 9:39**

<sup>39</sup> तब पतरस उठकर उनके साथ हो लिया, और जब पहुँच गया, तो वे उसे उस अटारी पर ले गए। और सब विधवाएँ रोती हुई, उसके पास आ खड़ी हुईं और जो कुर्ते और कपड़े दोरकास ने उनके साथ रहते हुए बनाए थे, दिखाने लगीं।

**Acts 9:40**

<sup>40</sup> तब पतरस ने सब को बाहर कर दिया, और घुटने टेककर प्रार्थना की; और शव की ओर देखकर कहा, “हे तबीता, उठ।” तब उसने अपनी आँखें खोल दी; और पतरस को देखकर उठ बैठी।

**Acts 9:41**

<sup>41</sup> उसने हाथ देकर उसे उठाया और पवित्र लोगों और विधवाओं को बुलाकर उसे जीवित और जागृत दिखा दिया।

**Acts 9:42**

<sup>42</sup> यह बात सारे याफा में फैल गई; और बहुतों ने प्रभु पर विश्वास किया।

**Acts 9:43**

<sup>43</sup> और पतरस याफा में शमैन नामक किसी चमड़े का धन्धा करनेवाले के यहाँ बहुत दिन तक रहा।

**Acts 10:1**

<sup>1</sup> कैसरिया में कुरनेलियुस नामक एक मनुष्य था, जो इतालियानी नाम सैन्य-दल का सूबेदार था।

**Acts 10:2**

<sup>2</sup> वह भक्त था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और यहूदी लोगों को बहुत दान देता, और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था।

**Acts 10:3**

<sup>3</sup> उसने दिन के तीसरे पहर के निकट दर्शन में स्पष्ट रूप से देखा कि परमेश्वर के एक स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर कहा, “हे कुरनेलियुस।”

**Acts 10:4**

<sup>4</sup> उसने उसे ध्यान से देखा और डरकर कहा, “हे स्वामी क्या है?” उसने उससे कहा, “तेरी प्रार्थनाएँ और तेरे दान स्मरण के लिये परमेश्वर के सामने पहुँचे हैं।

**Acts 10:5**

<sup>5</sup> और अब याफा में मनुष्य भेजकर शमैन को, जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले।

**Acts 10:6**

<sup>6</sup> वह शमैन, चमड़े का धन्धा करनेवाले के यहाँ अतिथि है, जिसका घर समुद्र के किनारे है।”

**Acts 10:7**

<sup>7</sup> जब वह स्वर्गदूत जिसने उससे बातें की थी चला गया, तो उसने दो सेवक, और जो उसके पास उपस्थित रहा करते थे उनमें से एक भक्त सिपाही को बुलाया,

**Acts 10:8**

<sup>8</sup> और उन्हें सब बातें बताकर याफा को भेजा।

**Acts 10:9**

<sup>9</sup> दूसरे दिन जब वे चलते-चलते नगर के पास पहुँचे, तो दोपहर के निकट पतरस छत पर प्रार्थना करने चढ़ा।

**Acts 10:10**

<sup>10</sup> उसे भूख लगी और कुछ खाना चाहता था, परन्तु जब वे तैयार कर रहे थे तो वह बेसुध हो गया।

**Acts 10:11**

<sup>11</sup> और उसने देखा, कि आकाश खुल गया; और एक बड़ी चादर, पात्र के समान चारों कोनों से लटकाया हुआ, पृथ्वी की ओर उत्तर रहा है।

**Acts 10:12**

<sup>12</sup> जिसमें पृथ्वी के सब प्रकार के चौपाए और रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के पक्षी थे।

**Acts 10:13**

<sup>13</sup> और उसे एक ऐसी वाणी सुनाई दी, “हे पतरस उठ, मार और खा।”

**Acts 10:14**

<sup>14</sup> परन्तु पतरस ने कहा, “नहीं प्रभु, कदापि नहीं; क्योंकि मैंने कभी कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है।”

**Acts 10:15**

<sup>15</sup> फिर दूसरी बार उसे वाणी सुनाई दी, “जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध मत कह।”

**Acts 10:16**

<sup>16</sup> तीन बार ऐसा ही हुआ; तब तुरन्त वह चादर आकाश पर उठा लिया गया।

**Acts 10:17**

<sup>17</sup> जब पतरस अपने मन में दुविधा में था, कि यह दर्शन जो मैंने देखा क्या है, तब वे मनुष्य जिन्हें कुरनेलियुस ने भेजा था, शमैन के घर का पता लगाकर द्वार पर आ खड़े हुए।

**Acts 10:18**

<sup>18</sup> और पुकारकर पूछने लगे, “क्या शमैन जो पतरस कहलाता है, यहाँ पर अतिथि है?”

**Acts 10:19**

<sup>19</sup> पतरस जो उस दर्शन पर सोच ही रहा था, कि आत्मा ने उससे कहा, “देख, तीन मनुष्य तुझे खोज रहे हैं।

**Acts 10:20**

<sup>20</sup> अतः उठकर नीचे जा, और निःसंकोच उनके साथ हो ले; क्योंकि मैंने ही उन्हें भेजा है।”

**Acts 10:21**

<sup>21</sup> तब पतरस ने नीचे उतरकर उन मनुष्यों से कहा, “देखो, जिसको तुम खोज रहे हो, वह मैं ही हूँ; तुम्हारे आने का क्या कारण है?”

**Acts 10:22**

<sup>22</sup> उन्होंने कहा, “कुरनेलियुस सूबेदार जो धर्मी और परमेश्वर से डरनेवाला और सारी यहूदी जाति में सुनाम मनुष्य है, उसने एक पवित्र स्वर्गद्वार से यह निर्देश पाया है, कि तुझे अपने घर बुलाकर तुझ से उपदेश सुने।”

**Acts 10:23**

<sup>23</sup> तब उसने उन्हें भीतर बुलाकर उनको रहने की जगह दी। और दूसरे दिन, वह उनके साथ गया, और याफा के भाइयों में से कुछ उसके साथ हो लिए।

**Acts 10:24**

<sup>24</sup> दूसरे दिन वे कैसरिया में पहुँचे, और कुरनेलियुस अपने कुटुम्बियों और प्रिय मित्रों को इकट्ठे करके उनकी प्रतीक्षा कर रहा था।

**Acts 10:25**

<sup>25</sup> जब पतरस भीतर आ रहा था, तो कुरनेलियुस ने उससे भेंट की, और उसके पाँवों पर गिरकर उसे प्रणाम किया।

**Acts 10:26**

<sup>26</sup> परन्तु पतरस ने उसे उठाकर कहा, “खड़ा हो, मैं भी तो मनुष्य ही हूँ।”

**Acts 10:27**

<sup>27</sup> और उसके साथ बातचीत करता हुआ भीतर गया, और बहुत से लोगों को इकट्ठे देखकर

**Acts 10:28**

<sup>28</sup> उनसे कहा, “तुम जानते हो, कि अन्यजाति की संगति करना या उसके यहाँ जाना यहूदी के लिये अधर्म है, परन्तु परमेश्वर ने मुझे बताया है कि किसी मनुष्य को अपवित्र या अशुद्ध न कहूँ।

**Acts 10:29**

<sup>29</sup> इसलिए मैं जब बुलाया गया तो बिना कुछ कहे चला आया। अब मैं पूछता हूँ कि मुझे किस काम के लिये बुलाया गया है?”

**Acts 10:30**

<sup>30</sup> कुरनेलियुस ने कहा, “चार दिन पहले, इसी समय, मैं अपने घर में तीसरे पहर को प्रार्थना कर रहा था; कि एक पुरुष चमकीला वस्त धरने हुए, मेरे सामने आ खड़ा हुआ।

**Acts 10:31**

<sup>31</sup> और कहने लगा, हे कुरनेलियुस, तेरी प्रार्थना सुन ली गई है और तेरे दान परमेश्वर के सामने स्मरण किए गए हैं।

**Acts 10:32**

<sup>32</sup> इसलिए किसी को यापा भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है, बुला। वह समुद्र के किनारे शमौन जो, चमड़े का धन्धा करनेवाले के घर में अतिथि है।”

**Acts 10:33**

<sup>33</sup> तब मैंने तुरन्त तेरे पास लोग भेजे, और तूने भला किया जो आ गया। अब हम सब यहाँ परमेश्वर के सामने हैं, ताकि जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है उसे सुनें।”

**Acts 10:34**

<sup>34</sup> तब पतरस ने मुँह खोलकर कहा, अब मुझे निश्चय हुआ, कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता,

**Acts 10:35**

<sup>35</sup> वरन् हर जाति में जो उससे डरता और धार्मिक काम करता है, वह उसे भाता है।

**Acts 10:36**

<sup>36</sup> जो वचन उसने इस्साएलियों के पास भेजा, जबकि उसने यीशु मसीह के द्वारा जो सब का प्रभु है, शान्ति का सुसमाचार सुनाया।

**Acts 10:37**

<sup>37</sup> वह वचन तुम जानते हो, जो यूहन्ना के बपतिस्मा के प्रचार के बाद गलील से आरम्भ होकर सारे यहूदिया में फैल गया:

**Acts 10:38**

<sup>38</sup> परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया; वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।

**Acts 10:39**

<sup>39</sup> और हम उन सब कामों के गवाह हैं; जो उसने यहूदिया के देश और यरूशलेम में भी किए, और उन्होंने उसे काठ पर लटकाकर मार डाला।

**Acts 10:40**

<sup>40</sup> उसको परमेश्वर ने तीसरे दिन जिलाया, और प्रगट भी कर दिया है।

**Acts 10:41**

<sup>41</sup> सब लोगों को नहीं वरन् उन गवाहों को जिन्हें परमेश्वर ने पहले से चुन लिया था, अर्थात् हमको जिन्होंने उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद उसके साथ खाया पीया;

**Acts 10:42**

<sup>42</sup> और उसने हमें आज्ञा दी कि लोगों में प्रचार करो और गवाही दो, कि यह वही है जिसे परमेश्वर ने जीवितों और मरे हुओं का न्यायी ठहराया है।

**Acts 10:43**

<sup>43</sup> उसकी सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते हैं कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी।

**Acts 10:44**

<sup>44</sup> पतरस ये बातें कह ही रहा था कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेवालों पर उतर आया।

**Acts 10:45**

<sup>45</sup> और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उण्डेला गया है।

**Acts 10:46**

<sup>46</sup> क्योंकि उन्होंने उन्हें भाँति-भाँति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना। इस पर पतरस ने कहा,

**Acts 10:47**

<sup>47</sup> “क्या अब कोई इन्हें जल से रोक सकता है कि ये बपतिस्मा न पाएँ, जिन्होंने हमारे समान पवित्र आत्मा पाया है?”

**Acts 10:48**

<sup>48</sup> और उसने आज्ञा दी कि उन्हें धीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए। तब उन्होंने उससे विनती की, कि कुछ दिन और हमारे साथ रह।

**Acts 11:1**

<sup>1</sup> और प्रेरितों और भाइयों ने जो यहूदिया में थे सुना, कि अन्यजातियों ने भी परमेश्वर का वचन मान लिया है।

**Acts 11:2**

<sup>2</sup> और जब पतरस यस्तलेम में आया, तो खतना किए हुए लोग उससे वाद-विवाद करने लगे,

**Acts 11:3**

<sup>3</sup> “तूने खतनारहित लोगों के यहाँ जाकर उनके साथ खाया।”

**Acts 11:4**

<sup>4</sup> तब पतरस ने उन्हें आरम्भ से क्रमानुसार कह सुनाया;

**Acts 11:5**

<sup>5</sup> “मैं याफा नगर में प्रार्थना कर रहा था, और बेसुध होकर एक दर्शन देखा, कि एक बड़ी चादर, एक पात्र के समान चारों कोनों से लटकाया हुआ, आकाश से उत्तरकर मेरे पास आया।

**Acts 11:6**

<sup>6</sup> जब मैंने उस पर ध्यान किया, तो पृथ्वी के चौपाएँ और वन पशु और रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के पक्षी देखे;

**Acts 11:7**

<sup>7</sup> और यह आवाज भी सुना, ‘हे पतरस उठ मार और खा।’

**Acts 11:8**

<sup>8</sup> मैंने कहा, ‘नहीं प्रभु, नहीं; क्योंकि कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु मेरे मुँह में कभी नहीं गई।’

**Acts 11:9**

<sup>9</sup> इसके उत्तर में आकाश से दोबारा आवाज आई, ‘जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे अशुद्ध मत कह।’

**Acts 11:10**

<sup>10</sup> तीन बार ऐसा ही हुआ; तब सब कुछ फिर आकाश पर खींच लिया गया।

**Acts 11:11**

<sup>11</sup> तब तुरन्त तीन मनुष्य जो कैसरिया से मेरे पास भेजे गए थे, उस घर पर जिसमें हम थे, आ खड़े हुए।

**Acts 11:12**

<sup>12</sup> तब आत्मा ने मुझसे उनके साथ बेद्धिक हो लेने को कहा, और ये छः भाई भी मेरे साथ हो लिए; और हम उस मनुष्य के घर में गए।

**Acts 11:13**

<sup>13</sup> और उसने बताया, कि मैंने एक स्वर्गदूत को अपने घर में खड़ा देखा, जिसने मुझसे कहा, ‘आपा में मनुष्य भेजकर शमैन को जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले।

**Acts 11:14**

<sup>14</sup> वह तुझ से ऐसी बातें कहेगा, जिनके द्वारा तू और तेरा सारा घराना उद्धार पाएगा।’

**Acts 11:15**

<sup>15</sup> जब मैं बातें करने लगा, तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा, जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था।

**Acts 11:16**

<sup>16</sup> तब मुझे प्रभु का वह वचन स्मरण आया; जो उसने कहा, ‘यूहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया, परन्तु तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।’

**Acts 11:17**

<sup>17</sup> अतः जबकि परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया, जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिला; तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता था?”

**Acts 11:18**

<sup>18</sup> यह सुनकर, वे चुप रहे, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, “तब तो परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिये मन फिराव का दान दिया है।”

**Acts 11:19**

<sup>19</sup> जो लोग उस क्लेश के मारे जो स्तिफनुस के कारण पड़ा था, तितर-बितर हो गए थे, वे फिरते-फिरते फीनीके और साइप्रस और अन्ताकिया में पहुँचे; परन्तु यहूदियों को छोड़ किसी और को वचन न सुनाते थे।

**Acts 11:20**

<sup>20</sup> परन्तु उनमें से कुछ साइप्रस वासी और कुरेनी थे, जो अन्ताकिया में आकर यूनानियों को भी प्रभु यीशु का सुसमाचार की बातें सुनाने लगे।

**Acts 11:21**

<sup>21</sup> और प्रभु का हाथ उन पर था, और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे।

**Acts 11:22**

<sup>22</sup> तब उनकी चर्चा यरूशलेम की कलीसिया के सुनने में आई, और उन्होंने बरनबास को अन्ताकिया भेजा।

**Acts 11:23**

<sup>23</sup> वह वहाँ पहुँचकर, और परमेश्वर के अनुग्रह को देखकर आनन्दित हुआ; और सब को उपदेश दिया कि तन मन लगाकर प्रभु से लिपटे रहें।

**Acts 11:24**

<sup>24</sup> क्योंकि वह एक भला मनुष्य था; और पवित्र आत्मा और विश्वास से परिपूर्ण था; और बहुत से लोग प्रभु में आ मिले।

**Acts 11:25**

<sup>25</sup> तब वह शाऊल को ढूँढ़ने के लिये तरसुस को चला गया।

**Acts 11:26**

<sup>26</sup> और जब उनसे मिला तो उसे अन्ताकिया में लाया, और ऐसा हुआ कि वे एक वर्ष तक कलीसिया के साथ मिलते और बहुत से लोगों को उपदेश देते रहे, और चेले सबसे पहले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए।

**Acts 11:27**

<sup>27</sup> उन्हीं दिनों में कई भविष्यद्वक्ता यरूशलेम से अन्ताकिया में आए।

**Acts 11:28**

<sup>28</sup> उनमें से अगबुस ने खड़े होकर आत्मा की प्रेरणा से यह बताया, कि सारे जगत में बड़ा अकाल पड़ेगा, और वह अकाल क्लौदियुस के समय में पड़ा।

**Acts 11:29**

<sup>29</sup> तब चेलों ने निर्णय किया कि हर एक अपनी-अपनी पूँजी के अनुसार यहूदिया में रहनेवाले भाइयों की सेवा के लिये कुछ भेज।

**Acts 11:30**

<sup>30</sup> और उन्होंने ऐसा ही किया; और बरनबास और शाऊल के हाथ प्राचीनों के पास कुछ भेज दिया।

**Acts 12:1**

<sup>1</sup> उस समय हेरोदेस राजा ने कलीसिया के कई एक व्यक्तियों को दुःख देने के लिये उन पर हाथ डाले।

**Acts 12:2**

<sup>2</sup> उसने यूहन्ना के भाई याकूब को तलवार से मरवा डाला।

**Acts 12:3**

<sup>3</sup> जब उसने देखा, कि यहूदी लोग इससे आनन्दित होते हैं, तो उसने पतरस को भी पकड़ लिया। वे दिन अखमीरी रोटी के दिन थे।

**Acts 12:4**

<sup>4</sup> और उसने उसे पकड़कर बन्दीगृह में डाला, और रखवाली के लिये, चार-चार सिपाहियों के चार पहरों में रखा, इस मनसा से कि फसह के बाद उसे लोगों के सामने लाए।

**Acts 12:5**

<sup>5</sup> बन्दीगृह में पतरस की रखवाली हो रही थी; परन्तु कलीसिया उसके लिये लौ लगाकर परमेश्वर से प्रार्थना कर रही थी।

**Acts 12:6**

<sup>6</sup> और जब हेरोदेस उसे उनके सामने लाने को था, तो उसी रात पतरस दो जंजीरों से बंधा हुआ, दो सिपाहियों के बीच में सो रहा था; और पहरेदार द्वार पर बन्दीगृह की रखवाली कर रहे थे।

**Acts 12:7**

<sup>7</sup> तब प्रभु का एक स्वर्गदूत आ खड़ा हुआ और उस कोठरी में ज्योति चमकी, और उसने पतरस की पसली पर हाथ मारकर उसे जगाया, और कहा, “उठ, जल्दी कर।” और उसके हाथ से जंजीरें खुलकर गिर पड़ीं।

**Acts 12:8**

<sup>8</sup> तब स्वर्गदूत ने उससे कहा, “कमर बाँध, और अपने जूते पहन लो।” उसने वैसा ही किया, फिर उसने उससे कहा, “अपना वस्त्र पहनकर मेरे पीछे हो ले।”

**Acts 12:9**

<sup>9</sup> वह निकलकर उसके पीछे हो लिया; परन्तु यह न जानता था कि जो कुछ स्वर्गदूत कर रहा है, वह सच है, बल्कि यह समझा कि मैं दर्शन देख रहा हूँ।

**Acts 12:10**

<sup>10</sup> तब वे पहले और दूसरे पहरे से निकलकर उस लोहे के फाटक पर पहुँचे, जो नगर की ओर है। वह उनके लिये आप से आप खुल गया, और वे निकलकर एक ही गली होकर गए, इतने में स्वर्गदूत उसे छोड़कर चला गया।

**Acts 12:11**

<sup>11</sup> तब पतरस ने सचेत होकर कहा, “अब मैंने सच जान लिया कि प्रभु ने अपना स्वर्गदूत भेजकर मुझे हेरोदेस के हाथ से छुड़ा लिया, और यहूदियों की सारी आशा तोड़ दी।”

**Acts 12:12**

<sup>12</sup> और यह सोचकर, वह उस यूहन्ना की माता मरियम के घर आया, जो मरकुस कहलाता है। वहाँ बहुत लोग इकट्ठे होकर प्रार्थना कर रहे थे।

**Acts 12:13**

<sup>13</sup> जब उसने फाटक की खिड़की खटखटाई तो रूदे नामक एक दासी सुनने को आई।

**Acts 12:14**

<sup>14</sup> और पतरस का शब्द पहचानकर, उसने आनन्द के मारे फाटक न खोला; परन्तु दौड़कर भीतर गई, और बताया कि पतरस द्वार पर खड़ा है।

**Acts 12:15**

<sup>15</sup> उन्होंने उससे कहा, “तू पागल है।” परन्तु वह दृढ़ता से बोली कि ऐसा ही है: तब उन्होंने कहा, “उसका स्वर्गदूत होगा।”

**Acts 12:16**

<sup>16</sup> परन्तु पतरस खटखटाता ही रहा अतः उन्होंने खिड़की खोली, और उसे देखकर चकित रह गए।

**Acts 12:17**

<sup>17</sup> तब उसने उन्हें हाथ से संकेत किया कि चुप रहें; और उनको बताया कि प्रभु किस रीति से मुझे बन्दीगृह से निकाल

लाया है। फिर कहा, “याकूब और भाइयों को यह बात कह देना।” तब निकलकर दूसरी जगह चला गया।

**Acts 12:18**

<sup>18</sup> भौर को सिपाहियों में बड़ी हलचल होने लगी कि पतरस कहाँ गया।

**Acts 12:19**

<sup>19</sup> जब हेरोदेस ने उसकी खोज की और न पाया, तो पहरुओं की जाँच करके आज्ञा दी कि वे मार डाले जाएँ: और वह यहूदिया को छोड़कर कैसरिया में जाकर रहने लगा।

**Acts 12:20**

<sup>20</sup> हेरोदेस सोर और सीदोन के लोगों से बहुत अप्रसन्न था। तब वे एक चित्त होकर उसके पास आए और बलास्तुस को जो राजा का एक कर्मचारी था, मनाकर मेल करना चाहा; क्योंकि राजा के देश से उनके देश का पालन-पोषण होता था।

**Acts 12:21**

<sup>21</sup> ठहराए हुए दिन हेरोदेस राजवस्तु पहनकर सिंहासन पर बैठा; और उनको व्याख्यान देने लगा।

**Acts 12:22**

<sup>22</sup> और लोग पुकार उठे, “यह तो मनुष्य का नहीं ईश्वर का शब्द है।”

**Acts 12:23**

<sup>23</sup> उसी क्षण प्रभु के एक स्वर्गदूत ने तुरन्त उसे आघात पहुँचाया, क्योंकि उसने परमेश्वर की महिमा नहीं की और उसके शरीर में कीड़े पड़ गए और वह मर गया।

**Acts 12:24**

<sup>24</sup> परन्तु परमेश्वर का वचन बढ़ता और फैलता गया।

**Acts 12:25**

<sup>25</sup> जब बरनबास और शाऊल अपनी सेवा पूरी कर चुके तो यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है, साथ लेकर यरूशलेम से लौटे।

**Acts 13:1**

<sup>1</sup> अन्ताकिया की कलीसिया में कई भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे; अर्थात् बरनबास और शमैन जो नीगर कहलाता है; और लूकियुस कुरेनी, और चौथाई देश के राजा हेरोदेस का दूधभाई मनाहेम और शाऊल।

**Acts 13:2**

<sup>2</sup> जब वे उपवास सहित प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, ‘मेरे लिये बरनबास और शाऊल को उस काम के लिये अलग करो जिसके लिये मैंने उन्हें बुलाया है।’

**Acts 13:3**

<sup>3</sup> तब उन्होंने उपवास और प्रार्थना करके और उन पर हाथ रखकर उन्हें विदा किया।

**Acts 13:4**

<sup>4</sup> अतः वे पवित्र आत्मा के भेजे हुए सिलूकिया को गए; और वहाँ से जहाज पर चढ़कर साइप्रस को चले।

**Acts 13:5**

<sup>5</sup> और सलमीस में पहुँचकर, परमेश्वर का वचन यहूदियों के आराधनालयों में सुनाया; और यूहन्ना उनका सेवक था।

**Acts 13:6**

<sup>6</sup> और उस सारे टापू में से होते हुए, पाफुस तक पहुँचे। वहाँ उन्हें बार-यीशु नामक एक जादूगर मिला, जो यहूदी और झूठा भविष्यद्वक्ता था।

**Acts 13:7**

<sup>7</sup> वह हाकिम सिरगियुस पौलुस के साथ था, जो बुद्धिमान पुरुष था। उसने बरनबास और शाऊल को अपने पास बुलाकर परमेश्वर का वचन सुनना चाहा।

**Acts 13:8**

<sup>8</sup> परन्तु एलीमास जादूगर ने, (क्योंकि यही उसके नाम का अर्थ है) उनका सामना करके, हाकिम को विश्वास करने से रोकना चाहा।

**Acts 13:9**

<sup>9</sup> तब शाऊल ने जिसका नाम पौलुस भी है, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उसकी ओर टकटकी लगाकर कहा,

**Acts 13:10**

<sup>10</sup> “हे सारे कपट और सब चतुराई से भरे हुए शैतान की सन्तान, सकल धार्मिकता के बैरी, क्या तू प्रभु के सीधे मार्गों को टेढ़ा करना न छोड़ेगा?

**Acts 13:11**

<sup>11</sup> अब देख, प्रभु का हाथ तुझ पर पड़ा है; और तू कुछ समय तक अंधा रहेगा और सूर्य को न देखेगा।” तब तुरन्त धुंधलापन और अंधेरा उस पर छा गया, और वह इधर-उधर टटोलने लगा ताकि कोई उसका हाथ पकड़कर ले चले।

**Acts 13:12**

<sup>12</sup> तब हाकिम ने जो कुछ हुआ था, देखकर और प्रभु के उपदेश से चकित होकर विश्वास किया।

**Acts 13:13**

<sup>13</sup> पौलुस और उसके साथी पाफुस से जहाज खोलकर पंफूलिया के पिरगा में आए; और यूहन्ना उन्हें छोड़कर यरूशलेम को लौट गया।

**Acts 13:14**

<sup>14</sup> और पिरगा से आगे बढ़कर पिसिदिया के अन्ताकिया में पहुँचे; और सब्त के दिन आराधनालय में जाकर बैठ गए।

**Acts 13:15**

<sup>15</sup> व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक से पढ़ने के बाद आराधनालय के सरदारों ने उनके पास कहला भेजा, “हे भाइयों, यदि लोगों के उपदेश के लिये तुम्हारे मन में कोई बात हो तो कहो।”

**Acts 13:16**

<sup>16</sup> तब पौलस ने खड़े होकर और हाथ से इशारा करके कहा, “हे इसाएलियों, और परमेश्वर से डरनेवालों, सुनो

**Acts 13:17**

<sup>17</sup> इन इसाएली लोगों के परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों को चुन लिया, और जब ये मिस्र देश में परदेशी होकर रहते थे, तो उनकी उत्पत्ति की; और बलवन्त भूजा से निकाल लाया।

**Acts 13:18**

<sup>18</sup> और वह कोई चालीस वर्ष तक जंगल में उनकी सहता रहा,

**Acts 13:19**

<sup>19</sup> और कनान देश में सात जातियों का नाश करके उनका देश लगभग साढ़े चार सौ वर्ष में इनकी विरासत में कर दिया।

**Acts 13:20**

<sup>20</sup> इसके बाद उसने शमूएल भविष्यद्वक्ता तक उनमें न्यायी ठहराए।

**Acts 13:21**

<sup>21</sup> उसके बाद उन्होंने एक राजा माँगा; तब परमेश्वर ने चालीस वर्ष के लिये बिन्यामीन के गोत्र में से एक मनुष्य अर्थात् कीश के पुत्र शाऊल को उन पर राजा ठहराया।

**Acts 13:22**

<sup>22</sup> फिर उसे अलग करके दाऊद को उनका राजा बनाया; जिसके विषय में उसने गवाही दी, ‘मुझे एक मनुष्य, पिशौ का पुत्र दाऊद, मेरे मन के अनुसार मिल गया है। वही मेरी सारी इच्छा पूरी करेगा।’

**Acts 13:23**

<sup>23</sup> उसी के वंश में से परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार इसाएल के पास एक उद्धारकर्ता, अर्थात् यीशु को भेजा।

**Acts 13:24**

<sup>24</sup> जिसके आने से पहले यूहन्ना ने सब इसाएलियों को मन फिराव के बपतिस्मा का प्रचार किया।

**Acts 13:25**

<sup>25</sup> और जब यूहन्ना अपनी सेवा पूरी करने पर था, तो उसने कहा, “तुम मुझे क्या समझते हो? मैं वह नहीं! वरन् देखो, मेरे बाद एक आनेवाला है, जिसके पाँवों की जूती के बन्ध भी मैं खोलने के योग्य नहीं।”

**Acts 13:26**

<sup>26</sup> “हे भाइयों, तुम जो अब्राहम की सन्तान हो; और तुम जो परमेश्वर से डरते हो, तुम्हारे पास इस उद्धार का वचन भेजा गया है।

**Acts 13:27**

<sup>27</sup> क्योंकि यस्तशलेम के रहनेवालों और उनके सरदारों ने, न उसे पहचाना, और न भविष्यद्वक्ताओं की बातें समझी; जो हर सब्त के दिन पढ़ी जाती हैं, इसलिए उसे दोषी ठहराकर उनको पूरा किया।

**Acts 13:28**

<sup>28</sup> उन्होंने मार डालने के योग्य कोई दोष उसमें न पाया, फिर भी पिलातुस से विनती की, कि वह मार डाला जाए।

**Acts 13:29**

<sup>29</sup> और जब उन्होंने उसके विषय में लिखी हुई सब बातें पूरी की, तो उसे क्रूस पर से उतार कर कब्र में रखा।

**Acts 13:30**

<sup>30</sup> परन्तु परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया,

**Acts 13:31**

<sup>31</sup> और वह उन्हें जो उसके साथ गलील से यरूशलेम आए थे, बहुत दिनों तक दिखाई देता रहा; लोगों के सामने अब वे ही उसके गवाह हैं।

**Acts 13:32**

<sup>32</sup> और हम तुम्हें उस प्रतिज्ञा के विषय में जो पूर्वजों से की गई थी, यह सुसमाचार सुनाते हैं,

**Acts 13:33**

<sup>33</sup> कि परमेश्वर ने यीशु को जिलाकर, वही प्रतिज्ञा हमारी सन्तान के लिये पूरी की; जैसा दूसरे भजन में भी लिखा है, 'तू मेरा पुत्र है; आज मैं ही ने तुझे जन्माया है।'

**Acts 13:34**

<sup>34</sup> और उसके इस रीति से मरे हुओं में से जिलाने के विषय में भी, कि वह कभी न सड़े, उसने यह कहा है, 'मैं दाऊद पर की पवित्र और अटल कृपा तुम पर करूँगा।'

**Acts 13:35**

<sup>35</sup> इसलिए उसने एक और भजन में भी कहा है, 'तू अपने पवित्र जन को सड़ने न देगा।'

**Acts 13:36**

<sup>36</sup> "क्योंकि दाऊद तो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार अपने समय में सेवा करके सो गया, और अपने पूर्वजों में जा मिला, और सड़ भी गया।

**Acts 13:37**

<sup>37</sup> परन्तु जिसको परमेश्वर ने जिलाया, वह सड़ने नहीं पाया।

**Acts 13:38**

<sup>38</sup> इसलिए, हे भाइयों; तुम जान लो कि यीशु के द्वारा पापों की क्षमा का समाचार तुम्हें दिया जाता है।

**Acts 13:39**

<sup>39</sup> और जिन बातों से तुम मूसा की व्यवस्था के द्वारा निर्दोष नहीं ठहर सकते थे, उन्हीं सबसे हर एक विश्वास करनेवाला उसके द्वारा निर्दोष ठहरता है।

**Acts 13:40**

<sup>40</sup> इसलिए चौकस रहो, ऐसा न हो, कि जो भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तक में लिखित है, तुम पर भी आ पड़े:

**Acts 13:41**

<sup>41</sup> 'हे निन्दा करनेवालों, देखो, और चकित हो, और मिट जाओ; क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में एक काम करता हूँ; ऐसा काम, कि यदि कोई तुम से उसकी चर्चा करे, तो तुम कभी विश्वास न करोगे।'"

**Acts 13:42**

<sup>42</sup> उनके बाहर निकलते समय लोग उनसे विनती करने लगे, कि अगले सब्त के दिन हमें ये बातें फिर सुनाई जाएँ।

**Acts 13:43**

<sup>43</sup> और जब आराधनालय उठ गई तो यहूदियों और यहूदी मत में आए हुए भक्तों में से बहुत से पौलुस और बरनबास के पीछे हो लिए; और उन्होंने उनसे बातें करके समझाया, कि परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहो।

**Acts 13:44**

<sup>44</sup> अगले सब्त के दिन नगर के प्रायः सब लोग परमेश्वर का वचन सुनने को इकट्ठे हो गए।

**Acts 13:45**

<sup>45</sup> परन्तु यहूदी भीड़ को देखकर ईर्ष्या से भर गए, और निन्दा करते हुए पौलुस की बातों के विरोध में बोलने लगे।

**Acts 13:46**

<sup>46</sup> तब पौलुस और बरनबास ने निडर होकर कहा, “अवश्य था, कि परमेश्वर का वचन पहले तुम्हें सुनाया जाता; परन्तु जबकि तुम उसे दूर करते हो, और अपने को अनन्त जीवन के योग्य नहीं ठहराते, तो अब, हम अन्यजातियों की ओर फिरते हैं।

**Acts 13:47**

<sup>47</sup> क्योंकि प्रभु ने हमें यह आज्ञा दी है, ‘मैंने तुझे अन्यजातियों के लिये ज्योति ठहराया है, ताकि तू पृथ्वी की छोर तक उद्धार का द्वार हो।’”

**Acts 13:48**

<sup>48</sup> यह सुनकर अन्यजाति आनन्दित हुए, और परमेश्वर के वचन की बड़ाई करने लगे, और जितने अनन्त जीवन के लिये ठहराए गए थे, उन्होंने विश्वास किया।

**Acts 13:49**

<sup>49</sup> तब प्रभु का वचन उस सारे देश में फैलने लगा।

**Acts 13:50**

<sup>50</sup> परन्तु यहूदियों ने भक्त और कुलीन स्त्रियों को और नगर के प्रमुख लोगों को भड़काया, और पौलुस और बरनबास पर उपद्रव करवाकर उन्हें अपनी सीमा से बाहर निकाल दिया।

**Acts 13:51**

<sup>51</sup> तब वे उनके सामने अपने पाँवों की धूल झाड़कर इकुनियुम को चले गए।

**Acts 13:52**

<sup>52</sup> और चेले आनन्द से और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते रहे।

**Acts 14:1**

<sup>1</sup> इकुनियुम में ऐसा हुआ कि पौलुस और बरनबास यहूदियों की आराधनालय में साथ-साथ गए, और ऐसी बातें की, कि यहूदियों और यूनानियों दोनों में से बहुतों ने विश्वास किया।

**Acts 14:2**

<sup>2</sup> परन्तु विश्वास न करनेवाले यहूदियों ने अन्यजातियों के मन भाइयों के विरोध में भड़काए, और कटुता उत्पन्न कर दी।

**Acts 14:3**

<sup>3</sup> और वे बहुत दिन तक वहाँ रहे, और प्रभु के भरोसे पर साहस के साथ बातें करते थे: और वह उनके हाथों से चिन्ह और अद्भुत काम करवाकर अपने अनुग्रह के वचन पर गवाही देता था।

**Acts 14:4**

<sup>4</sup> परन्तु नगर के लोगों में फूट पड़ गई थी; इससे कितने तो यहूदियों की ओर, और कितने प्रेरितों की ओर हो गए।

**Acts 14:5**

<sup>5</sup> परन्तु जब अन्यजाति और यहूदी उनका अपमान और उन्हें पथराव करने के लिये अपने सरदारों समेत उन पर दौड़े।

**Acts 14:6**

<sup>6</sup> तो वे इस बात को जान गए, और लुकाउनिया के लुस्ता और दिरबे नगरों में, और आस-पास के प्रदेशों में भाग गए।

**Acts 14:7**

<sup>7</sup> और वहाँ सुसमाचार सुनाने लगे।

**Acts 14:8**

<sup>8</sup> लुस्ता में एक मनुष्य बैठा था, जो पाँवों का निर्बल था। वह जन्म ही से लँगड़ा था, और कभी न चला था।

**Acts 14:9**

<sup>9</sup> वह पौलुस को बातें करते सुन रहा था और पौलुस ने उसकी ओर टकटकी लगाकर देखा कि इसको चंगा हो जाने का विश्वास है।

**Acts 14:10**

<sup>10</sup> और ऊँचे शब्द से कहा, “अपने पाँवों के बल सीधा खड़ा हो!” तब वह उछलकर चलने फिरने लगा।

**Acts 14:11**

<sup>11</sup> लोगों ने पौलुस का यह काम देखकर लुकाउनिया भाषा में ऊँचे शब्द से कहा, “देवता मनुष्यों के रूप में होकर हमारे पास उतर आए हैं।”

**Acts 14:12**

<sup>12</sup> और उन्होंने बरनबास को ज्यूस, और पौलुस को हिर्मेस कहा क्योंकि वह बातें करने में मुख्य था।

**Acts 14:13**

<sup>13</sup> और ज्यूस के उस मन्दिर का पुजारी जो उनके नगर के सामने था, बैल और फूलों के हार फाटकों पर लाकर लोगों के साथ बलिदान करना चाहता था।

**Acts 14:14**

<sup>14</sup> परन्तु बरनबास और पौलुस प्रेरितों ने जब सुना, तो अपने कपड़े फाड़े, और भीड़ की ओर लपक गए, और पुकारकर कहने लगे,

**Acts 14:15**

<sup>15</sup> “हे लोगों, तुम क्या करते हो? हम भी तो तुम्हारे समान दुःख-सुख भोगी मनुष्य हैं, और तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं, कि तुम इन व्यर्थ वस्तुओं से अलग होकर जीविते परमेश्वर की ओर

फिरो, जिसने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है बनाया।

**Acts 14:16**

<sup>16</sup> उसने बीते समयों में सब जातियों को अपने-अपने मार्गों में चलने दिया।

**Acts 14:17**

<sup>17</sup> तो भी उसने अपने आपको बे-गवाह न छोड़ा; किन्तु वह भलाई करता रहा, और आकाश से वर्षा और फलवन्त ऋतु देकर तुम्हारे मन को भोजन और आनन्द से भरता रहा।”

**Acts 14:18**

<sup>18</sup> यह कहकर भी उन्होंने लोगों को बड़ी कठिनाई से रोका कि उनके लिये बलिदान न करें।

**Acts 14:19**

<sup>19</sup> परन्तु कितने यहूदियों ने अन्ताकिया और इकुनियुम से आकर लोगों को अपनी ओर कर लिया, और पौलुस पर पथराव किया, और मरा समझकर उसे नगर के बाहर घसीट ले गए।

**Acts 14:20**

<sup>20</sup> पर जब चेले उसकी चारों ओर आ खड़े हुए, तो वह उठकर नगर में गया और दूसरे दिन बरनबास के साथ दिरबे को चला गया।

**Acts 14:21**

<sup>21</sup> और वे उस नगर के लोगों को सुसमाचार सुनाकर, और बहुत से चेले बनाकर, लुस्ता और इकुनियुम और अन्ताकिया को लौट आए।

**Acts 14:22**

<sup>22</sup> और चेलों के मन को स्थिर करते रहे और यह उपदेश देते थे कि विश्वास में बने रहो; और यह कहते थे, “हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा।”

**Acts 14:23**

<sup>23</sup> और उन्होंने हर एक कलीसिया में उनके लिये प्राचीन ठहराए, और उपवास सहित प्रार्थना करके उन्हें प्रभु के हाथ सौंपा जिस पर उन्होंने विश्वास किया था।

**Acts 14:24**

<sup>24</sup> और पिसिदिया से होते हुए वे पंफूलिया में पहुँचे;

**Acts 14:25**

<sup>25</sup> और पिरगा में वचन सुनाकर अत्तिलिया में आए।

**Acts 14:26**

<sup>26</sup> और वहाँ से जहाज द्वारा अन्ताकिया गये, जहाँ वे उस काम के लिये जो उन्होंने पूरा किया था परमेश्वर के अनुग्रह में सौंपे गए।

**Acts 14:27**

<sup>27</sup> वहाँ पहुँचकर, उन्होंने कलीसिया इकट्ठी की और बताया, कि परमेश्वर ने हमारे साथ होकर कैसे बड़े-बड़े काम किए! और अन्यजातियों के लिये विश्वास का द्वार खोल दिया।

**Acts 14:28**

<sup>28</sup> और वे चेलों के साथ बहुत दिन तक रहे।

**Acts 15:1**

<sup>1</sup> किर कुछ लोग यहूदिया से आकर भाइयों को सिखाने लगे: “यदि मूसा की रीति पर तुम्हारा खतना न हो तो तुम उद्धार नहीं पा सकते।”

**Acts 15:2**

<sup>2</sup> जब पौलुस और बरनबास का उनसे बहुत मतभेद और विवाद हुआ तो यह ठहराया गया, कि पौलुस और बरनबास, और उनमें से कुछ व्यक्ति इस बात के विषय में प्रेरितों और प्राचीनों के पास यस्तशलेम को जाएँ।

**Acts 15:3**

<sup>3</sup> अतः कलीसिया ने उन्हें कुछ दूर तक पहुँचाया; और वे फीनीके और सामरिया से होते हुए अन्यजातियों के मन फिराने का समाचार सुनाते गए, और सब भाइयों को बहुत आनंदित किया।

**Acts 15:4**

<sup>4</sup> जब वे यस्तशलेम में पहुँचे, तो कलीसिया और प्रेरित और प्राचीन उनसे आनन्द के साथ मिले, और उन्होंने बताया कि परमेश्वर ने उनके साथ होकर कैसे-कैसे काम किए थे।

**Acts 15:5**

<sup>5</sup> परन्तु फरीसियों के पथ में से जिन्होंने विश्वास किया था, उनमें से कितनों ने उठकर कहा, “उन्हें खतना कराने और मूसा की व्यवस्था को मानने की आज्ञा देनी चाहिए।”

**Acts 15:6**

<sup>6</sup> तब प्रेरित और प्राचीन इस बात के विषय में विचार करने के लिये इकट्ठे हुए।

**Acts 15:7**

<sup>7</sup> तब पतरस ने बहुत वाद-विवाद हो जाने के बाद खड़े होकर उनसे कहा, “हे भाइयों, तुम जानते हो, कि बहुत दिन हुए, कि परमेश्वर ने तुम में से मुझे चुन लिया, कि मेरे मुँह से अन्यजातियाँ सुसमाचार का वचन सुनकर विश्वास करें।

**Acts 15:8**

<sup>8</sup> और मन के जाँचने वाले परमेश्वर ने उनको भी हमारे समान पवित्र आत्मा देकर उनकी गवाही दी;

**Acts 15:9**

<sup>9</sup> और विश्वास के द्वारा उनके मन शुद्ध करके हम में और उनमें कुछ भेद न रखा।

**Acts 15:10**

<sup>10</sup> तो अब तुम क्यों परमेश्वर की परीक्षा करते हो, कि चेलों की गर्दन पर ऐसा जूँआ रखो, जिसे न हमारे पूर्वज उठा सकते थे और न हम उठा सकते हैं।

**Acts 15:11**

<sup>11</sup> हाँ, हमारा यह तो निश्चय है कि जिस रीति से वे प्रभु यीशु के अनुग्रह से उद्धार पाएँगे; उसी रीति से हम भी पाएँगे।”

**Acts 15:12**

<sup>12</sup> तब सारी सभा चुपचाप होकर बरनबास और पौलुस की सुनने लगी, कि परमेश्वर ने उनके द्वारा अन्यजातियों में कैसे-कैसे बड़े चिन्ह, और अद्भुत काम दिखाए।

**Acts 15:13**

<sup>13</sup> जब वे चुप हुए, तो याकूब कहने लगा, “हे भाइयों, मेरी सुनो।

**Acts 15:14**

<sup>14</sup> शमैन ने बताया, कि परमेश्वर ने पहले-पहल अन्यजातियों पर कैसी कृपादृष्टि की, कि उनमें से अपने नाम के लिये एक लोग बना ले।

**Acts 15:15**

<sup>15</sup> और इससे भविष्यद्वक्ताओं की बातें भी मिलती हैं, जैसा लिखा है,

**Acts 15:16**

<sup>16</sup> ‘इसके बाद मैं फिर आकर दाऊद का गिरा हुआ डेरा उठाऊँगा, और उसके खंडहरों को फिर बनाऊँगा, और उसे खड़ा करूँगा,

**Acts 15:17**

<sup>17</sup> इसलिए कि शेष मनुष्य, अर्थात् सब अन्यजाति जो मेरे नाम के कहलाते हैं, प्रभु को छूँदें।

**Acts 15:18**

<sup>18</sup> यह वही प्रभु कहता है जो जगत की उत्पत्ति से इन बातों का समाचार देता आया है।’

**Acts 15:19**

<sup>19</sup> “इसलिए मेरा विचार यह है, कि अन्यजातियों में से जो लोग परमेश्वर की ओर फिरते हैं, हम उन्हें दुःख न दें;

**Acts 15:20**

<sup>20</sup> परन्तु उन्हें लिख भेजें, कि वे मूरतों की अशुद्धताओं और व्यभिचार और गला घोंटे हुओं के माँस से और लहू से परे रहें।

**Acts 15:21**

<sup>21</sup> क्योंकि पुराने समय से नगर-नगर मूसा की व्यवस्था के प्रचार करनेवाले होते चले आए हैं, और वह हर सब्त के दिन आराधनालय में पढ़ी जाती है।”

**Acts 15:22**

<sup>22</sup> तब सारी कलीसिया सहित प्रेरितों और प्राचीनों को अच्छा लगा, कि अपने में से कुछ मनुष्यों को चुनें, अर्थात् यहूदा, जो बरसब्बास कहलाता है, और सीलास को जो भाइयों में मुखिया थे; और उन्हें पौलुस और बरनबास के साथ अन्ताकिया को भेजें।

**Acts 15:23**

<sup>23</sup> और उन्होंने उनके हाथ यह लिख भेजा: “अन्ताकिया और सीरिया और किलिकिया के रहनेवाले भाइयों को जो अन्यजातियों में से हैं, प्रेरितों और प्राचीन भाइयों का नमस्कार!

**Acts 15:24**

<sup>24</sup> हमने सुना है, कि हम में से कुछ ने वहाँ जाकर, तुम्हें अपनी बातों से घबरा दिया; और तुम्हारे मन उलट दिए हैं परन्तु हमने उनको आज्ञा नहीं दी थी।

**Acts 15:25**

<sup>25</sup> इसलिए हमने एक चित्त होकर ठीक समझा, कि चुने हुए मनुष्यों को अपने प्रिय बरनबास और पौलुस के साथ तुम्हारे पास भेजें।

**Acts 15:26**

<sup>26</sup> ये तो ऐसे मनुष्य हैं, जिन्होंने अपने प्राण हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम के लिये जोखिम में डाले हैं।

**Acts 15:27**

<sup>27</sup> और हमने यहदा और सीलास को भेजा है, जो अपने मुँह से भी ये बातें कह देंगे।

**Acts 15:28**

<sup>28</sup> पवित्र आत्मा को, और हमको भी ठीक जान पड़ा कि इन आवश्यक बातों को छोड़; तुम पर और बोझ न डालें;

**Acts 15:29**

<sup>29</sup> कि तुम मूरतों के बलि किए हुओं से, और लहू से, और गला घोटे हुओं के माँस से, और व्यभिचार से दूर रहो। इनसे दूर रहो तो तुम्हारा भला होगा। आगे शुभकामना।”

**Acts 15:30**

<sup>30</sup> फिर वे विदा होकर अन्ताकिया में पहुँचे, और सभा को इकट्ठी करके उन्हें पत्री दे दी।

**Acts 15:31**

<sup>31</sup> और वे पढ़कर उस उपदेश की बात से अति आनन्दित हुए।

**Acts 15:32**

<sup>32</sup> और यहूदा और सीलास ने जो आप भी भविष्यद्वक्ता थे, बहुत बातों से भाइयों को उपदेश देकर स्पिर किया।

**Acts 15:33**

<sup>33</sup> वे कुछ दिन रहकर भाइयों से शान्ति के साथ विदा हुए कि अपने भेजनेवालों के पास जाएँ।

**Acts 15:34**

<sup>34</sup> (परन्तु सीलास को वहाँ रहना अच्छा लगा।)

**Acts 15:35**

<sup>35</sup> और पौलुस और बरनबास अन्ताकिया में रह गए; और अन्य बहुत से लोगों के साथ प्रभु के वचन का उपदेश करते और सुसमाचार सुनाते रहे।

**Acts 15:36**

<sup>36</sup> कुछ दिन बाद पौलुस ने बरनबास से कहा, “जिन-जिन नगरों में हमने प्रभु का वचन सुनाया था, आओ, फिर उनमें चलकर अपने भाइयों को देखें कि कैसे हैं।”

**Acts 15:37**

<sup>37</sup> तब बरनबास ने यूहन्ना को जो मरकुस कहलाता है, साथ लेने का विचार किया।

**Acts 15:38**

<sup>38</sup> परन्तु पौलुस ने उसे जो पंफूलिया में उनसे अलग हो गया था, और काम पर उनके साथ न गया, साथ ले जाना अच्छा न समझा।

**Acts 15:39**

<sup>39</sup> अतः ऐसा विवाद उठा कि वे एक दूसरे से अलग हो गए; और बरनबास, मरकुस को लेकर जहाज से साइप्रस को चला गया।

**Acts 15:40**

<sup>40</sup> परन्तु पौलुस ने सीलास को चुन लिया, और भाइयों से परमेश्वर के अनुग्रह में सौंपा जाकर वहाँ से चला गया।

**Acts 15:41**

<sup>41</sup> और कलीसियाओं को स्थिर करता हुआ, सीरिया और किलिकिया से होते हुए निकला।

**Acts 16:1**

<sup>1</sup> फिर वह दिरबे और लुस्त्रा में भी गया, और वहाँ तीमुथियुस नामक एक चेला था। उसकी माँ यहूदी विश्वासी थी, परन्तु उसका पिता यूनानी था।

**Acts 16:2**

<sup>2</sup> वह लुस्ता और इकुनियुम के भाइयों में सुनाम था।

**Acts 16:3**

<sup>3</sup> पौलुस की इच्छा थी कि वह उसके साथ चले; और जो यहूदी लोग उन जगहों में थे उनके कारण उसे लेकर उसका खतना किया, क्योंकि वे सब जानते थे, कि उसका पिता यूनानी था।

**Acts 16:4**

<sup>4</sup> और नगर-नगर जाते हुए वे उन विधियों को जो यरूशलेम के प्रेरितों और प्राचीनों ने ठहराई थीं, मानने के लिये उन्हें पहुँचाते जाते थे।

**Acts 16:5**

<sup>5</sup> इस प्रकार कलीसियाएँ विश्वास में स्थिर होती गई और गिनती में प्रतिदिन बढ़ती गई।

**Acts 16:6**

<sup>6</sup> और वे फ्रूटिया और गलातिया प्रदेशों में से होकर गए, क्योंकि पवित्र आत्मा ने उन्हें आसिया में वचन सुनाने से मना किया।

**Acts 16:7**

<sup>7</sup> और उन्होंने मूसिया के निकट पहुँचकर, बितूनिया में जाना चाहा; परन्तु यीशु के आत्मा ने उन्हें जाने न दिया।

**Acts 16:8**

<sup>8</sup> अतः वे मूसिया से होकर त्रोआस में आए।

**Acts 16:9**

<sup>9</sup> वहाँ पौलुस ने रात को एक दर्शन देखा कि एक मकिदुनी पुरुष खड़ा हुआ, उससे विनती करके कहता है, “पार उत्तरकर मकिदुनिया में आ, और हमारी सहायता कर।”

**Acts 16:10**

<sup>10</sup> उसके यह दर्शन देखते ही हमने तुरन्त मकिदुनिया जाना चाहा, यह समझकर कि परमेश्वर ने हमें उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिये बुलाया है।

**Acts 16:11**

<sup>11</sup> इसलिए त्रोआस से जहाज खोलकर हम सीधे सुमात्राके और दूसरे दिन नियापुलिस में आए।

**Acts 16:12**

<sup>12</sup> वहाँ से हम फिलिप्पी में पहुँचे, जो मकिदुनिया प्रान्त का मुख्य नगर, और रोमियों की बस्ती है; और हम उस नगर में कुछ दिन तक रहे।

**Acts 16:13**

<sup>13</sup> सब्के दिन हम नगर के फाटक के बाहर नदी के किनारे यह समझकर गए कि वहाँ प्रार्थना करने का स्थान होगा; और बैठकर उन स्त्रियों से जो इकट्ठी हुई थीं, बातें करने लगे।

**Acts 16:14**

<sup>14</sup> और लुदिया नाम थुआतीरा नगर की बैंगनी कपड़े बेचनेवाली एक भक्त स्त्री सुन रही थी, और प्रभु ने उसका मन खोला, ताकि पौलुस की बातों पर ध्यान लगाए।

**Acts 16:15**

<sup>15</sup> और जब उसने अपने घराने समेत बपतिस्मा लिया, तो उसने विनती की, “यदि तुम मुझे प्रभु की विश्वासिनी समझते हो, तो चलकर मेरे घर में रहो,” और वह हमें मनाकर ले गई।

**Acts 16:16**

<sup>16</sup> जब हम प्रार्थना करने की जगह जा रहे थे, तो हमें एक दासी मिली, जिसमें भावी कहनेवाली आत्मा थी; और भावी कहने से अपने स्वामियों के लिये बहुत कुछ कमा लाती थी।

**Acts 16:17**

<sup>17</sup> वह पौलुस के और हमारे पीछे आकर चिल्लाने लगी, “ये मनुष्य परमप्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो हमें उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं।”

**Acts 16:18**

<sup>18</sup> वह बहुत दिन तक ऐसा ही करती रही, परन्तु पौलुस परेशान हुआ, और मुड़कर उस आत्मा से कहा, “मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूँ, कि उसमें से निकल जा और वह उसी घड़ी निकल गई।”

**Acts 16:19**

<sup>19</sup> जब उसके स्वामियों ने देखा, कि हमारी कमाई की आशा जाती रही, तो पौलुस और सीलास को पकड़कर चौक में प्रधानों के पास खींच ले गए।

**Acts 16:20**

<sup>20</sup> और उन्हें फौजदारी के हाकिमों के पास ले जाकर कहा, “ये लोग जो यहूदी हैं, हमारे नगर में बड़ी हलचल मचा रहे हैं;

**Acts 16:21**

<sup>21</sup> और ऐसी रीतियाँ बता रहे हैं, जिन्हें ग्रहण करना या मानना हम रोमियों के लिये ठीक नहीं।”

**Acts 16:22**

<sup>22</sup> तब भीड़ के लोग उनके विरोध में इकट्ठे होकर चढ़ आए, और हाकिमों ने उनके कपड़े फाड़कर उतार डाले, और उन्हें बेत मारने की आज्ञा दी।

**Acts 16:23**

<sup>23</sup> और बहुत बेत लगवाकर उन्होंने उन्हें बन्दीगृह में डाल दिया और दरोगा को आज्ञा दी कि उन्हें सावधानी से रखे।

**Acts 16:24**

<sup>24</sup> उसने ऐसी आज्ञा पाकर उन्हें भीतर की कोठरी में रखा और उनके पाँव काठ में ठोंक दिए।

**Acts 16:25**

<sup>25</sup> आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और कैदी उनकी सुन रहे थे।

**Acts 16:26**

<sup>26</sup> कि इतने में अचानक एक बड़ा भूकम्प हुआ, यहाँ तक कि बन्दीगृह की नींव हिल गई, और तुरन्त सब द्वार खुल गए; और सब के बन्धन खुल गए।

**Acts 16:27**

<sup>27</sup> और दरोगा जाग उठा, और बन्दीगृह के द्वार खुले देखकर समझा कि कैदी भाग गए, अतः उसने तलवार खींचकर अपने आपको मार डालना चाहा।

**Acts 16:28**

<sup>28</sup> परन्तु पौलुस ने ऊँचे शब्द से पुकारकर कहा, “अपने आपको कुछ हानि न पहुँचा, क्योंकि हम सब यहीं हैं।”

**Acts 16:29**

<sup>29</sup> तब वह दिया मँगवाकर भीतर आया और काँपता हुआ पौलुस और सीलास के आगे गिरा;

**Acts 16:30**

<sup>30</sup> और उन्हें बाहर लाकर कहा, “हे सज्जनों, उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूँ?”

**Acts 16:31**

<sup>31</sup> उन्होंने कहा, “प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा।”

**Acts 16:32**

<sup>32</sup> और उन्होंने उसको और उसके सारे घर के लोगों को प्रभु का वचन सुनाया।

**Acts 16:33**

<sup>33</sup> और रात को उसी घड़ी उसने उन्हें ले जाकर उनके घाव धोए, और उसने अपने सब लोगों समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया।

**Acts 16:34**

<sup>34</sup> और उसने उन्हें अपने घर में ले जाकर, उनके आगे भोजन रखा और सारे घराने समेत परमेश्वर पर विश्वास करके आनन्द किया।

**Acts 16:35**

<sup>35</sup> जब दिन हुआ तब हाकिमों ने सिपाहियों के हाथ कहला भेजा कि उन मनुष्यों को छोड़ दो।

**Acts 16:36**

<sup>36</sup> दरोगा ने ये बातें पौलुस से कह सुनाई, “हाकिमों ने तुम्हें छोड़ देने की आज्ञा भेज दी है, इसलिए अब निकलकर कुशल से चले जाओ।”

**Acts 16:37**

<sup>37</sup> परन्तु पौलुस ने उससे कहा, “उन्होंने हमें जो रोमी मनुष्य है, दोषी ठहराए बिना लोगों के सामने मारा और बन्दीगृह में डाला, और अब क्या चुपके से निकाल देते हैं? ऐसा नहीं, परन्तु वे आप आकर हमें बाहर ले जाएँ।”

**Acts 16:38**

<sup>38</sup> सिपाहियों ने ये बातें हाकिमों से कह दीं, और वे यह सुनकर कि रोमी हैं, डर गए,

**Acts 16:39**

<sup>39</sup> और आकर उन्हें मनाया, और बाहर ले जाकर विनती की, कि नगर से चले जाएँ।

**Acts 16:40**

<sup>40</sup> वे बन्दीगृह से निकलकर लुटिया के यहाँ गए, और भाइयों से भेंट करके उन्हें शान्ति दी, और चले गए।

**Acts 17:1**

<sup>1</sup> फिर वे अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीके में आए, जहाँ यहूदियों का एक आराधनालय था।

**Acts 17:2**

<sup>2</sup> और पौलुस अपनी रीति के अनुसार उनके पास गया, और तीन सब्त के दिन पवित्रशास्त्रों से उनके साथ गाद-विवाद किया;

**Acts 17:3**

<sup>3</sup> और उनका अर्थ खोल-खोलकर समझाता था कि मसीह का दुःख उठाना, और मरे हुओं में से जी उठाना, अवश्य था; “यही यीशु जिसकी मैं तुम्हें कथा सुनाता हूँ, मसीह है।”

**Acts 17:4**

<sup>4</sup> उनमें से कितनों ने, और भक्त यूनानियों में से बहुतों ने और बहुत सारी प्रमुख स्त्रियों ने मान लिया, और पौलुस और सीलास के साथ मिल गए।

**Acts 17:5**

<sup>5</sup> परन्तु यहूदियों ने ईर्ष्या से भरकर बाजार से लोगों में से कई दुष्ट मनुष्यों को अपने साथ में लिया, और भीड़ लगाकर नगर में हुल्लड़ मचाने लगे, और यासोन के घर पर चढ़ाई करके उन्हें लोगों के सामने लाना चाहा।

**Acts 17:6**

<sup>6</sup> और उन्हें न पाकर, वे यह चिल्लाते हुए यासोन और कुछ भाइयों को नगर के हाकिमों के सामने खींच लाए, ‘ये लोग जिन्होंने जगत को उलटा पुलटा कर दिया है, यहाँ भी आए हैं।

**Acts 17:7**

<sup>7</sup> और यासोन ने उन्हें अपने यहाँ ठहराया है, और ये सब के सब यह कहते हैं कि यीशु राजा है, और कैसर की आज्ञाओं का विरोध करते हैं।’

**Acts 17:8**

<sup>8</sup> जब भीड़ और नगर के हाकिमों ने ये बातें सुनीं, तो वे परेशान हो गये।

**Acts 17:9**

<sup>9</sup> और उन्होंने यासोन और बाकी लोगों को जमानत पर छोड़ दिया।

**Acts 17:10**

<sup>10</sup> भाइयों ने तुरन्त रात ही रात पौलुस और सीलास को बिरीया में भेज दिया, और वे वहाँ पहुँचकर यहूदियों के आराधनालय में गए।

**Acts 17:11**

<sup>11</sup> ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्रशास्त्रों में दृढ़ते रहे कि ये बातें ऐसी ही हैं कि नहीं।

**Acts 17:12**

<sup>12</sup> इसलिए उनमें से बहुतों ने, और यूनानी कुलीन स्थियों में से और पुरुषों में से बहुतों ने विश्वास किया।

**Acts 17:13**

<sup>13</sup> किन्तु जब थिस्सलुनीके के यहूदी जान गए कि पौलुस बिरीया में भी परमेश्वर का वचन सुनाता है, तो वहाँ भी आकर लोगों को भड़काने और हलचल मचाने लगे।

**Acts 17:14**

<sup>14</sup> तब भाइयों ने तुरन्त पौलुस को विदा किया कि समुद्र के किनारे चला जाए; परन्तु सीलास और तीमुथियुस वहाँ रह गए।

**Acts 17:15**

<sup>15</sup> पौलुस के पहुँचाने वाले उसे एथेंस तक ले गए, और सीलास और तीमुथियुस के लिये यह निर्देश लेकर विदा हुए कि मेरे पास अति शीघ्र आओ।

**Acts 17:16**

<sup>16</sup> जब पौलुस एथेंस में उनकी प्रतीक्षा कर रहा था, तो नगर को मूरतों से भरा हुआ देखकर उसका जी जल उठा।

**Acts 17:17**

<sup>17</sup> अतः वह आराधनालय में यहूदियों और भक्तों से और चौक में जो लोग मिलते थे, उनसे हर दिन वाद-विवाद किया करता था।

**Acts 17:18**

<sup>18</sup> तब इपिकूरी और स्टोईकी दार्शनिकों में से कुछ उससे तर्क करने लगे, और कुछ ने कहा, “यह बकवादी क्या कहना चाहता है?” परन्तु दूसरों ने कहा, “वह अन्य देवताओं का प्रचारक मालूम पड़ता है,” क्योंकि वह यीशु का और पुनरुत्थान का सुसमाचार सुनाता था।

**Acts 17:19**

<sup>19</sup> तब वे उसे अपने साथ अरियुपगुस पर ले गए और पूछा, “क्या हम जान सकते हैं, कि यह नया मत जो तू सुनाता है, क्या है?

**Acts 17:20**

<sup>20</sup> क्योंकि तू अनोखी बातें हमें सुनाता है, इसलिए हम जानना चाहते हैं कि इनका अर्थ क्या है?”

**Acts 17:21**

<sup>21</sup> (इसलिए कि सब एथेंस वासी और परदेशी जो वहाँ रहते थे नई-नई बातें कहने और सुनने के सिवाय और किसी काम में समय नहीं बिताते थे।)

**Acts 17:22**

<sup>22</sup> तब पौलुस ने अरियुपगुस के बीच में खड़ा होकर कहा, ‘हे एथेंस के लोगों, मैं देखता हूँ कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े माननेवाले हो।

**Acts 17:23**

<sup>23</sup> क्योंकि मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिस पर लिखा था, ‘अनजाने ईश्वर के लिये।’ इसलिए जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूँ।

**Acts 17:24**

<sup>24</sup> जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता।

**Acts 17:25**

<sup>25</sup> न किसी वस्तु की आवश्यकता के कारण मनुष्यों के हाथों की सेवा लेता है, क्योंकि वह तो आप ही सब को जीवन और श्वास और सब कुछ देता है।

**Acts 17:26**

<sup>26</sup> उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं; और उनके ठहराए हुए समय और निवास के सीमाओं को इसलिए बाँधा है,

**Acts 17:27**

<sup>27</sup> कि वे परमेश्वर को दृ়ঢ়ে, और शायद वे उसके पास पहुँच सके, और वास्तव में, वह हम में से किसी से दूर नहीं है।

**Acts 17:28**

<sup>28</sup> क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते फिरते, और स्थिर रहते हैं; जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, ‘हम तो उसी के वंश भी हैं।’

**Acts 17:29**

<sup>29</sup> अतः परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं कि ईश्वरत्व, सोने या चाँदी या पत्थर के समान है, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हों।

**Acts 17:30**

<sup>30</sup> इसलिए परमेश्वर ने अज्ञानता के समयों पर ध्यान नहीं दिया, पर अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है।

**Acts 17:31**

<sup>31</sup> क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धार्मिकता से जगत का च्याप करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।’

**Acts 17:32**

<sup>32</sup> मरे हुओं के पुनरुत्थान की बात सुनकर कितने तो उपहास करने लगे, और कितनों ने कहा, “यह बात हम तुझ से फिर कभी सुनेंगे।”

**Acts 17:33**

<sup>33</sup> इस पर पौलुस उनके बीच में से चला गया।

**Acts 17:34**

<sup>34</sup> परन्तु कुछ मनुष्य उसके साथ मिल गए, और विश्वास किया; जिनमें दियुनुसियुस जो अरियुपगुस का सदस्य था, और दमरिस नामक एक स्त्री थी, और उनके साथ और भी कितने लोग थे।

**Acts 18:1**

<sup>1</sup> इसके बाद पौलुस एथेंस को छोड़कर कुरिन्थुस में आया।

**Acts 18:2**

<sup>2</sup> और वहाँ अकिला नामक एक यहूदी मिला, जिसका जन्म पुन्तुस में हुआ था; और अपनी पत्नी प्रिस्किल्ला के साथ इतालिया से हाल ही में आया था, क्योंकि क्लौदियुस ने सब यहूदियों को रोम से निकल जाने की आज्ञा दी थी, इसलिए वह उनके यहाँ गया।

**Acts 18:3**

<sup>3</sup> और उसका और उनका एक ही व्यापार था; इसलिए वह उनके साथ रहा, और वे काम करने लगे, और उनका व्यापार तम्बू बनाने का था।

**Acts 18:4**

<sup>4</sup> और वह हर एक सब्त के दिन आराधनालय में वाद-विवाद करके यहूदियों और यूनानियों को भी समझाता था।

**Acts 18:5**

<sup>5</sup> जब सीलास और तीमुथियुस मकिटुनिया से आए, तो पौलुस वचन सुनाने की धुन में लगकर यहूदियों को गवाही देता था कि यीशु ही मसीह है।

**Acts 18:6**

<sup>6</sup> परन्तु जब वे विरोध और निन्दा करने लगे, तो उसने अपने कपड़े झाड़कर उनसे कहा, “तुम्हारा लहू तुम्हारी सिर पर रहे! मैं निर्दोष हूँ। अब से मैं अन्यजातियों के पास जाऊँगा।”

**Acts 18:7**

<sup>7</sup> और वहाँ से चलकर वह तीतुस यूस्तुस नामक परमेश्वर के एक भक्त के घर में आया, जिसका घर आराधनालय से लगा हुआ था।

**Acts 18:8**

<sup>8</sup> तब आराधनालय के सरदार क्रिस्पुस ने अपने सारे घराने समेत प्रभु पर विश्वास किया; और बहुत से कुरिन्थवासियों ने सुनकर विश्वास किया और बपतिस्मा लिया।

**Acts 18:9**

<sup>9</sup> और प्रभु ने रात को दर्शन के द्वारा पौलुस से कहा, “मत डर, वरन् कहे जा और चुप मत रह;

**Acts 18:10**

<sup>10</sup> क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ, और कोई तुझ पर चढ़ाई करके तेरी हानि न करेगा; क्योंकि इस नगर में मेरे बहुत से लोग हैं।”

**Acts 18:11**

<sup>11</sup> इसलिए वह उनमें परमेश्वर का वचन सिखाते हुए डेढ़ वर्ष तक रहा।

**Acts 18:12**

<sup>12</sup> जब गल्लियो अखाया देश का राज्यपाल था तो यहूदी लोग एका करके पौलुस पर चढ़ आए, और उसे न्याय आसन के सामने लाकर कहने लगे,

**Acts 18:13**

<sup>13</sup> “यह लोगों को समझाता है, कि परमेश्वर की उपासना ऐसी रीति से करें, जो व्यवस्था के विपरीत है।”

**Acts 18:14**

<sup>14</sup> जब पौलुस बोलने पर था, तो गल्लियो ने यहूदियों से कहा, “हे यहूदियों, यदि यह कुछ अन्याय या दुष्टता की बात होती तो उचित था कि मैं तुम्हारी सुनता।

**Acts 18:15**

<sup>15</sup> परन्तु यदि यह वाद-विवाद शब्दों, और नामों, और तुम्हारे यहाँ की व्यवस्था के विषय में है, तो तुम ही जानो; क्योंकि मैं इन बातों का न्यायी बनना नहीं चाहता।”

**Acts 18:16**

<sup>16</sup> और उसने उन्हें न्याय आसन के सामने से निकलवा दिया।

**Acts 18:17**

<sup>17</sup> तब सब लोगों ने आराधनालय के सरदार सोस्थिनेस को पकड़ के न्याय आसन के सामने मारा। परन्तु गल्लियो ने इन बातों की कुछ भी चिन्ता न की।

**Acts 18:18**

<sup>18</sup> अतः पौलुस बहुत दिन तक वहाँ रहा, फिर भाइयों से विदा होकर किंख्रिया में इसलिए सिर मुँड़ाया, क्योंकि उसने मन्त्र मानी थी और जहाज पर सीरिया को चल दिया और उसके साथ प्रिस्किल्ला और अकिला थे।

**Acts 18:19**

<sup>19</sup> और उसने इफिसुस में पहुँचकर उनको वहाँ छोड़ा, और आप ही आराधनालय में जाकर यहूदियों से विवाद करने लगा।

**Acts 18:20**

<sup>20</sup> जब उन्होंने उससे विनती की, “हमारे साथ और कुछ दिन रहा!” तो उसने स्वीकार न किया;

**Acts 18:21**

<sup>21</sup> परन्तु यह कहकर उनसे विदा हुआ, “यदि परमेश्वर चाहे तो मैं तुम्हारे पास फिर आऊँगा।” तब इफिसुस से जहाज खोलकर चल दिया;

**Acts 18:22**

<sup>22</sup> और कैसरिया में उतरकर (यरूशलेम को) गया और कलीसिया को नमस्कार करके अंत्ताकिया में आया।

**Acts 18:23**

<sup>23</sup> फिर कुछ दिन रहकर वहाँ से चला गया, और एक ओर से गलातिया और फ्रूगिया में सब चेलों को स्थिर करता फिरा।

**Acts 18:24**

<sup>24</sup> अपुल्लोस नामक एक यहूदी जिसका जन्म सिकन्दरिया में हुआ था, जो विद्वान पुरुष था और पवित्रशास्त्र को अच्छी तरह से जानता था इफिसुस में आया।

**Acts 18:25**

<sup>25</sup> उसने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी, और मन लगाकर यीशु के विषय में ठीक-ठीक सुनाता और सिखाता था, परन्तु वह केवल यूहन्ना के बपतिस्मा की बात जानता था।

**Acts 18:26**

<sup>26</sup> वह आराधनालय में निडर होकर बोलने लगा, पर प्रिस्किल्ला और अकिला उसकी बातें सुनकर, उसे अपने यहाँ ले गए और परमेश्वर का मार्ग उसको और भी स्पष्ट रूप से बताया।

**Acts 18:27**

<sup>27</sup> और जब उसने निश्चय किया कि पार उतरकर अखाया को जाए तो भाइयों ने उसे ढाढ़स देकर चेलों को लिखा कि वे उससे अच्छी तरह मिलें, और उसने पहुँचकर वहाँ उन लोगों की बड़ी सहायता की जिन्होंने अनुग्रह के कारण विश्वास किया था।

**Acts 18:28**

<sup>28</sup> अपुल्लोस ने अपनी शक्ति और कौशल के साथ यहूदियों को सार्वजनिक रूप से अभिभूत किया, पवित्रशास्त्र से प्रमाण दे देकर कि यीशु ही मसीह है।

**Acts 19:1**

<sup>1</sup> जब अपुल्लोस कुरिच्युस में था, तो पौलुस ऊपर के सारे देश से होकर इफिसुस में आया और वहाँ कुछ चेले मिले।

**Acts 19:2**

<sup>2</sup> उसने कहा, “क्या तुम ने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?” उन्होंने उससे कहा, “हमने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी।”

**Acts 19:3**

<sup>3</sup> उसने उनसे कहा, “तो फिर तुम ने किसका बपतिस्मा लिया?” उन्होंने कहा, “यूहन्ना का बपतिस्मा।”

**Acts 19:4**

<sup>4</sup> पौलुस ने कहा, “यूहन्ना ने यह कहकर मन फिराव का बपतिस्मा दिया, कि जो मेरे बाद आनेवाला है, उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करना।”

**Acts 19:5**

<sup>5</sup> यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा लिया।

**Acts 19:6**

<sup>6</sup> और जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो उन पर पवित्र आत्मा उत्तरा, और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे।

**Acts 19:7**

<sup>7</sup> ये सब लगभग बारह पुरुष थे।

**Acts 19:8**

<sup>8</sup> और वह आराधनालय में जाकर तीन महीने तक निडर होकर बोलता रहा, और परमेश्वर के राज्य के विषय में विवाद करता और समझाता रहा।

**Acts 19:9**

<sup>9</sup> परन्तु जब कुछ लोगों ने कठोर होकर उसकी नहीं मानी वरन् लोगों के सामने इस पंथ को बुरा कहने लगे, तो उसने उनको छोड़कर चेलों को अलग कर लिया, और प्रतिदिन तुरन्त्रस की पाठशाला में वाद-विवाद किया करता था।

**Acts 19:10**

<sup>10</sup> दो वर्ष तक यही होता रहा, यहाँ तक कि आसिया के रहनेवाले क्या यहूदी, क्या यूनानी सब ने प्रभु का वचन सुन लिया।

**Acts 19:11**

<sup>11</sup> और परमेश्वर पौलुस के हाथों से सामर्थ्य के अद्भुत काम दिखाता था।

**Acts 19:12**

<sup>12</sup> यहाँ तक कि रूमाल और अँगोछे उसकी देह से स्पर्श कराकर बीमारों पर डालते थे, और उनकी बीमारियाँ दूर हो जाती थीं; और दुष्टात्मा उनमें से निकल जाया करती थीं।

**Acts 19:13**

<sup>13</sup> परन्तु कुछ यहूदी जो झाड़ा फूँकी करते फिरते थे, यह करने लगे कि जिनमें दुष्टात्मा हों उन पर प्रभु यीशु का नाम यह कहकर फूँकने लगे, “जिस यीशु का प्रचार पौलुस करता है, मैं तुम्हें उसी की शपथ देता हूँ।”

**Acts 19:14**

<sup>14</sup> और स्किकवा नाम के एक यहूदी प्रधान याजक के सात पुत्र थे, जो ऐसा ही करते थे।

**Acts 19:15**

<sup>15</sup> पर दुष्टात्मा ने उत्तर दिया, “यीशु को मैं जानती हूँ, और पौलुस को भी पहचानती हूँ; परन्तु तुम कौन हो?”

**Acts 19:16**

<sup>16</sup> और उस मनुष्य ने जिसमें दुष्ट आत्मा थी; उन पर लपककर, और उन्हें काबू में लाकर, उन पर ऐसा उपद्रव किया, कि वे नंगे और घायल होकर उस घर से निकल भागे।

**Acts 19:17**

<sup>17</sup> और यह बात इफिसुस के रहनेवाले यहूदी और यूनानी भी सब जान गए, और उन सब पर भय छा गया; और प्रभु यीशु के नाम की बड़ाई हुई।

**Acts 19:18**

<sup>18</sup> और जिन्होंने विश्वास किया था, उनमें से बहुतों ने आकर अपने-अपने बुरे कामों को मान लिया और प्रगट किया।

**Acts 19:19**

<sup>19</sup> और जादू-टोना करनेवालों में से बहुतों ने अपनी-अपनी पोथियाँ इकट्ठी करके सब के सामने जला दीं; और जब उनका दाम जोड़ा गया, जो पचास हजार चाँदी के सिक्कों के बराबर निकला।

**Acts 19:20**

<sup>20</sup> इस प्रकार प्रभु का वचन सामर्थ्यपूर्वक फैलता गया और प्रबल होता गया।

**Acts 19:21**

<sup>21</sup> जब ये बातें हो चुकी तो पौलुस ने आत्मा में ठाना कि मकिदुनिया और अखाया से होकर यरूशलाम को जाऊँ, और कहा, “वहाँ जाने के बाद मुझे रोम को भी देखना अवश्य है।”

**Acts 19:22**

<sup>22</sup> इसलिए अपनी सेवा करनेवालों में से तीमुथियुस और इरास्तुस को मकिदुनिया में भेजकर आप कुछ दिन आसिया में रह गया।

**Acts 19:23**

<sup>23</sup> उस समय उस पथ के विषय में बड़ा हुल्लड़ हुआ।

**Acts 19:24**

<sup>24</sup> क्योंकि दिमेत्रियुस नाम का एक सुनार अरतिमिस के चाँदी के मन्दिर बनवाकर, कारीगरों को बहुत काम दिलाया करता था।

**Acts 19:25**

<sup>25</sup> उसने उनको और ऐसी वस्तुओं के कारीगरों को इकट्ठे करके कहा, “हे मनुष्यों, तुम जानते हो कि इस काम से हमें कितना धन मिलता है।

**Acts 19:26**

<sup>26</sup> और तुम देखते और सुनते हो कि केवल इफिसुस ही में नहीं, वरन् प्रायः सारे आसिया में यह कह कहकर इस पौलुस ने बहुत लोगों को समझाया और भरमाया भी है, कि जो हाथ की कारीगरी है, वे ईश्वर नहीं।

**Acts 19:27**

<sup>27</sup> और अब केवल इसी एक बात का ही डर नहीं कि हमारे इस धर्म की प्रतिष्ठा जाती रहेगी; वरन् यह कि महान देवी अरतिमिस का मन्दिर तुच्छ समझा जाएगा और जिसे सारा आसिया और जगत पूजता है उसका महत्व भी जाता रहेगा।”

**Acts 19:28**

<sup>28</sup> वे यह सुनकर क्रोध से भर गए और चिल्ला चिल्लाकर कहने लगे, “इफिसियों की अरतिमिस, महान है!”

**Acts 19:29**

<sup>29</sup> और सारे नगर में बड़ा कोलाहल मच गया और लोगों ने गयुस और अरिस्तर्खुस, मकिदुनियों को जो पौलुस के संगी यात्री थे, पकड़ लिया, और एक साथ होकर रंगशाला में दौड़ गए।

**Acts 19:30**

<sup>30</sup> जब पौलुस ने लोगों के पास भीतर जाना चाहा तो चेलों ने उसे जाने न दिया।

**Acts 19:31**

<sup>31</sup> आसिया के हाकिमों में से भी उसके कई मित्रों ने उसके पास कहला भेजा और विनती की, कि रंगशाला में जाकर जोखिम न उठाना।

**Acts 19:32**

<sup>32</sup> वहाँ कोई कुछ चिल्लाता था, और कोई कुछ; क्योंकि सभा में बड़ी गड़बड़ी हो रही थी, और बहुत से लोग तो यह जानते भी नहीं थे कि वे किस लिये इकट्ठे हुए हैं।

**Acts 19:33**

<sup>33</sup> तब उन्होंने सिकन्दर को, जिसे यहूदियों ने खड़ा किया था, भीड़ में से आगे बढ़ाया, और सिकन्दर हाथ से सकेत करके लोगों के सामने उत्तर देना चाहता था।

**Acts 19:34**

<sup>34</sup> परन्तु जब उन्होंने जान लिया कि वह यहूदी है, तो सब के सब एक स्वर से कोई दो घंटे तक चिल्लाते रहे, “इफिसियों की अरतिमिस, महान है।”

**Acts 19:35**

<sup>35</sup> तब नगर के मंत्री ने लोगों को शान्त करके कहा, ‘हे इफिसियों, कौन नहीं जानता, कि इफिसियों का नगर महान देवी अरतिमिस के मन्दिर, और आकाश से गिरी हुई मूरत का रखवाला है।

**Acts 19:36**

<sup>36</sup> अतः जबकि इन बातों का खण्डन ही नहीं हो सकता, तो उवित है, कि तुम शान्त रहो, और बिना सोवे-विचारे कुछ न करो।

**Acts 19:37**

<sup>37</sup> क्योंकि तुम इन मनुष्यों को लाए हो, जो न मन्दिर के लूटनेवाले हैं, और न हमारी देवी के निन्दक हैं।

**Acts 19:38**

<sup>38</sup> यदि दिमेत्रियुस और उसके साथी कारीगरों को किसी से विगद हो तो कचहरी खुली है, और हाकिम भी हैं; वे एक दूसरे पर आरोप लगाए।

**Acts 19:39**

<sup>39</sup> परन्तु यदि तुम किसी और बात के विषय में कुछ पूछना चाहते हो, तो नियत सभा में फैसला किया जाएगा।

**Acts 19:40**

<sup>40</sup> क्योंकि आज के बलवे के कारण हम पर दोष लगाए जाने का डर है, इसलिए कि इसका कोई कारण नहीं, अतः हम इस भीड़ के इकट्ठा होने का कोई उत्तर न दे सकेंगे।”

**Acts 19:41**

<sup>41</sup> और यह कह के उसने सभा को विदा किया।

**Acts 20:1**

<sup>1</sup> जब हुल्लड़ थम गया तो पौलुस ने चेलों को बुलावाकर समझाया, और उनसे विदा होकर मकिटुनिया की ओर चल दिया।

**Acts 20:2**

<sup>2</sup> उस सारे प्रदेश में से होकर और चेलों को बहुत उत्साहित कर वह यूनान में आया।

**Acts 20:3**

<sup>3</sup> जब तीन महीने रहकर वह वहाँ से जहाज पर सीरिया की ओर जाने पर था, तो यहूदी उसकी घात में लगे, इसलिए उसने यह निश्चय किया कि मकिटुनिया होकर लौट जाए।

**Acts 20:4**

<sup>4</sup> बिरीया के पुरुस्कार का पुत्र सोपत्रुस और थिस्सलुनीकियों में से अरिस्तर्खुस और सिकुन्दुस और दिरबे का गयुस, और तीमुथियुस और आसिया का तुखिकुस और त्रुफिमुस आसिया तक उसके साथ हो लिए।

**Acts 20:5**

<sup>5</sup> पर वे आगे जाकर त्रोआस में हमारी प्रतीक्षा करते रहे।

**Acts 20:6**

<sup>6</sup> और हम अख्खमीरी रोटी के दिनों के बाद फिलिप्पी से जहाज पर चढ़कर पाँच दिन में त्रिओआस में उनके पास पहुँचे, और सात दिन तक वहाँ रहे।

**Acts 20:7**

<sup>7</sup> सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उनसे बातें की, और आधी रात तक उपदेश देता रहा।

**Acts 20:8**

<sup>8</sup> जिस अटारी पर हम इकट्ठे थे, उसमें बहुत दीये जल रहे थे।

**Acts 20:9**

<sup>9</sup> और यूतुखुस नाम का एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ गहरी नींद से झुक रहा था, और जब पौलुस देर तक बातें करता रहा तो वह नींद के झोंके में तीसरी अटारी पर से गिर पड़ा, और मरा हुआ उठाया गया।

**Acts 20:10**

<sup>10</sup> परन्तु पौलुस उत्तरकर उससे लिपट गया, और गले लगाकर कहा, “घबराओ नहीं; क्योंकि उसका प्राण उसी में है।”

**Acts 20:11**

<sup>11</sup> और ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और खाकर इतनी देर तक उनसे बातें करता रहा कि पौ फट गई; फिर वह चला गया।

**Acts 20:12**

<sup>12</sup> और वे उस जवान को जीवित ले आए, और बहुत शान्ति पाई।

**Acts 20:13**

<sup>13</sup> हम पहले से जहाज पर चढ़कर अस्सुस को इस विचार से आगे गए, कि वहाँ से हम पौलुस को चढ़ा लें क्योंकि उसने यह इसलिए ठहराया था, कि आप ही पैदल जानेवाला था।

**Acts 20:14**

<sup>14</sup> जब वह अस्सुस में हमें मिला तो हम उसे चढ़ाकर मितुलेने में आए।

**Acts 20:15**

<sup>15</sup> और वहाँ से जहाज खोलकर हम दूसरे दिन खियुस के सामने पहुँचे, और अगले दिन सामुस में जा पहुँचे, फिर दूसरे दिन मीलेतुस में आए।

**Acts 20:16**

<sup>16</sup> क्योंकि पौलुस ने इफिसुस के पास से होकर जाने की ठानी थी, कि कहीं ऐसा न हो, कि उसे आसिया में देर लगे; क्योंकि वह जल्दी में था, कि यदि हो सके, तो वह पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में रहे।

**Acts 20:17**

<sup>17</sup> और उसने मीलेतुस से इफिसुस में कहला भेजा, और कलीसिया के प्राचीनों को बुलवाया।

**Acts 20:18**

<sup>18</sup> जब वे उसके पास आए, तो उनसे कहा, “तुम जानते हो, कि पहले ही दिन से जब मैं आसिया में पहुँचा, मैं हर समय तुम्हारे साथ किस प्रकार रहा।

**Acts 20:19**

<sup>19</sup> अर्थात् बड़ी दीनता से, और आँसू बहा-बहाकर, और उन परीक्षाओं में जो यहूदियों के बद्यन्त्र के कारण जो मुझ पर आ पड़ी; मैं प्रभु की सेवा करता ही रहा।

**Acts 20:20**

<sup>20</sup> और जो-जो बातें तुम्हारे लाभ की थीं, उनको बताने और लोगों के सामने और घर-घर सिखाने से कभी न झिझका।

**Acts 20:21**

<sup>21</sup> वरन् यहूदियों और यूनानियों को चेतावनी देता रहा कि परमेश्वर की ओर मन फिराए, और हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करे।

**Acts 20:22**

<sup>22</sup> और अब, मैं आत्मा में बंधा हुआ यस्तलेम को जाता हूँ, और नहीं जानता, कि वहाँ मुझ पर क्या-क्या बीतेगा,

**Acts 20:23**

<sup>23</sup> केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे-देकर मुझसे कहता है कि बन्धन और क्लेश तेरे लिये तैयार है।

**Acts 20:24**

<sup>24</sup> परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता कि उसे प्रिय जानूँ वरन् यह कि मैं अपनी दौड़ को, और उस सेवा को पूरी करूँ, जो मैंने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिये प्रभु यीशु से पाई है।

**Acts 20:25**

<sup>25</sup> और अब मैं जानता हूँ, कि तुम सब जिनमें मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता फिरा, मेरा मुँह फिर न देखोग।

**Acts 20:26**

<sup>26</sup> इसलिए मैं आज के दिन तुम से गवाही देकर कहता हूँ, कि मैं सब के लहू से निर्दोष हूँ।

**Acts 20:27**

<sup>27</sup> क्योंकि मैं परमेश्वर की सारी मनसा को तुम्हें पूरी रीति से बताने से न झिझका।

**Acts 20:28**

<sup>28</sup> इसलिए अपनी और पूरे झुण्ड की देख-रेख करो; जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है।

**Acts 20:29**

<sup>29</sup> मैं जानता हूँ, कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेड़िए तुम में आँँगे, जो झुण्ड को न छोड़ेंगे।

**Acts 20:30**

<sup>30</sup> तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे-ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी-मेढ़ी बातें कहेंगे।

**Acts 20:31**

<sup>31</sup> इसलिए जागते रहो, और स्मरण करो कि मैंने तीन वर्ष तक रात दिन आँसू बहा-बहाकर, हर एक को चितौनी देना न छोड़ा।

**Acts 20:32**

<sup>32</sup> और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूँ; जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है, और सब पवित्र किए गये लोगों में सहभागी होकर विरासत दे सकता है।

**Acts 20:33**

<sup>33</sup> मैंने किसी के चाँदी, सोने या कपड़े का लालच नहीं किया।

**Acts 20:34**

<sup>34</sup> तुम आप ही जानते हो कि इन्हीं हाथों ने मेरी और मेरे साथियों की आवश्यकताएँ पूरी की।

**Acts 20:35**

<sup>35</sup> मैंने तुम्हें सब कुछ करके दिखाया, कि इस रीति से परिश्रम करते हुए निर्बालों को सम्माना, और प्रभु यीशु के वचन स्मरण रखना अवश्य है, कि उसने आप ही कहा है: 'लेने से देना धर्य है।'

**Acts 20:36**

<sup>36</sup> यह कहकर उसने घुटने टेके और उन सब के साथ प्रार्थना की।

**Acts 20:37**

<sup>37</sup> तब वे सब बहुत रोए और पौलुस के गले लिपटकर उसे चूमने लगे।

**Acts 20:38**

<sup>38</sup> वे विशेष करके इस बात का शोक करते थे, जो उसने कही थी, कि तुम मेरा मुँह फिर न देखोगे। और उन्होंने उसे जहाज तक पहुँचाया।

**Acts 21:1**

<sup>1</sup> जब हमने उनसे अलग होकर समुद्री यात्रा प्रारम्भ किया, तो सीधे मार्ग से कोस में आए, और दूसरे दिन रुदुस में, और वहाँ से पतरा में;

**Acts 21:2**

<sup>2</sup> और एक जहाज फीनीके को जाता हुआ मिला, और हमने उस पर चढ़कर, उसे खोल दिया।

**Acts 21:3**

<sup>3</sup> जब साइप्रस दिखाई दिया, तो हमने उसे बाँहँ हाथ छोड़ा, और सीरिया को चलकर सोर में उतरे; क्योंकि वहाँ जहाज का बोझ उतारना था।

**Acts 21:4**

<sup>4</sup> और चेलों को पाकर हम वहाँ सात दिन तक रहे। उन्होंने आत्मा के सिखाए पौलुस से कहा कि यरूशलेम में पाँव न रखना।

**Acts 21:5**

<sup>5</sup> जब वे दिन पूरे हो गए, तो हम वहाँ से चल दिए; और सब स्त्रियों और बालकों समेत हमें नगर के बाहर तक पहुँचाया और हमने किनारे पर घुटने टेककर प्रार्थना की।

**Acts 21:6**

<sup>6</sup> तब एक दूसरे से विदा होकर, हम तो जहाज पर चढ़े, और वे अपने-अपने घर लौट गए।

**Acts 21:7**

<sup>7</sup> जब हम सोर से जलयात्रा पूरी करके पतुलिमयिस में पहुँचे, और भाइयों को नमस्कार करके उनके साथ एक दिन रहे।

**Acts 21:8**

<sup>8</sup> दूसरे दिन हम वहाँ से चलकर कैसरिया में आए, और फिलिप्पस सुसमाचार प्रचारक के घर में जो सातों में से एक था, जाकर उसके यहाँ रहे।

**Acts 21:9**

<sup>9</sup> उसकी चार कुँवारी पुत्रियाँ थीं; जो भविष्यद्वाणी करती थीं।

**Acts 21:10**

<sup>10</sup> जब हम वहाँ बहुत दिन रह चुके, तो अगबुस नामक एक भविष्यद्वक्ता यहूदिया से आया।

**Acts 21:11**

<sup>11</sup> उसने हमारे पास आकर पौलुस का कमरबन्द लिया, और अपने हाथ पाँव बाँधकर कहा, “पवित्र आत्मा यह कहता है, कि जिस मनुष्य का यह कमरबन्द है, उसको यरूशलेम में यहाँदी इसी रीति से बाँधेंगे, और अन्यजातियों के हाथ में सैंपेंगे।”

**Acts 21:12**

<sup>12</sup> जब हमने ये बातें सुनी, तो हम और वहाँ के लोगों ने उससे विनती की, कि यरूशलेम को न जाए।

**Acts 21:13**

<sup>13</sup> परन्तु पौलुस ने उत्तर दिया, “तुम क्या करते हो, कि रो-रोकर मेरा मन तोड़ते हो? मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिये

यरूशलेम में न केवल बाँधे जाने ही के लिये वरन् मरने के लिये भी तैयार हूँ।”

### **Acts 21:14**

<sup>14</sup> जब उसने न माना तो हम यह कहकर चुप हो गए, “प्रभु की इच्छा पूरी हो।”

### **Acts 21:15**

<sup>15</sup> उन दिनों के बाद हमने तैयारी की और यरूशलेम को चल दिए।

### **Acts 21:16**

<sup>16</sup> कैसरिया के भी कुछ चेले हमारे साथ हो लिए, और मनासोन नामक साइप्रस के एक पुराने चेले को साथ ले आए, कि हम उसके यहाँ टिकें।

### **Acts 21:17**

<sup>17</sup> जब हम यरूशलेम में पहुँचे, तब भाइयों ने बड़े आनन्द के साथ हमारा स्वागत किया।

### **Acts 21:18**

<sup>18</sup> दूसरे दिन पौलुस हमें लेकर याकूब के पास गया, जहाँ सब प्राचीन इकट्ठे थे।

### **Acts 21:19**

<sup>19</sup> तब उसने उन्हें नमस्कार करके, जो-जो काम परमेश्वर ने उसकी सेवाकार्इ के द्वारा अन्यजातियों में किए थे, एक-एक करके सब बताया।

### **Acts 21:20**

<sup>20</sup> उन्होंने यह सुनकर परमेश्वर की महिमा की, फिर उससे कहा, “हे भाई, तू देखता है, कि यहूदियों में से कई हजार ने विश्वास किया है; और सब व्यवस्था के लिये धुन लगाए हैं।

### **Acts 21:21**

<sup>21</sup> और उनको तेरे विषय में सिखाया गया है, कि तू अन्यजातियों में रहनेवाले यहूदियों को मूसा से फिर जाने को सिखाता है, और कहता है, कि न अपने बच्चों का खतना कराओ ओर न रीतियों पर चलो।

### **Acts 21:22**

<sup>22</sup> तो फिर क्या किया जाए? लोग अवश्य सुनेंगे कि तू यहाँ आया है।

### **Acts 21:23**

<sup>23</sup> इसलिए जो हम तुझ से कहते हैं, वह कर। हमारे यहाँ चार मनुष्य हैं, जिन्होंने मन्त्र भानी है।

### **Acts 21:24**

<sup>24</sup> उन्हें लेकर उसके साथ अपने आपको शुद्ध कर; और उनके लिये खर्चा दे, कि वे सिर मुँड़ाएँ। तब सब जान लेंगे, कि जो बातें उन्हें तेरे विषय में सिखाई गईं, उनकी कुछ जड़ नहीं हैं परन्तु तू आप भी व्यवस्था को मानकर उसके अनुसार चलता है।

### **Acts 21:25**

<sup>25</sup> परन्तु उन अन्यजातियों के विषय में जिन्होंने विश्वास किया है, हमने यह निर्णय करके लिख भेजा है कि वे मूर्तियों के सामने बलि किए हुए माँस से, और लहू से, और गला घोंटे हुओं के माँस से, और व्यभिचार से, बचे रहें।”

### **Acts 21:26**

<sup>26</sup> तब पौलुस उन मनुष्यों को लेकर, और दूसरे दिन उनके साथ शुद्ध होकर मन्दिर में गया, और वहाँ बता दिया, कि शुद्ध होने के दिन, अर्थात् उनमें से हर एक के लिये चढ़ावा चढ़ाए जाने तक के दिन कब पूरे होंगे।

### **Acts 21:27**

<sup>27</sup> जब वे सात दिन पूरे होने पर थे, तो आसिया के यहूदियों ने पौलुस को मन्दिर में देखकर सब लोगों को भड़काया, और यह चिल्ला चिल्लाकर उसको पकड़ लिया,

**Acts 21:28**

<sup>28</sup> “हे इस्माएलियों, सहायता करो; यह वही मनुष्य है, जो लोगों के, और व्यवस्था के, और इस स्थान के विरोध में हर जगह सब लोगों को सिखाता है, यहाँ तक कि यूनानियों को भी मन्दिर में लाकर उसने इस पवित्रस्थान को अपवित्र किया है।”

**Acts 21:29**

<sup>29</sup> उन्होंने तो इससे पहले इफिसुस वासी त्रुफिमुस को उसके साथ नगर में देखा था, और समझते थे कि पौलुस उसे मन्दिर में ले आया है।

**Acts 21:30**

<sup>30</sup> तब सारे नगर में कोलाहल मच गया, और लोग दौड़कर इकट्ठे हुए, और पौलुस को पकड़कर मन्दिर के बाहर घसीट लाए, और तुरन्त द्वार बन्द किए गए।

**Acts 21:31**

<sup>31</sup> जब वे उसे मार डालना चाहते थे, तो सैन्य-दल के सरदार को सन्देश पहुँचा कि सारे यरूशलेम में कोलाहल मच रहा है।

**Acts 21:32**

<sup>32</sup> तब वह तुरन्त सिपाहियों और सूबेदारों को लेकर उनके पास नीचे दौड़ आया; और उन्होंने सैन्य-दल के सरदार को और सिपाहियों को देखकर पौलुस को मारना-पीटना रोक दिया।

**Acts 21:33**

<sup>33</sup> तब सैन्य-दल के सरदार ने पास आकर उसे पकड़ लिया; और दो जंजीरों से बाँधने की आज्ञा देकर पूछने लगा, “यह कौन है, और इसने क्या किया है?”

**Acts 21:34**

<sup>34</sup> परन्तु भीड़ में से कोई कुछ और कोई कुछ चिल्लाते रहे और जब हुल्लाड़ के मारे ठीक सच्चाई न जान सका, तो उसे गढ़ में ले जाने की आज्ञा दी।

**Acts 21:35**

<sup>35</sup> जब वह सीढ़ी पर पहुँचा, तो ऐसा हुआ कि भीड़ के दबाव के मारे सिपाहियों को उसे उठाकर ले जाना पड़ा।

**Acts 21:36**

<sup>36</sup> क्योंकि लोगों की भीड़ यह चिल्लाती हुई उसके पीछे पड़ी, “उसका अन्त कर दो।”

**Acts 21:37**

<sup>37</sup> जब वे पौलुस को गढ़ में ले जाने पर थे, तो उसने सैन्य-दल के सरदार से कहा, “क्या मुझे आज्ञा है कि मैं तुझ से कुछ कहूँ?” उसने कहा, “क्या तू यूनानी जानता है?

**Acts 21:38**

<sup>38</sup> क्या तू वह मिस्सी नहीं, जो इन दिनों से पहले बलवाई बनाकर चार हजार हथियार-बन्द लोगों को जंगल में ले गया?”

**Acts 21:39**

<sup>39</sup> पौलुस ने कहा, “मैं तो तरसुस का यहूदी मनुष्य हूँ किलिकिया के प्रसिद्ध नगर का निवासी हूँ। और मैं तुझ से विनती करता हूँ, कि मुझे लोगों से बातें करने दे।”

**Acts 21:40**

<sup>40</sup> जब उसने आज्ञा दी, तो पौलुस ने सीढ़ी पर खड़े होकर लोगों को हाथ से संकेत किया। जब वे चुप हो गए, तो वह इब्रानी भाषा में बोलने लगा:

**Acts 22:1**

<sup>1</sup> “हे भाइयों और पिताओं, मेरा प्रत्युत्तर सुनो, जो मैं अब तुम्हारे सामने कहता हूँ।”

**Acts 22:2**

<sup>2</sup> वे यह सुनकर कि वह उनसे इब्रानी भाषा में बोलता है, वे चुप रहे। तब उसने कहा:

**Acts 22:3**

<sup>3</sup> ‘मैं तो यहाँ हूँ, जो किलिकिया के तरसुस में जन्मा; परन्तु इस नगर में गमलीएल के पाँवों के पास बैठकर शिक्षा प्राप्त की, और पूर्वजों की व्यवस्था भी ठीक रीति पर सिखाया गया; और परमेश्वर के लिये ऐसी धून लगाए था, जैसे तुम सब आज लगाए हो।

**Acts 22:4**

<sup>4</sup> मैंने पुरुष और स्त्री दोनों को बाँधकर, और बन्दीगृह में डालकर, इस पथ को यहाँ तक सताया, कि उन्हें मरवा भी डाला।

**Acts 22:5**

<sup>5</sup> स्वयं महायाजक और सब पुरनिए गवाह हैं; कि उनमें से मैं भाइयों के नाम पर चिट्ठियाँ लेकर दमिश्क को चला जा रहा था, कि जो वहाँ हों उन्हें दण्ड दिलाने के लिये बाँधकर यरूशलेम में लाऊँ।

**Acts 22:6**

<sup>6</sup> “जब मैं यात्रा करके दमिश्क के निकट पहुँचा, तो ऐसा हुआ कि दोपहर के लगभग अचानक एक बड़ी ज्योति आकाश से मेरे चारों ओर चमकी।

**Acts 22:7**

<sup>7</sup> और मैं भूमि पर गिर पड़ा: और यह वाणी सुनी, ‘हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है?’

**Acts 22:8**

<sup>8</sup> मैंने उत्तर दिया, ‘हे प्रभु, तू कौन है?’ उसने मुझसे कहा, ‘मैं यीशु नासरी हूँ, जिसे तू सताता है।’

**Acts 22:9**

<sup>9</sup> और मेरे साथियों ने ज्योति तो देखी, परन्तु जो मुझसे बोलता था उसकी वाणी न सुनी।

**Acts 22:10**

<sup>10</sup> तब मैंने कहा, ‘हे प्रभु, मैं क्या करूँ?’ प्रभु ने मुझसे कहा, ‘उठकर दमिश्क में जा, और जो कुछ तेरे करने के लिये ठहराया गया है वहाँ तुझे सब बता दिया जाएगा।’

**Acts 22:11**

<sup>11</sup> जब उस ज्योति के तेज के कारण मुझे कुछ दिखाई न दिया, तो मैं अपने साथियों के हाथ पकड़े हुए दमिश्क में आया।

**Acts 22:12**

<sup>12</sup> “तब हनन्याह नाम का व्यवस्था के अनुसार एक भक्त मनुष्य, जो वहाँ के रहनेवाले सब यहूदियों में सुनाम था, मेरे पास आया,

**Acts 22:13**

<sup>13</sup> और खड़ा होकर मुझसे कहा, ‘हे भाई शाऊल, फिर देखने लगा।’ उसी घड़ी मेरी आँखें खुल गईं और मैंने उसे देखा।

**Acts 22:14**

<sup>14</sup> तब उसने कहा, ‘हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने तुझे इसलिए ठहराया है कि तू उसकी इच्छा को जाने, और उस धर्मों को देखे, और उसके मुँह से बातें सुने।

**Acts 22:15**

<sup>15</sup> क्योंकि तू उसकी ओर से सब मनुष्यों के सामने उन बातों का गवाह होगा, जो तूने देखी और सुनी हैं।

**Acts 22:16**

<sup>16</sup> अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।’

**Acts 22:17**

<sup>17</sup> “जब मैं फिर यरूशलेम में आकर मन्दिर में प्रार्थना कर रहा था, तो बेसुध हो गया।

**Acts 22:18**

<sup>18</sup> और उसको देखा कि मुझसे कहता है, 'जल्दी करके यरूशलेम से झट निकल जा; क्योंकि वे मेरे विषय में तेरी गवाही न मानेंगे।'

**Acts 22:19**

<sup>19</sup> मैंने कहा, 'हे प्रभु वे तो आप जानते हैं, कि मैं तुझ पर विश्वास करनेवालों को बन्दीगृह में डालता और जगह-जगह आराधनालय में पिटवाता था।'

**Acts 22:20**

<sup>20</sup> और जब तेरे गवाह स्तिफनुस का लहू बहाया जा रहा था तब भी मैं वहाँ खड़ा था, और इस बात में सहमत था, और उसके हत्यारों के कपड़ों की रखवाली करता था।'

**Acts 22:21**

<sup>21</sup> और उसने मुझसे कहा, 'चला जा: क्योंकि मैं तुझे अन्यजातियों के पास दूर-दूर भेजूँगा।'

**Acts 22:22**

<sup>22</sup> वे इस बात तक उसकी सुनते रहे; तब ऊँचे शब्द से चिल्लाए, "ऐसे मनुष्य का अन्त करो; उसका जीवित रहना उचित नहीं!"

**Acts 22:23**

<sup>23</sup> जब वे चिल्लाते और कपड़े फेंकते और आकाश में धूल उड़ाते थे;

**Acts 22:24**

<sup>24</sup> तो सैन्य-दल के सूबेदार ने कहा, "इसे गढ़ में ले जाओ; और कोडे मारकर जाँचो, कि मैं जानूँ कि लोग किस कारण उसके विरोध में ऐसा चिल्ला रहे हैं।"

**Acts 22:25**

<sup>25</sup> जब उन्होंने उसे तसमों से बाँधा तो पौलुस ने उस सूबेदार से जो उसके पास खड़ा था कहा, "क्या यह उचित है, कि तुम

एक रोमी मनुष्य को, और वह भी बिना दोषी ठहराए हुए कोडे मारो?"

**Acts 22:26**

<sup>26</sup> सूबेदार ने यह सुनकर सैन्य-दल के सरदार के पास जाकर कहा, "तू यह क्या करता है? यह तो रोमी मनुष्य है।"

**Acts 22:27**

<sup>27</sup> तब सैन्य-दल के सरदार ने उसके पास आकर कहा, "मुझे बता, क्या तू रोमी है?" उसने कहा, "हाँ।"

**Acts 22:28**

<sup>28</sup> यह सुनकर सैन्य-दल के सरदार ने कहा, "मैंने रोमी होने का पद बहुत रुपये देकर पाया है।" पौलुस ने कहा, "मैं तो जन्म से रोमी हूँ।"

**Acts 22:29**

<sup>29</sup> तब जो लोग उसे जाँचने पर थे, वे तुरन्त उसके पास से हट गए; और सैन्य-दल का सरदार भी यह जानकर कि यह रोमी है, और उसने उसे बाँधा है, डर गया।

**Acts 22:30**

<sup>30</sup> दूसरे दिन वह ठीक-ठीक जानने की इच्छा से कि यहूदी उस पर क्यों दोष लगाते हैं, इसलिए उसके बन्धन खोल दिए; और प्रधान याजकों और सारी महासभा को इकट्ठे होने की आज्ञा दी, और पौलुस को नीचे ले जाकर उनके सामने खड़ा कर दिया।

**Acts 23:1**

<sup>1</sup> पौलुस ने महासभा की ओर टकटकी लगाकर देखा, और कहा, "हे भाइयों, मैंने आज तक परमेश्वर के लिये बिलकुल सच्चे विवेक से जीवन बिताया है।"

**Acts 23:2**

<sup>2</sup> हनन्याह महायाजक ने, उनको जो उसके पास खड़े थे, उसके मुँह पर थप्पड़ मारने की आज्ञा दी।

**Acts 23:3**

<sup>3</sup> तब पौलुस ने उससे कहा, “हे चूना फिरी हुई दीवार, परमेश्वर तुझे मारेगा। तू व्यवस्था के अनुसार मेरा न्याय करने को बैठा है, और फिर क्या व्यवस्था के विरुद्ध मुझे मारने की आज्ञा देता है?”

**Acts 23:4**

<sup>4</sup> जो पास खड़े थे, उन्होंने कहा, “क्या तू परमेश्वर के महायाजक को बुरा-भला कहता है?”

**Acts 23:5**

<sup>5</sup> पौलुस ने कहा, “हे भाइयों, मैं नहीं जानता था, कि यह महायाजक है; क्योंकि लिखा है, ‘अपने लोगों के प्रधान को बुरा न कह।’”

**Acts 23:6**

<sup>6</sup> तब पौलुस ने यह जानकर, कि एक दल सदूकियों और दूसरा फरीसियों का है, महासभा में पुकारकर कहा, “हे भाइयों, मैं फरीसी और फरीसियों के वंश का हूँ, मेरे हुओं की आशा और पुनरुत्थान के विषय में मेरा मुकद्दमा हो रहा है।”

**Acts 23:7**

<sup>7</sup> जब उसने यह बात कही तो फरीसियों और सदूकियों में झगड़ा होने लगा; और सभा में फूट पड़ गई।

**Acts 23:8**

<sup>8</sup> क्योंकि सदूकी तो यह कहते हैं, कि न पुनरुत्थान है, न स्वर्गदूत और न आत्मा है; परन्तु फरीसी इन सब को मानते हैं।

**Acts 23:9**

<sup>9</sup> तब बड़ा हल्ला मचा और कुछ शास्त्री जो फरीसियों के दल के थे, उठकर यह कहकर झगड़ने लगे, “हम इस मनुष्य में कुछ बुराई नहीं पाते; और यदि कोई आत्मा या स्वर्गदूत उससे बोला है तो फिर क्या?”

**Acts 23:10**

<sup>10</sup> जब बहुत झगड़ा हुआ, तो सैन्य-दल के सरदार ने इस डर से कि वे पौलुस के टुकड़े-टुकड़े न कर डालें, सैन्य-दल को आज्ञा दी कि उतरकर उसको उनके बीच में से जबरदस्ती निकालो, और गढ़ में ले आओ।

**Acts 23:11**

<sup>11</sup> उसी रात प्रभु ने उसके पास आ खड़े होकर कहा, “हे पौलुस, धैर्य रख; क्योंकि जैसी तर्जे यरूशलेम में मेरी गवाही दी, वैसी ही तुझे रोम में भी गवाही देनी होगी।”

**Acts 23:12**

<sup>12</sup> जब दिन हुआ, तो यहूदियों ने एका किया, और शापथ खाई कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें, यदि हम खाएँ या पीएँ तो हम पर धिक्कार।

**Acts 23:13**

<sup>13</sup> जिन्होंने यह शापथ खाई थी, वे चालीस जन से अधिक थे।

**Acts 23:14**

<sup>14</sup> उन्होंने प्रधान याजकों और प्राचीनों के पास आकर कहा, “हमने यह ठाना है कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें, तब तक यदि कुछ भी खाएँ, तो हम पर धिक्कार है।

**Acts 23:15**

<sup>15</sup> इसलिए अब महासभा समेत सैन्य-दल के सरदार को समझाओ, कि उसे तुम्हारे पास ले आए, मानो कि तुम उसके विषय में और भी ठीक से जाँच करना चाहते हो, और हम उसके पहुँचने से पहले ही उसे मार डालने के लिये तैयार रहेंगे।”

**Acts 23:16**

<sup>16</sup> और पौलुस के भांजे ने सुना कि वे उसकी घात में हैं, तो गढ़ में जाकर पौलुस को सन्देश दिया।

**Acts 23:17**

<sup>17</sup> पौलुस ने सूबेदारों में से एक को अपने पास बुलाकर कहा, “इस जवान को सैन्य-दल के सरदार के पास ले जाओ, यह उससे कुछ कहना चाहता है।”

**Acts 23:18**

<sup>18</sup> अतः उसने उसको सैन्य-दल के सरदार के पास ले जाकर कहा, “बन्दी पौलुस ने मुझे बुलाकर विनती की, कि यह जवान सैन्य-दल के सरदार से कुछ कहना चाहता है; इसे उसके पास ले जा।”

**Acts 23:19**

<sup>19</sup> सैन्य-दल के सरदार ने उसका हाथ पकड़कर, और उसे अलग ले जाकर पूछा, “तू मुझसे क्या कहना चाहता है?”

**Acts 23:20**

<sup>20</sup> उसने कहा, “यहूदियों ने एका किया है, कि तुझ से विनती करें कि कल पौलुस को महासभा में लाए, मानो तू और ठीक से उसकी जाँच करना चाहता है।

**Acts 23:21**

<sup>21</sup> परन्तु उनकी मत मानना, क्योंकि उनमें से चालीस के ऊपर मनुष्य उसकी घात में हैं, जिन्होंने यह ठान लिया है कि जब तक वे पौलुस को मार न डालें, तब तक न खाएँगे और न पीएँगे, और अब वे तैयार हैं और तेरे वचन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।”

**Acts 23:22**

<sup>22</sup> तब सैन्य-दल के सरदार ने जवान को यह निर्देश देकर विदा किया, “किसी से न कहना कि तूने मुझ को ये बातें बताई हैं।”

**Acts 23:23**

<sup>23</sup> उसने तब दो सूबेदारों को बुलाकर कहा, “दो सौ सिपाही, सत्तर सवार, और दो सौ भालौत को कैसरिया जाने के लिये तैयार कर रख, तूरात के तीसरे पहर को निकलना।

**Acts 23:24**

<sup>24</sup> और पौलुस की सवारी के लिये घोड़े तैयार रखो कि उसे फेलिक्स राज्यपाल के पास सुरक्षित पहुँचा दें।”

**Acts 23:25**

<sup>25</sup> उसने इस प्रकार की चिट्ठी भी लिखी:

**Acts 23:26**

<sup>26</sup> “महाप्रतापी फेलिक्स राज्यपाल को क्लौदियुस लूसियास को नमस्कार;

**Acts 23:27**

<sup>27</sup> इस मनुष्य को यहूदियों ने पकड़कर मार डालना चाहा, परन्तु जब मैंने जाना कि वो रोमी है, तो सैन्य-दल लेकर छुड़ा लाया।

**Acts 23:28**

<sup>28</sup> और मैं जानना चाहता था, कि वे उस पर किस कारण दोष लगाते हैं, इसलिए उसे उनकी महासभा में ले गया।

**Acts 23:29**

<sup>29</sup> तब मैंने जान लिया, कि वे अपनी व्यवस्था के विवादों के विषय में उस पर दोष लगाते हैं, परन्तु मार डाले जाने या बाँधे जाने के योग्य उसमें कोई दोष नहीं।

**Acts 23:30**

<sup>30</sup> और जब मुझे बताया गया, कि वे इस मनुष्य की घात में लगे हैं तो मैंने तुरन्त उसको तेरे पास भेज दिया; और मुद्दियों को भी आज्ञा दी, कि तेरे सामने उस पर आरोप लगाए।”

**Acts 23:31**

<sup>31</sup> अतः जैसे सिपाहियों को आज्ञा दी गई थी, वैसे ही पौलुस को लेकर रातों-रात अन्तिपत्रिस में लाए।

**Acts 23:32**

<sup>32</sup> दूसरे दिन वे सवारों को उसके साथ जाने के लिये छोड़कर आप गढ़ को लौटे।

**Acts 23:33**

<sup>33</sup> उन्होंने कैसरिया में पहुँचकर राज्यपाल को चिट्ठी दी; और पौलुस को भी उसके सामने खड़ा किया।

**Acts 23:34**

<sup>34</sup> उसने पढ़कर पूछा, “यह किस प्रदेश का है?” और जब जान लिया कि किलिकिया का है;

**Acts 23:35**

<sup>35</sup> तो उससे कहा, “जब तेरे मुद्दई भी आएँगे, तो मैं तेरा मुकद्दमा करूँगा।” और उसने उसे हेरोदेस के किले में, पहरे में रखने की आज्ञा दी।

**Acts 24:1**

<sup>1</sup> पाँच दिन के बाद हनन्याह महायाजक कई प्राचीनों और तिरतुल्लुस नामक किसी वकील को साथ लेकर आया; उन्होंने राज्यपाल के सामने पौलुस पर दोषारोपण किया।

**Acts 24:2**

<sup>2</sup> जब वह बुलाया गया तो तिरतुल्लुस उस पर दोष लगाकर कहने लगा, “हे महाप्रतापी फेलिक्स, तेरे द्वारा हमें जो बड़ा कुशल होता है; और तेरे प्रबन्ध से इस जाति के लिये कितनी बुराइयाँ सुधरती जाती हैं।

**Acts 24:3**

<sup>3</sup> “इसको हम हर जगह और हर प्रकार से धन्यवाद के साथ मानते हैं।

**Acts 24:4**

<sup>4</sup> परन्तु इसलिए कि तुझे और दुःख नहीं देना चाहता, मैं तुझ से विनती करता हूँ, कि कृपा करके हमारी दो एक बातें सुन ले।

**Acts 24:5**

<sup>5</sup> क्योंकि हमने इस मनुष्य को उपद्रवी और जगत के सारे यहूदियों में बलवा करानेवाला, और नासरियों के कुपंथ का मुखिया पाया है।

**Acts 24:6**

<sup>6</sup> उसने मन्दिर को अशुद्ध करना चाहा, और तब हमने उसे बन्दी बना लिया। [हमने उसे अपनी व्यवस्था के अनुसार दण्ड दिया होता;

**Acts 24:7**

<sup>7</sup> परन्तु सैन्य-दल के सरदार लूसियास ने आकर उसे बलपूर्वक हमारे हाथों से छीन लिया,

**Acts 24:8**

<sup>8</sup> और इस पर दोष लगाने वालों को तेरे सम्मुख आने की आज्ञा दी।] इन सब बातों को जिनके विषय में हम उस पर दोष लगाते हैं, तू स्वयं उसको जाँच करके जान लेगा।”

**Acts 24:9**

<sup>9</sup> यहूदियों ने भी उसका साथ देकर कहा, ये बातें इसी प्रकार की हैं।

**Acts 24:10**

<sup>10</sup> जब राज्यपाल ने पौलुस को बोलने के लिये संकेत किया तो उसने उत्तर दिया: “मैं यह जानकर कि तू बहुत वर्षों से इस जाति का न्याय करता है, आनन्द से अपना प्रत्युत्तर देता हूँ।

**Acts 24:11**

<sup>11</sup> तू आप जान सकता है, कि जब से मैं यरूशलेम में आराधना करने को आया, मुझे बारह दिन से ऊपर नहीं हुए।

**Acts 24:12**

<sup>12</sup> उन्होंने मुझे न मन्दिर में, न आराधनालयों में, न नगर में किसी से विवाद करते या भीड़ लगाते पाया;

**Acts 24:13**

<sup>13</sup> और न तो वे उन बातों को, जिनके विषय में वे अब मुझ पर दोष लगाते हैं, तेरे सामने उन्हें सच प्रमाणित कर सकते हैं।

**Acts 24:14**

<sup>14</sup> परन्तु यह मैं तेरे सामने मान लेता हूँ, कि जिस पंथ को वे कृपंथ कहते हैं, उसी की रीति पर मैं अपने पूर्वजों के परमेश्वर की सेवा करता हूँ; और जो बातें व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों में लिखी हैं, उन सब पर विश्वास करता हूँ।

**Acts 24:15**

<sup>15</sup> और परमेश्वर से आशा रखता हूँ जो वे आप भी रखते हैं, कि धर्मी और अधर्मी दोनों का जी उठना होगा।

**Acts 24:16**

<sup>16</sup> इससे मैं आप भी यत्करता हूँ, कि परमेश्वर की और मनुष्यों की ओर मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे।

**Acts 24:17**

<sup>17</sup> बहुत वर्षों के बाद मैं अपने लोगों को दान पहुँचाने, और भेंट चढ़ान आया था।

**Acts 24:18**

<sup>18</sup> उन्होंने मुझे मन्दिर में, शुद्ध दशा में, बिना भीड़ के साथ, और बिना दंगा करते हुए इस काम में पाया। परन्तु वहाँ आसिया के कुछ यहूदी थे - और उनको उचित था,

**Acts 24:19**

<sup>19</sup> कि यदि मेरे विरोध में उनकी कोई बात हो तो यहाँ तेरे सामने आकर मुझ पर दोष लगाते।

**Acts 24:20**

<sup>20</sup> या ये आप ही कहें, कि जब मैं महासभा के सामने खड़ा था, तो उन्होंने मुझ में कौन सा अपराध पाया?

**Acts 24:21**

<sup>21</sup> इस एक बात को छोड़ जो मैंने उनके बीच में खड़े होकर पुकारकर कहा था, 'मेरे हुओं के जी उठने के विषय में आज मेरा तुम्हारे सामने मुकद्दमा हो रहा है।'

**Acts 24:22**

<sup>22</sup> फेलिक्स ने जो इस पंथ की बातें ठीक-ठीक जानता था, उन्हें यह कहकर टाल दिया, "जब सैन्य-दल का सरदार लूसियास आएगा, तो तुम्हारी बात का निर्णय करूँगा।"

**Acts 24:23**

<sup>23</sup> और सूबेदार को आज्ञा दी, कि पौलुस को कुछ छूट में रखकर रखवाली करना, और उसके मित्रों में से किसी को भी उसकी सेवा करने से न रोकना।

**Acts 24:24**

<sup>24</sup> कुछ दिनों के बाद फेलिक्स अपनी पत्नी द्रुसिल्ला को, जो यहूदिनी थी, साथ लेकर आया और पौलुस को बुलावाकर उस विश्वास के विषय में जो मसीह यीशु पर है, उससे सुना।

**Acts 24:25**

<sup>25</sup> जब वह धार्मिकता और संयम और आनेवाले न्याय की चर्चा कर रहा था, तो फेलिक्स ने भयभीत होकर उत्तर दिया, "अभी तो जा; अवसर पाकर मैं तुझे फिर बुलाऊँगा।"

**Acts 24:26**

<sup>26</sup> उसे पौलुस से कुछ धन मिलने की भी आशा थी; इसलिए और भी बुला-बुलाकर उससे बातें किया करता था।

**Acts 24:27**

<sup>27</sup> परन्तु जब दो वर्ष बीत गए, तो पुरकियुस फेस्तुस, फेलिक्स की जगह पर आया, और फेलिक्स यहूदियों को खुश करने की इच्छा से पौलुस को बन्दी ही छोड़ गया।

**Acts 25:1**

<sup>1</sup> फेस्तुस उस प्रान्त में पहुँचकर तीन दिन के बाद कैसरिया से यरूशलेम को गया।

**Acts 25:2**

<sup>2</sup> तब प्रधान याजकों ने, और यहूदियों के प्रमुख लोगों ने, उसके सामने पौलुस पर दोषारोपण की;

**Acts 25:3**

<sup>3</sup> और उससे विनती करके उसके विरोध में यह चाहा कि वह उसे यरूशलेम में बुलवाए, क्योंकि वे उसे रास्ते ही में मार डालने की घात लगाए हुए थे।

**Acts 25:4**

<sup>4</sup> फेस्तुस ने उत्तर दिया, “पौलुस कैसरिया में कैदी है, और मैं स्वयं जल्द वहाँ जाऊँगा।”

**Acts 25:5**

<sup>5</sup> किर कहा, “तुम से जो अधिकार रखते हैं, वे साथ चलें, और यदि इस मनुष्य ने कुछ अनुचित काम किया है, तो उस पर दोष लगाएँ।”

**Acts 25:6**

<sup>6</sup> उनके बीच कोई आठ दस दिन रहकर वह कैसरिया गया: और दूसरे दिन न्याय आसन पर बैठकर पौलुस को लाने की आज्ञा दी।

**Acts 25:7**

<sup>7</sup> जब वह आया, तो जो यहूदी यरूशलेम से आए थे, उन्होंने आस-पास खड़े होकर उस पर बहुत से गम्भीर दोष लगाए, जिनका प्रमाण वे नहीं दे सकते थे।

**Acts 25:8**

<sup>8</sup> परन्तु पौलुस ने उत्तर दिया, “मैंने न तो यहूदियों की व्यवस्था के और न मन्दिर के, और न कैसर के विरुद्ध कोई अपराध किया है।”

**Acts 25:9**

<sup>9</sup> तब फेस्तुस ने यहूदियों को खुश करने की इच्छा से पौलुस को उत्तर दिया, “क्या तू चाहता है कि यरूशलेम को जाए; और वहाँ मेरे सामने तेरा यह मुकद्दमा तय किया जाए?”

**Acts 25:10**

<sup>10</sup> पौलुस ने कहा, “मैं कैसर के न्याय आसन के सामने खड़ा हूँ; मेरे मुकद्दमे का यहीं फैसला होना चाहिए। जैसा तू अच्छी तरह जानता है, यहूदियों का मैंने कुछ अपराध नहीं किया।

**Acts 25:11**

<sup>11</sup> यदि अपराधी हूँ और मार डाले जाने योग्य कोई काम किया है, तो मरने से नहीं मुकरता; परन्तु जिन बातों का ये मुझ पर दोष लगाते हैं, यदि उनमें से कोई बात सच न ठहरे, तो कोई मुझे उनके हाथ नहीं सौंप सकता। मैं कैसर की दुहाई देता हूँ।”

**Acts 25:12**

<sup>12</sup> तब फेस्तुस ने मंत्रियों की सभा के साथ विचार करके उत्तर दिया, “तूने कैसर की दुहाई दी है, तो तू कैसर के पास ही जाएगा।”

**Acts 25:13**

<sup>13</sup> कुछ दिन बीतने के बाद अप्रिप्पा राजा और बिरनीके ने कैसरिया में आकर फेस्तुस से भेंट की।

**Acts 25:14**

<sup>14</sup> उनके बहुत दिन वहाँ रहने के बाद फेस्तुस ने पौलुस के विषय में राजा को बताया, “एक मनुष्य है, जिसे फेलिक्स बन्दी छोड़ गया है।”

**Acts 25:15**

<sup>15</sup> जब मैं यरूशलेम में था, तो प्रधान याजकों और यहूदियों के प्राचीनों ने उस पर दोषारोपण किया और चाहा, कि उस पर दण्ड की आज्ञा दी जाए।

**Acts 25:16**

<sup>16</sup> परन्तु मैंने उनको उत्तर दिया, कि रोमियों की यह रीति नहीं, कि किसी मनुष्य को दण्ड के लिये सौंप दें, जब तक आरोपी को अपने दोष लगाने वालों के सामने खड़े होकर दोष के उत्तर देने का अवसर न मिले।

**Acts 25:17**

<sup>17</sup> अतः जब वे यहाँ उपस्थित हुए, तो मैंने कुछ देर न की, परन्तु दूसरे ही दिन न्याय आसन पर बैठकर, उस मनुष्य को लाने की आज्ञा दी।

**Acts 25:18**

<sup>18</sup> जब उसके मुद्दई खड़े हुए, तो उन्होंने ऐसी बुरी बातों का दोष नहीं लगाया, जैसा मैं समझता था।

**Acts 25:19**

<sup>19</sup> परन्तु अपने मत के, और यीशु नामक किसी मनुष्य के विषय में जो मर गया था, और पौलुस उसको जीवित बताता था, विवाद करते थे।

**Acts 25:20**

<sup>20</sup> और मैं उलझन में था, कि इन बातों का पता कैसे लगाऊँ? इसलिए मैंने उससे पूछा, 'क्या तू यरूशलेम जाएगा, कि वहाँ इन बातों का फैसला हो?'

**Acts 25:21**

<sup>21</sup> परन्तु जब पौलुस ने दुहाई दी, कि मेरे मुकद्दमे का फैसला महाराजाधिराज के यहाँ हो; तो मैंने आज्ञा दी, कि जब तक उसे कैसर के पास न भेजूँ उसकी रखवाली की जाए।"

**Acts 25:22**

<sup>22</sup> तब अग्रिप्पा ने फेस्टुस से कहा, "मैं भी उस मनुष्य की सुनना चाहता हूँ।" उसने कहा, "तू कल सुन लेगा।"

**Acts 25:23**

<sup>23</sup> अतः दूसरे दिन, जब अग्रिप्पा और बिरनीके बड़ी धूमधाम से आकर सैन्य-दल के सरदारों और नगर के प्रमुख लोगों के साथ दरबार में पहुँचे। तब फेस्टुस ने आज्ञा दी, कि वे पौलुस को ले आएँ।

**Acts 25:24**

<sup>24</sup> फेस्टुस ने कहा, "हे महाराजा अग्रिप्पा, और हे सब मनुष्यों जो यहाँ हमारे साथ हो, तुम इस मनुष्य को देखते हो, जिसके विषय में सारे यहूदियों ने यरूशलेम में और यहाँ भी चिल्ला चिल्लाकर मुझसे विनती की, कि इसका जीवित रहना उचित नहीं।"

**Acts 25:25**

<sup>25</sup> परन्तु मैंने जान लिया कि उसने ऐसा कुछ नहीं किया कि मार डाला जाए; और जबकि उसने आप ही महाराजाधिराज की दुहाई दी, तो मैंने उसे भेजने का निर्णय किया।

**Acts 25:26**

<sup>26</sup> परन्तु मैंने उसके विषय में कोई ठीक बात नहीं पाई कि महाराजाधिराज को लिखूँ इसलिए मैं उसे तुम्हारे सामने और विशेष करके हे राजा अग्रिप्पा तेरे सामने लाया हूँ, कि जाँचने के बाद मुझे कुछ लिखने को मिले।

**Acts 25:27**

<sup>27</sup> क्योंकि बन्दी को भेजना और जो दोष उस पर लगाए गए, उन्हें न बताना, मुझे व्यर्थ समझ पड़ता है।"

**Acts 26:1**

<sup>1</sup> अग्रिप्पा ने पौलुस से कहा, "तुझे अपने विषय में बोलने की अनुमति है।" तब पौलुस हाथ बढ़ाकर उत्तर देने लगा,

**Acts 26:2**

<sup>2</sup> “हे राजा अग्रिप्पा, जितनी बातों का यहूदी मुझ पर दोष लगाते हैं, आज तेरे सामने उनका उत्तर देने में मैं अपने को धन्य समझता हूँ,

**Acts 26:3**

<sup>3</sup> विशेष करके इसलिए कि तू यहूदियों के सब प्रथाओं और विवादों को जानता है। अतः मैं विनती करता हूँ, धीरज से मेरी सुन ले।

**Acts 26:4**

<sup>4</sup> “जैसा मेरा चाल-चलन आरम्भ से अपनी जाति के बीच और यस्तलेम में जैसा था, यह सब यहूदी जानते हैं।

**Acts 26:5**

<sup>5</sup> वे यदि गवाही देना चाहते हैं, तो आरम्भ से मुझे पहचानते हैं, कि मैं फरीसी होकर अपने धर्म के सबसे खरे पंथ के अनुसार चला।

**Acts 26:6**

<sup>6</sup> और अब उस प्रतिज्ञा की आशा के कारण जो परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों से की थी, मुझ पर मुकद्दमा चल रहा है।

**Acts 26:7**

<sup>7</sup> उसी प्रतिज्ञा के पूरे होने की आशा लगाए हुए, हमारे बारहों गोत्र अपने सारे मन से रात-दिन परमेश्वर की सेवा करते आए हैं। हे राजा, इसी आशा के विषय में यहूदी मुझ पर दोष लगाते हैं।

**Acts 26:8**

<sup>8</sup> जबकि परमेश्वर मेरे हुओं को जिलाता है, तो तुम्हारे यहाँ यह बात क्यों विश्वास के योग्य नहीं समझी जाती?

**Acts 26:9**

<sup>9</sup> “मैंने भी समझा था कि यीशु नासरी के नाम के विरोध में मुझे बहुत कुछ करना चाहिए।

**Acts 26:10**

<sup>10</sup> और मैंने यस्तलेम में ऐसा ही किया; और प्रधान याजकों से अधिकार पाकर बहुत से पवित्र लोगों को बन्दीगृह में डाला, और जब वे मार डाले जाते थे, तो मैं भी उनके विरोध में अपनी सम्मति देता था।

**Acts 26:11**

<sup>11</sup> और हर आराधनालय में मैं उन्हें ताड़ना दिला-दिलाकर यीशु की निन्दा करवाता था, यहाँ तक कि क्रोध के मारे ऐसा पागल हो गया कि बाहर के नगरों में भी जाकर उन्हें सताता था।

**Acts 26:12**

<sup>12</sup> “इसी धून में जब मैं प्रधान याजकों से अधिकार और आज्ञापत्र लेकर दमिश्क को जा रहा था;

**Acts 26:13**

<sup>13</sup> तो हे राजा, मार्ग में दोपहर के समय मैंने आकाश से सूर्य के तेज से भी बढ़कर एक ज्योति, अपने और अपने साथ चलनेवालों के चारों ओर चमकती हुई देखी।

**Acts 26:14**

<sup>14</sup> और जब हम सब भूमि पर गिर पड़े, तो मैंने इब्रानी भाषा में, मुझसे कहते हुए यह वाणी सुनी, ‘हे शाऊल, हे शाऊल, तू मुझे क्यों सताता है? पैने पर लात मारना तेरे लिये कठिन है।’

**Acts 26:15**

<sup>15</sup> मैंने कहा, ‘हे प्रभु, तू कौन है?’ प्रभु ने कहा, ‘मैं यीशु हूँ, जिसे तू सताता है।

**Acts 26:16**

<sup>16</sup> परन्तु तू उठ, अपने पाँवों पर खड़ा हो; क्योंकि मैंने तुझे इसलिए दर्शन दिया है कि तुझे उन बातों का भी सेवक और गवाह ठहराऊँ, जो तूने देखी हैं, और उनका भी जिनके लिये मैं तुझे दर्शन द्वांग।

**Acts 26:17**

<sup>17</sup> और मैं तुझे तेरे लोगों से और अन्यजातियों से बचाता रहूँगा, जिनके पास मैं अब तुझे इसलिए भेजता हूँ।

**Acts 26:18**

<sup>18</sup> कि तू उनकी आँखें खोले, कि वे अंधकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरें; कि पापों की क्षमा, और उन लोगों के साथ जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किए गए हैं, विरासत पाएँ।'

**Acts 26:19**

<sup>19</sup> अतः हे राजा अग्रिष्मा, मैंने उस स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली,

**Acts 26:20**

<sup>20</sup> परन्तु पहले दमिश्क के, फिर यरूशलेम के रहनेवालों को, तब यहूदिया के सारे देश में और अन्यजातियों को समझाता रहा, कि मन फिराओ और परमेश्वर की ओर फिरकर मन फिराव के योग्य काम करो।

**Acts 26:21**

<sup>21</sup> इन बातों के कारण यहूदी मुझे मन्दिर में पकड़कर मार डालने का यत्न करते थे।

**Acts 26:22**

<sup>22</sup> परन्तु परमेश्वर की सहायता से मैं आज तक बना हूँ और छोटे बड़े सभी के सामने गवाही देता हूँ, और उन बातों को छोड़ कुछ नहीं कहता, जो भविष्यद्वक्ताओं और मूसा ने भी कहा कि होनेवाली हैं,

**Acts 26:23**

<sup>23</sup> कि मसीह को दुःख उठाना होगा, और वही सबसे पहले मरे हुओं में से जी उठकर, हमारे लोगों में और अन्यजातियों में ज्योति का प्रचार करेगा।"

**Acts 26:24**

<sup>24</sup> जब वह इस रीति से उत्तर दे रहा था, तो फेस्तुस ने ऊँचे शब्द से कहा, "हे पौलुस, तू पागल है। बहुत विद्या ने तुझे पागल कर दिया है।"

**Acts 26:25**

<sup>25</sup> परन्तु उसने कहा, "हे महाप्रतापी फेस्तुस, मैं पागल नहीं, परन्तु सच्चाई और बुद्धि की बातें कहता हूँ।"

**Acts 26:26**

<sup>26</sup> राजा भी जिसके सामने मैं निडर होकर बोल रहा हूँ, ये बातें जानता है, और मुझे विश्वास है, कि इन बातों में से कोई उससे छिपी नहीं, क्योंकि वह घटना तो कोने में नहीं हुई।

**Acts 26:27**

<sup>27</sup> हे राजा अग्रिष्मा, क्या तू भविष्यद्वक्ताओं का विश्वास करता है? हाँ, मैं जानता हूँ, कि तू विश्वास करता है।"

**Acts 26:28**

<sup>28</sup> अब अग्रिष्मा ने पौलुस से कहा, "क्या तू थोड़े ही समझाने से मुझे मसीही बनाना चाहता है?"

**Acts 26:29**

<sup>29</sup> पौलुस ने कहा, "परमेश्वर से मेरी प्रार्थना यह है कि क्या थोड़े में, क्या बहुत में, केवल तू ही नहीं, परन्तु जितने लोग आज मेरी सुनते हैं, मेरे इन बच्चों को छोड़ वे मेरे समान हो जाएँ।"

**Acts 26:30**

<sup>30</sup> तब राजा और राज्यपाल और बिरनीके और उनके साथ बैठनेवाले उठ खड़े हुए;

**Acts 26:31**

<sup>31</sup> और अलग जाकर आपस में कहने लगे, "यह मनुष्य ऐसा तो कुछ नहीं करता, जो मृत्यु-दण्ड या बन्दीगृह में डाले जाने के योग्य हो।"

**Acts 26:32**

<sup>32</sup> अग्रिष्ठा ने फेस्टुस से कहा, “यदि यह मनुष्य कैसर की दुहाई न देता, तो छूट सकता था।”

**Acts 27:1**

<sup>1</sup> जब यह निश्चित हो गया कि हम जहाज द्वारा इतालिया जाएँ, तो उन्होंने पौलुस और कुछ अन्य बन्दियों को भी यूलियस नामक औगुस्टुस की सैन्य-दल के एक सूबेदार के हाथ सौंप दिया।

**Acts 27:2**

<sup>2</sup> अद्रमुत्तियुम के एक जहाज पर जो आसिया के किनारे की जगहों में जाने पर था, चढ़कर हमने उसे खोल दिया, और अरिस्तर्खुस नामक थिस्सलुनीके का एक मकिदुनी हमारे साथ था।

**Acts 27:3**

<sup>3</sup> दूसरे दिन हमने सीदोन में लंगर डाला और यूलियस ने पौलुस पर कृपा करके उसे मित्रों के यहाँ जाने दिया कि उसका सत्कार किया जाए।

**Acts 27:4**

<sup>4</sup> वहाँ से जहाज खोलकर हवा विरुद्ध होने के कारण हम साइप्रस की आड़ में होकर चले;

**Acts 27:5**

<sup>5</sup> और किलिकिया और पंफूलिया के निकट के समुद्र में होकर लूसिया के मूरा में उतरे।

**Acts 27:6**

<sup>6</sup> वहाँ सूबेदार को सिकन्दरिया का एक जहाज इतालिया जाता हुआ मिला, और उसने हमें उस पर चढ़ा दिया।

**Acts 27:7**

<sup>7</sup> जब हम बहुत दिनों तक धीरे धीरे चलकर कठिनता से कनिदुस के सामने पहुँचे, तो इसलिए कि हवा हमें आगे बढ़ने न देती थी, हम सलमोने के सामने से होकर क्रेते की आड़ में चले;

**Acts 27:8**

<sup>8</sup> और उसके किनारे-किनारे कठिनता से चलकर ‘शुभलंगरबारी’ नामक एक जगह पहुँचे, जहाँ से लसया नगर निकट था।

**Acts 27:9**

<sup>9</sup> जब बहुत दिन बीत गए, और जलयात्रा में जोखिम इसलिए होती थी कि उपवास के दिन अब बीत चुके थे, तो पौलुस ने उन्हें यह कहकर चेतावनी दी,

**Acts 27:10**

<sup>10</sup> “हे सज्जों, मुझे ऐसा जान पड़ता है कि इस यात्रा में विपत्ति और बहुत हानि, न केवल माल और जहाज की वरन् हमारे प्राणों की भी होनेवाली है।”

**Acts 27:11**

<sup>11</sup> परन्तु सूबेदार ने कप्तान और जहाज के स्वामी की बातों को पौलुस की बातों से बढ़कर माना।

**Acts 27:12**

<sup>12</sup> रह बन्दरगाह जाड़ा काटने के लिये अच्छा न था; इसलिए बहुतों का विचार हुआ कि वहाँ से जहाज खोलकर यदि किसी रीति से हो सके तो फीनिक्स में पहुँचकर जाड़ा काटें। यह तो क्रेते का एक बन्दरगाह है जो दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम की ओर खुलता है।

**Acts 27:13**

<sup>13</sup> जब दक्षिणी हवा बहने लगी, तो उन्होंने सोचा कि उन्हें जिसकी जरूरत थी वह उनके पास थी, इसलिए लंगर उठाया और किनारे के किनारे, समुद्र तट के पास चल दिए।

**Acts 27:14**

<sup>14</sup> परन्तु थोड़ी देर में जमीन की ओर से एक बड़ी आँधी उठी, जो 'यूरकुलीन' कहलाती है।

**Acts 27:15**

<sup>15</sup> जब आँधी जहाज पर लगी, तब वह हवा के सामने ठहर न सका, अतः हमने उसे बहने दिया, और इसी तरह बहते हुए चले गए।

**Acts 27:16**

<sup>16</sup> तब कौदा नामक एक छोटे से टापू की आड़ में बहते-बहते हम कठिनता से डोंगी को वश में कर सके।

**Acts 27:17**

<sup>17</sup> फिर मल्लाहों ने उसे उठाकर, अनेक उपाय करके जहाज को नीचे से बाँधा, और सुरतिस के रेत पर टिक जाने के भय से पाल और सामान उतार कर बहते हुए चले गए।

**Acts 27:18**

<sup>18</sup> और जब हमने आँधी से बहुत हिचकोले और धक्के खाए, तो दूसरे दिन वे जहाज का माल फेंकने लगे;

**Acts 27:19**

<sup>19</sup> और तीसरे दिन उन्होंने अपने हाथों से जहाज का साज-सामान भी फेंक दिया।

**Acts 27:20**

<sup>20</sup> और जब बहुत दिनों तक न सूर्य न तारे दिखाई दिए, और बड़ी आँधी चल रही थी, तो अन्त में हमारे बचने की सारी आशा जाती रही।

**Acts 27:21**

<sup>21</sup> जब वे बहुत दिन तक भूखे रह चुके, तो पौलुस ने उनके बीच में खड़ा होकर कहा, "हे लोगों, चाहिए था कि तुम मेरी बात मानकर, क्रेते से न जहाज खोलते और न यह विपत्ति आती और न यह हानि उठाते।

**Acts 27:22**

<sup>22</sup> परन्तु अब मैं तुम्हें समझाता हूँ कि ढाढ़स बाँधो, क्योंकि तुम में से किसी के प्राण की हानि न होगी, पर केवल जहाज की।

**Acts 27:23**

<sup>23</sup> क्योंकि परमेश्वर जिसका मैं हूँ, और जिसकी सेवा करता हूँ, उसके स्वर्गदूत ने आज रात मेरे पास आकर कहा,

**Acts 27:24**

<sup>24</sup> 'हे पौलुस, मत डर! तुझे कैसर के सामने खड़ा होना अवश्य है। और देख, परमेश्वर ने सब को जो तेरे साथ यात्रा करते हैं, तुझे दिया है।'

**Acts 27:25**

<sup>25</sup> इसलिए, हे सज्जनों, ढाढ़स बाँधो; क्योंकि मैं परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ, कि जैसा मुझसे कहा गया है, वैसा ही होगा।

**Acts 27:26**

<sup>26</sup> परन्तु हमें किसी टापू पर जा टिकना होगा।"

**Acts 27:27**

<sup>27</sup> जब चौदहवीं रात हुई, और हम अद्रिया समुद्र में भटक रहे थे, तो आधी रात के निकट मल्लाहों ने अनुमान से जाना कि हम किसी देश के निकट पहुँच रहे हैं।

**Acts 27:28**

<sup>28</sup> थाह लेकर उन्होंने बीस पुरसा गहरा पाया और थोड़ा आगे बढ़कर फिर थाह ली, तो पन्द्रह पुरसा पाया।

**Acts 27:29**

<sup>29</sup> तब पत्थरीली जगहों पर पड़ने के डर से उन्होंने जहाज के पीछे चार लंगर डाले, और भोर होने की कामना करते रहे।

**Acts 27:30**

<sup>30</sup> परन्तु जब मल्लाह जहाज पर से भागना चाहते थे, और गलही से लंगर डालने के बहाने डोंगी समुद्र में उतार दी;

**Acts 27:31**

<sup>31</sup> तो पौलुस ने सूबेदार और सिपाहियों से कहा, “यदि ये जहाज पर न रहें, तो तुम भी नहीं बच सकते।”

**Acts 27:32**

<sup>32</sup> तब सिपाहियों ने रस्से काटकर डोंगी गिरा दी।

**Acts 27:33**

<sup>33</sup> जब भोर होने पर था, तो पौलुस ने यह कहकर, सब को भोजन करने को समझाया, “आज चौदह दिन हुए कि तुम आस देखते-देखते भूखे रहे, और कुछ भोजन न किया।

**Acts 27:34**

<sup>34</sup> इसलिए तुम्हें समझाता हूँ कि कुछ खा लो, जिससे तुम्हारा बचाव हो; क्योंकि तुम मैं से किसी के सिर का एक बाल भी न गिरेगा।”

**Acts 27:35**

<sup>35</sup> और यह कहकर उसने रोटी लेकर सब के सामने परमेश्वर का धन्यवाद किया और तोड़कर खाने लगा।

**Acts 27:36**

<sup>36</sup> तब वे सब भी ढाढ़स बाँधकर भोजन करने लगे।

**Acts 27:37**

<sup>37</sup> हम सब मिलकर जहाज पर दो सौ छिह्न्तर जन थे।

**Acts 27:38**

<sup>38</sup> जब वे भोजन करके तृप्त हुए, तो गेहूँ को समुद्र में फेंककर जहाज हलका करने लगे।

**Acts 27:39**

<sup>39</sup> जब दिन निकला, तो उन्होंने उस देश को नहीं पहचाना, परन्तु एक खाड़ी देखी जिसका चौरस किनारा था, और विचार किया कि यदि हो सके तो इसी पर जहाज को टिकाएँ।

**Acts 27:40**

<sup>40</sup> तब उन्होंने लंगरों को खोलकर समुद्र में छोड़ दिया और उसी समय पतवारों के बन्धन खोल दिए, और हवा के सामने अगला पाल चढ़ाकर किनारे की ओर चले।

**Acts 27:41**

<sup>41</sup> परन्तु दो समुद्र के संगम की जगह पड़कर उन्होंने जहाज को टिकाया, और गलही तो धक्का खाकर गड़ गई, और टल न सकी; परन्तु जहाज का पीछला भाग लहरों के बल से टूटने लगा।

**Acts 27:42**

<sup>42</sup> तब सिपाहियों का यह विचार हुआ कि बन्दियों को मार डालें; ऐसा न हो कि कोई तैर कर निकल भागे।

**Acts 27:43**

<sup>43</sup> परन्तु सूबेदार ने पौलुस को बचाने की इच्छा से उन्हें इस विचार से रोका, और यह कहा, कि जो तैर सकते हैं, पहले कूदकर किनारे पर निकल जाएँ।

**Acts 27:44**

<sup>44</sup> और बाकी कोई पटरों पर, और कोई जहाज की अन्य वस्तुओं के सहारे निकल जाएँ, इस रीति से सब कोई भूमि पर बच निकले।

**Acts 28:1**

<sup>1</sup> जब हम बच निकले, तो पता चला कि यह टापू माल्टा कहलाता है।

**Acts 28:2**

<sup>2</sup> और वहाँ के निवासियों ने हम पर अनोखी कृपा की; क्योंकि मेंह के कारण जो बरस रहा था और जाड़े के कारण, उन्होंने आग सुलगाकर हम सब को ठहराया।

**Acts 28:3**

<sup>3</sup> जब पौलुस ने लकड़ियों का गट्टा बटोरकर आग पर रखा, तो एक साँप आँच पाकर निकला और उसके हाथ से लिपट गया।

**Acts 28:4**

<sup>4</sup> जब उन निवासियों ने साँप को उसके हाथ में लटके हुए देखा, तो आपस में कहा, “सचमुच यह मनुष्य हत्यारा है, कि यद्यपि समुद्र से बच गया, तो भी न्याय ने जीवित रहने न दिया।”

**Acts 28:5**

<sup>5</sup> तब उसने साँप को आग में झटक दिया, और उसे कुछ हानि न पहुँची।

**Acts 28:6**

<sup>6</sup> परन्तु वे प्रतीक्षा कर रहे थे कि वह सूज जाएगा, या एकाएक गिरकर मर जाएगा, परन्तु जब वे बहुत देर तक देखते रहे और देखा कि उसका कुछ भी नहीं बिगड़ा, तो और ही विचार कर कहा, “यह तो कोई देवता है।”

**Acts 28:7**

<sup>7</sup> उस जगह के आस-पास पुबलियुस नामक उस टापू के प्रधान की भूमि थी: उसने हमें अपने घर ले जाकर तीन दिन मित्रभाव से पहुनाई की।

**Acts 28:8**

<sup>8</sup> पुबलियुस के पिता तेज बुखार और पेचिश से रोगी पड़ा था। अतः पौलुस ने उसके पास घर में जाकर प्रार्थना की, और उस पर हाथ रखकर उसे चंगा किया।

**Acts 28:9**

<sup>9</sup> जब ऐसा हुआ, तो उस टापू के बाकी बीमार आए, और चंगे किए गए।

**Acts 28:10**

<sup>10</sup> उन्होंने हमारा बहुत आदर किया, और जब हम चलने लगे, तो जो कुछ हमारे लिये आवश्यक था, जहाज पर रख दिया।

**Acts 28:11**

<sup>11</sup> तीन महीने के बाद हम सिकन्दरिया के एक जहाज पर चल निकले, जो उस टापू में जाड़े काट रहा था, और जिसका चिन्ह दियुसकूरी था।

**Acts 28:12**

<sup>12</sup> सुरक्षा में लंगर डाल करके हम तीन दिन टिके रहे।

**Acts 28:13**

<sup>13</sup> वहाँ से हम धूमकर रेगियुम में आए; और एक दिन के बाद दक्षिणी हवा चली, तब दूसरे दिन पुतियुली में आए।

**Acts 28:14**

<sup>14</sup> वहाँ हमको कुछ भाई मिले, और उनके कहने से हम उनके यहाँ सात दिन तक रहे; और इस रीति से हम रोम को चले।

**Acts 28:15**

<sup>15</sup> वहाँ से वे भाई हमारा समाचार सुनकर अप्पियुस के चौक और तीन-सराय तक हमारी भेट करने को निकल आए, जिन्हे देखकर पौलुस ने परमेश्वर का धन्यवाद किया, और ढाढ़स बाँधा।

**Acts 28:16**

<sup>16</sup> जब हम रोम में पहुँचे, तो पौलुस को एक सिपाही के साथ जो उसकी रखवाली करता था, अकेले रहने की आज्ञा हुई।

**Acts 28:17**

<sup>17</sup> तीन दिन के बाद उसने यहूदियों के प्रमुख लोगों को बुलाया, और जब वे इकट्ठे हुए तो उनसे कहा, “हे भाइयों, मैंने अपने लोगों के या पूर्वजों की प्रथाओं के विरोध में कुछ भी नहीं किया, फिर भी बन्दी बनाकर यरूशलेम से रोमियों के हाथ सौंपा गया।

**Acts 28:18**

<sup>18</sup> उन्होंने मुझे जाँचकर छोड़ देना चाहा, क्योंकि मुझ में मृत्यु के योग्य कोई दोष न था।

**Acts 28:19**

<sup>19</sup> परन्तु जब यहूदी इसके विरोध में बोलने लगे, तो मुझे कैसर की दुहाई देनी पड़ी; यह नहीं कि मुझे अपने लोगों पर कोई दोष लगाना था।

**Acts 28:20**

<sup>20</sup> इसलिए मैंने तुम को बुलाया है, कि तुम से मिलूँ और बातचीत करूँ; क्योंकि इस्राएल की आशा के लिये मैं इस जंजीर से जकड़ा हुआ हूँ।”

**Acts 28:21**

<sup>21</sup> उन्होंने उससे कहा, “न हमने तेरे विषय में यहूदियों से चिट्ठियाँ पाई, और न भाइयों में से किसी ने आकर तेरे विषय में कुछ बताया, और न बुरा कहा।

**Acts 28:22**

<sup>22</sup> परन्तु तेरा विचार क्या है? वही हम तुझ से सुनना चाहते हैं, क्योंकि हम जानते हैं, कि हर जगह इस मत के विरोध में लोग बातें करते हैं।”

**Acts 28:23**

<sup>23</sup> तब उन्होंने उसके लिये एक दिन ठहराया, और बहुत से लोग उसके यहाँ इकट्ठे हुए, और वह परमेश्वर के राज्य की गवाही देता हुआ, और मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता आँ की पुस्तकों से यीशु के विषय में समझा-समझाकर भोर से साँझा तक वर्णन करता रहा।

**Acts 28:24**

<sup>24</sup> तब कुछ ने उन बातों को मान लिया, और कुछ ने विश्वास न किया।

**Acts 28:25**

<sup>25</sup> जब वे आपस में एकमत न हुए, तो पौलुस के इस एक बात के कहने पर चले गए, “पवित्र आत्मा ने यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा तुम्हारे पूर्वजों से ठीक ही कहा,

**Acts 28:26**

<sup>26</sup> ‘जाकर इन लोगों से कह, कि सुनते तो रहोगे, परन्तु न समझोगे, और देखते तो रहोगे, परन्तु न बूझोगे;

**Acts 28:27**

<sup>27</sup> क्योंकि इन लोगों का मन मोटा, और उनके कान भारी हो गए हैं, और उन्होंने अपनी आँखें बन्द की हैं, ऐसा न हो कि वे कभी आँखों से देखें, और कानों से सुनें, और मन से समझें और फिरें, और मैं उन्हें चंगा करूँ।’

**Acts 28:28**

<sup>28</sup> “अतः तुम जानो, कि परमेश्वर के इस उद्धार की कथा अन्यजातियों के पास भेजी गई है, और वे सुनेंगे।”

**Acts 28:29**

<sup>29</sup> जब उसने यह कहा तो यहूदी आपस में बहुत विवाद करने लगे और वहाँ से चले गए।

**Acts 28:30**

<sup>30</sup> और पौलुस पूरे दो वर्ष अपने किराये के घर में रहा,

**Acts 28:31**

<sup>31</sup> और जो उसके पास आते थे, उन सबसे मिलता रहा और बिना रोक-टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा।